सुसमाचार बोनेवाला

सुसमाचार बोनेवाला

लेखक
जे० सी चोट

अनुवादक
सनी डेविड

प्रकाशक :
मसीह की कलीसिया
पोस्ट बॉक्स ३८१५
नई दिल्ली-११००४६

प्रथम संस्करण : १९७६

मुद्रक : पाइनियर फाईन आर्ट, प्रेस, गली शाहतारा अजमेरीगेट दिल्ली-६

प्रस्तावना

प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन अब तक अनेकों बार हो चुका है। सर्व-प्रथम इसका प्रकाशन अंग्रेजी भाषा में हुआ था। कुछ ही समय पश्चात् इसका प्रकाशन फिर से हुआ। इसके बाद इसे तेलुगु भाषा में छापा गया, और फिर, अंग्रेजी में इसका प्रकाशन श्रीलंका में किया गया। इसका अनुवाद तामिल भाषा में भी हो चुका है और शीघ्र ही बैन्गलोर में छपकर तैयार होनेवाली है। और अब, जबकि यह पुस्तक हिन्दी भाषा में प्रकाशित होने जा रही है मैं अपने श्रेष्ठ मित्र, भाई तथा सहकर्मी, भाई सनी डेविड का धन्यवाद करना चाहता हूं कि उन्होंने इसका अनुवाद करके यह सम्भव किया। मेरी यह प्रार्थना है कि यह संस्करण जहां कहीं भी जाए इसके द्वारा सर्वशक्तिमान की बड़ाई हो।

इस पुस्तक में प्रस्तुत सामग्री उन पैंतिस लेखों के परिणाम स्वरूप है जिन्हें कुछ वर्ष पूर्व लिखा, छापा, और फिर भारत तथा आस-पास के देशों में बांटा गया था। मैंने इस बात का अनुभव किया कि जबकि ये लेख विभिन्न विषयों पर लिखे हुए थे इस कारण यह उचित होगा यदि इन्हें एकत्रित करके एक पुस्तक का रूप दे दिया जाए। क्योंकि मैं ने इन लेखों की रचना की है, मैं इस बात से बड़ा ही प्रसन्न हूं कि इन्हें बहुतायत से उपयोग में लाया जा रहा है, और इन से जो कुछ भी भलाई हो उस सब के कारण प्रभु की ही महिमा हो।

जे० सी० चोट
मसीह की कलीसिया
नई दिल्ली
मार्च ४,१९७६

भूमिका

प्रभु यीशु ने कहा, "बीज तो परमेश्वर का वचन है" (लूका ८ : ११) । इसी विचार के आधार पर प्रस्तुत का प्रकाशन किया गया है ।

लेखक श्री जे० सी० चोट ने इस पुस्तक के प्रत्येक लेख को बड़े ही सरल तथा प्रशंसनीय ढंग से लिखा है । ये सभी लेख वास्तव में पिछले कई वर्षों से अंग्रेज़ी भाषा में छोटी-छोटी पुस्तिकाओं के रूप में छपते रहे हैं । उन्ही लेखों का प्रस्तुत अनुवाद "सुसमाचार बोनेवाला" है ।

हमारी आशा व प्रार्थना है कि जबकि "सुसमाचार बोनेवाला" देश के विभिन्न भागों में जाए तो परमेश्वर के वचन का बीज ऐसे हृदयों में पड़े जो अच्छी भूमि के समान हैं, जो वचन सुनकर भले और उत्तम मन में सम्भाले रहते हैं, और धीरज से फल लाते हैं ।

अपने पाठकों से मेरा निवेदन है, कि यदि आप इस पुस्तक से वास्तव में पूर्ण लाभ प्राप्त करना चाहते हैं, तो इसे बाइबल के प्रकाश में पढ़ें । यदि आप ऐसा करेंगे तो मेरी आशा है कि यह पुस्तक बाइबल को समझने में आपकी सहायता करेगी, और अनेकों उन प्रश्नों के उत्तर आपको सरलता से प्राप्त हो जाएंगे जो बाइबल-अध्ययन करते समय अक्सर आपके मन में उठते हैं ।

सनी डेविड

मसीह की कलीसिया
पोस्ट बॉक्स ३८१५
नई दिल्ली ११००४६ ।

विषय-सूची

१.	आपको यह विश्वास क्यों करना चाहिए कि बाइबल परमेश्वर का वचन है ?	... ९
२.	आपको यह विश्वास क्यों करना चाहिए कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है	... १३
३.	परमेश्वर का पुत्र	... १७
४.	मूर्ती-पूजा का पाप	... २२
५.	मसीह का लोहू	... २६
६.	यीशु मसीह क्यों मरा	... ३१
७.	क्या आपने कभी मसीह की कलीसिया के बारे में सुना है ?	... ३५
८.	मसीह की कलीसिया क्या है ?	... ३९
९.	नए नियम की कलीसिया	... ४४
१०.	मसीह की कलीसिया भारत में कब तक रहेगी ?	... ४८
११.	बाइबल के चार प्रश्न	... ५३
१२.	अपने नगर या गांव में मसीह की कलीसिया का आरम्भ आप कैसे कर सकते हैं	... ५७
१३.	मसीह का नाम	... ६१
१४.	आप केवल एक मसीही बन सकते हैं ?	... ६५
१५.	मसीही धर्म आपके लिये क्या कर सकता है	... ६९
१६.	वे जो मसीही हैं	... ७३
१७.	उद्धार कैसे मिले	... ७७
१८.	उद्धार की योजना	... ८२
१९.	मसीह में	... ८६

२०. नया जन्म ... ९१
२१. नए नियम का बपतिस्मा ... ९५
२२. बपतिस्मे का उद्देश्य ... ९८
२३. क्रूस पर चढ़ाया गया डाकू ... १०३
२४. बालकों का बपतिस्मा ... १०७
२५. क्या फिर से बपतिस्मा लेना चाहिए ? ... ११२
२६. विश्वास द्वारा उद्धार ... ११६
२७. नए नियमानुसार एकता ... १२१
२८. नए नियम की उपासना ... १२६
२९. सप्ताह का पहिला दिन ... १३०
३०. कौन-सी व्यवस्था कार्यशील है ? ... १३४
३१. पवित्र आत्मा के नाप ... १३८
३२. अन्य भाषा ... १४२
३३. धार्मिक नाम तथा पदवियां ... १४७
३४. स्वाधीन प्रचारक तथा कलीसियाएं ... १५२
३५. यीशु मसीह का दोबारा आना ... १५६

आपको यह विश्वास क्यों करना चाहिए कि बाइबल परमेश्वर का वचन है

सम्पूर्ण संसार में लाखों लोगों का यह विश्वास है कि बाइबल परमेश्वर का वचन है। वे इस सत्य को बिना प्रश्न किये स्वीकार करते हैं। कुछ लोग इसकी आलोचना करते हैं, परन्तु केवल इसलिये क्योंकि उन्होंने इसमें लिखी बातों को ठीक से नहीं पढ़ा है, और न इसके फल को जांचा है। जबकि अन्य कुछ लोग पूर्ण रूप से बाइबल को अस्वीकार करते हैं क्योंकि वे संसार की किसी अन्य वस्तु को स्वीकार करना चाहते हैं। यदि आप अन्तिम दोनों वर्गों में से एक हैं तब मैं आपको संक्षेप में कुछ ऐसे कारण बतलाना चाहता हूं कि आपको यह विश्वास क्यों करना चाहिये कि बाइबल परमेश्वर का वचन है।

१. स्वयं बाइबल में लिखा है कि यह परमेश्वर का वचन है। इसे प्रभु का वचन कहा गया है। (यिर्मयाह १४:१)। पतरस ने कहा, कि परमेश्वर के भक्त पवित्र आत्मा द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे। (२ पतरस १:२०,२१)। यीशु मसीह ने अनेकों बार पुराने नियम में से दोहराते हुये कहा, यह परमेश्वर का वचन है। (यूहन्ना १०:३५)। और फिर पौलुस हमें बतलाता है कि यह सब परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है। (२ तीमुथियुस ३:१६,१७)।

२. बाइबल वास्तविक विज्ञान से सहमत है। इस से भी पहले कि मनुष्य पता लगाता कि पृथ्वी गोल है, समुद्र में मार्ग हैं और सैकड़ों अन्य ऐसे तथ्य, बाइबल में यह सब पहिले लिखा जा चुका था। (यशा-

याह ४०:२२ ; भजन संहिता ८) । बाइबल के लेखकों को इसका पूर्व ज्ञान कैसे हो गया ? परमेश्वर ने उन पर यह सब प्रकट किया था ।

३. बहुत सी पुरातन खोजों द्वारा भी बाइबल का समर्थन हुआ है । इस प्रकार की खोजों ने उन घटनाओं पर प्रकाश डाला है जो यीशु मसीह से सैंकड़ों वर्ष पूर्व घटी थीं ; परन्तु बाइबल में लिखित तथ्यों का इन से पूर्ण समर्थन हुआ । कुछ लोग ऐसे भी हुए हैं जिन्हों ने बाइबल में लिखित कुछ वृत्तान्तों के ऊपर अकसर सन्देह किया है, जैसे जल-प्रलय का वृत्तान्त, परन्तु, १८७२ में जॉर्ज स्मिथ को बाबुल के वे पट्टिकाएं मिलीं जो कि जल-प्रलय के विषय में बतलाती हैं । इस प्रकार के और भी बहुत से उदाहरण दिये जा सकते हैं ।

४. बाइबल और भूगोल सहमत हैं । बहुत से पर्वत, नदियां और शहर इत्यादि जो आज हैं, वे जिस नाम से आज पुकारे जाते हैं, उनके यही नाम हम बाइबल में भी पाते हैं । यह दर्शाता है कि बाइबल में किन्हीं कल्पित स्थानों का वर्णन नहीं है जिनका कभी अस्तित्व ही ना था ।

५. बाइबल और लौकिक इतिहास दोनों एक दूसरे का समर्थन करते हैं । उदाहरणार्थ, बहुत सी एसी घटनायें जिन्हें हम बाइबल में पढ़ते हैं, उनका उल्लेख हमें संसार के विभिन्न इतिहासों में मिलता है । यदि बाइबल एक कहानियों की पुस्तक होती, तब यह सब कैसे सम्भव होता ।

६. बाइबल को केवल मनुष्य के ही द्वारा नहीं लिखा जा सकता था, क्योंकि इसमें से बहुत अधिक मनुष्य के ज्ञान से परे था । यदि इसे केवल मनुष्य ने ही लिखा होता, तब ऐसा क्यों है कि अब तक कोई भी व्यक्ति इस योग्य नहीं हुआ कि इस प्रकार की कोई दूसरी पुस्तक लिख सके ? यदि इसे मनुष्य ने लिखा होता तो शायद अब तक कोई अन्य व्यक्ति इस से भी अच्छी पुस्तक लिख लेता ।

७. बाइबल एकत्व की एक अद्भुत पुस्तक है। यद्यपि इसके ४० विभिन्न लेखक हैं, जिन्होंने इसकों १६०० वर्षों की अवधि में पूर्ण किया। वे सब विभिन्न व्यवसायों वाले थे, भिन्न-भिन्न स्थानों में रहते थे, तौभी यह सारी पुस्तकें मिलकर एक सम्पूर्ण पुस्तक बन गई। यदि यह सम्पूर्ण रचना परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार न लिखी गई होती तो यह सब कैसे सम्भव हो सकता था ?

८. बाइबल में भविष्यद्वाणियों का केवल वर्णन ही नहीं है परन्तु वह यह भी प्रकट करती है कि यह सब किस प्रकार से पूर्ण हुई। उदाहरणार्थ, योएल २:२८,२९ में लेखक उस समय का वर्णन करता है जब प्रभु का आत्मा उंडेला जाएगा। फिर, प्रेरितों के काम २ अध्याय में, जिस घटना के बारे में हम पढ़ते हैं, पतरस कहता है कि यह वह बात है जो योएल भविष्यद्वक्ता ने कही थी। यीशु मसीह के विषय में पुराने नियम में बहुत सी भविष्यद्वाणियां हैं, और वे सब नये नियम में पूर्ण हुईं। पढ़िये यशायाह ५३ : ५, और लूका २२ : ६३,६४।

९. भिन्न-भिन्न समयों में यह प्रकट हुआ है कि बाइबल परमेश्वर का वचन है। इसके बहुत से शत्रु भी हुए, परन्तु यह उन सबसे सुरक्षित रही। शताब्दियों से इसे सुरक्षित रखा गया, और यह प्रमाणित करने के लिये कि इस में कोई परिवर्तन नहीं आया है इसके वर्तमान अनुवाद को प्राचीन लिपी से मिलाया जा सकता है।

१०. बाइबल मनुष्य के बड़े-बड़े प्रश्नों का उत्तर देती है। मनुष्य कहां से आया ? उसके जीवन का क्या उद्देश्य है ? वह कहां जा रहा है ? बाइबल ही केवल एक ऐसी पुस्तक है जो इन सब प्रश्नों का उत्तर देती है। मनुष्य को परमेश्वर ने बनाया (उत्पत्ति १ : २६,२७), उसका उद्देश्य अपने बनानेवाले की महिमा करना है (१ पतरस ४ : ११), और उसे एक निश्चित स्थान पर अनन्त जीवन अवश्य बिताना है। (मत्ती २५ : ४६)।

११. समस्त संसार के मनुष्यों पर बाइबल का सदा बहुत अधिक प्रभाव रहा है। मनुष्य चाहे जितना भी बुरा हो परन्तु बाइबल की शिक्षाओं से वह सर्वदा प्रभावित रहा है।

१२. बाइबल कभी भी लुप्त नहीं होगी। यीशु मसीह ने यूहन्ना १२ : ४८ में यूं ही कहा है।

तब, सत्य ही, बाइबल परमेश्वर का वचन है। यह परमेश्वर की ओर से मनुष्य के लिये है। यह सत्य है, और एक ऐसी पथ-प्रदर्शिका है जो मनुष्य को पृथ्वी पर से स्वर्ग का रास्ता दिखाती है। इसे स्वीकार कीजिए, इसकी शिक्षाओं को मानिये, और इसकी प्रतिज्ञाओं के द्वारा अनुग्रह प्राप्त कीजिये। मेरा विश्वास है कि अब आप भी यह स्वीकार करेंगे कि बाइबल परमेश्वर का वचन है।

आपको यह विश्वास क्यों करना चाहिए कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है?

यदि आप यह विश्वास नहीं करते कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है तो यह सामग्री आप ही के लिये है। ऐसे बहुत से प्रत्यक्ष प्रमाण हैं जो इस बात की ओर संकेत करते हैं कि यीशु मसीह किसी मनुष्य मात्र अथवा भविष्यद्वक्ता से कहीं अधिक बढ़कर था। वास्तव में वह हर एक दृष्टिकोण से परमेश्वर का पुत्र था और निम्नलिखित कुछ ऐसे प्रमाण हैं जिनके कारण आपको यह स्वीकार करना पड़ेगा।

१. प्रभु यीशु आदि में परमेश्वर के साथ था। उत्पत्ती १ : २६ में हम पढ़ते हैं, "फिर परमेश्वर ने कहा हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं।" यूहन्ना १ : १ में लिखा है, "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।" और आगे चलकर वह बतलाता है कि यही मसीह था।

२. प्रभु यीशु के बारे में भविष्यद्वाणी में भी कहा गया था। यशायाह ५३ अध्याय में भविष्यद्वक्ता मसीह तथा उसके आने के उद्देश्य का वर्णन करता है। प्रेरितों ८ : ३२-३५ में हम पढ़ते हैं कि जब फिलिप्पुस को खोजा यशायाह ५३ अध्याय में से पढ़ता हुआ मिला, तो उसने उसी अध्याय में से उसे प्रभु यीशु के विषय में बतलाया। यह दर्शाता है कि यशायाह उसी के बारे में भविष्यद्वाणी कर रहा था। पुराने नियम में ऐसी ही और भी बहुत सी भविष्यद्वाणियां हैं।

३. प्रभु यीशु एक कुँवारी से उत्पन्न हुआ था। इसका अभिप्राय

यह हुआ कि उसका कोई सांसारिक पिता नहीं था। इसकी अपेक्षा परमेश्वर उसका पिता था। अपने पिता को स्वर्ग में छोड़कर, वह दीन होकर मनुष्य के सदृश्य बना और एक कुंवारी से उत्पन्न हुआ, जो कि एक आश्चर्यजनक जन्म था। इसके द्वारा भी एक भविष्यद्वाणी पूरी हुई जो उसके बारे में की गई थी (मत्ती १ : १८-२५ ; यशायाह ७ : १४)।

४. प्रभु यीशु एक निष्कलंक मनुष्य था। केवल वही एक ऐसा मनुष्य था जिसने निष्कलंक जीवन बिताया और निष्पाप रहा। पतरस कहता है कि हमें प्रभु यीशु का अनुसरण करना चाहिए, "न तो उसने पाप किया, और न उसके मुँह से छल की कोई बात निकली।" (१ पतरस २ : २२)। अपने निष्पाप जीवन के कारण ही वह इस योग्य बना कि वह पापियों के लिए मर सके, और इस प्रकार से संसार में आशा लाए (१ यूहन्ना ३ : ५)।

५. प्रभु यीशु भविष्यद्वाणियों को पूरा करने के लिए आया। "यह न समझो, कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूं। लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूं।" (मत्ती ५ : १७, १८)।

६. प्रभु यीशु ने अनेकों आश्चर्यकर्म किये। उसने रोगियों को चंगा किया, बहिरों को सुनने की, गूँगों को बोलने की, लंगड़ों को चलने की शक्ति दी, और मरे हुओं को जिलाया। उसने सब प्रकार के रोगों को चंगा किया, जन समूहों को खाना खिलाया, और पानी पर चला। हमें यह बतलाया गया है कि "बहुतों ने उन चिन्हों को जो वह दिखाता था देखकर उसके नाम पर विश्वास किया।" (यूहन्ना २ : २३)।

७. प्रभु यीशु के शिष्यों ने उसे परमेश्वर का पुत्र स्वीकार किया। पतरस ने कहा, "कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।" (मत्ती १६ : १६)। ऐसी और भी बहुत सी स्वीकारोक्तियाँ दी जा

सकती हैं।

८. शैतान ने भी प्रभु यीशु को परमेश्वर का पुत्र स्वीकार किया। "और दुष्टात्मा भी चिल्लाती और यह कहती हुई कि तू परमेश्वर का पुत्र है, बहुतों में से निकल गई पर वह उन्हें डांटता और बोलने नहीं देता था, क्योंकि वे जानते थे, कि यह मसीह है।" (लूका ४ : ४१)।

९. प्रभु यीशु ने अन्य लोगों से कहा कि वह परमेश्वर का पुत्र है। "तो जिसे पिता ने पवित्र ठहराकर जगत् में भेजा है, तुम उस से कहते हो कि तू निन्दा करता है, इसलिए कि मैंने कहा मैं परमेश्वर का पुत्र हूं।" (यूहन्ना १० : ३६)।

१०. प्रभु यीशु ने स्वीकार किया कि वह परमेश्वर का पुत्र है। उसने लाज़र को मृतकों में से जिलाया ताकि परमेश्वर का पुत्र महिमा पावे। (यूहन्ना ११ : ४)।

११. परमेश्वर ने प्रभु यीशु को अपना पुत्र स्वीकार किया। "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं प्रसन्न हूं। इसकी सुनो।" (मत्ती १७ : ५)।

१२. प्रभु यीशु मरे हुओं में से जी उठा। पौलुस ने कहा, "और पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं से से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है।" (रोमियों १ : ४)।

१३. जो उस पर विश्वास करते हैं प्रभु यीशु उनको जीवन देता है। "परन्तु ये इसलिए लिखे गये हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है। और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।" (यूहन्ना २० : ३१)।

१४. प्रभु यीशु फिर आ रहा है। "...तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा।" (यूहन्ना १४ : ३)।

१५. इसी प्रकार से लौकिक इतिहास में भी प्रभु यीशु को परमेश्वर का पुत्र स्वीकार किया गया है।

१६. प्रभु यीशु आज भी है और अनन्त तक रहेगा। लिखने के लिए स्थान की कमी के कारण यहां हम और ऐसे प्रमाणों को अधिक नहीं दे सके हैं जो कि बाइबल में अथवा बाइबल के बाहर हैं। परन्तु हम चाहते हैं कि जो कुछ लिखा गया है उसके विषय में आप विचार करें।

क्या आपका यह विश्वास है कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है? यदि हाँ, तो उसे स्वीकार कीजिये (मत्ती १० : ३२)। उसकी आज्ञाओं को मानिये ताकि वह आपका उद्धारकर्त्ता हो सके; ताकि उसके द्वारा आपको अनन्त जीवन की आशा हो। (प्रेरितों २ : ३८; मरकुस १६ : १६ कुलुस्सियों १ : २७)।

परमेश्वर का पुत्र

बाइबल स्पष्टता से बताती है कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। कुछ लोग इस बात को स्वीकार नहीं करते। वे इस विषय में तर्क करते हैं, और इसे अस्वीकार करते हैं। परन्तु उनकी कठिनाई यह है कि वे इस सत्य को मनुष्यों के विचारानुसार ही समझने का प्रयत्न करते हैं। वे कहते हैं, "परमेश्वर का एक पुत्र कैसे हो सकता है?" वे तर्क करके कहते हैं, "कि यदि परमेश्वर का एक पुत्र है तो उसकी एक पत्नी भी होना आवश्यक है।" इस प्रकार से वे इस सत्य को अपने मन में एक मूर्खता का रूप देकर छोड़ देते हैं। परन्तु आईए, हम इस विषय में फिर से विचार करें और देखें कि सच्चाई क्या है।

सब से पहले हम देखेंगे कि बाइबल में पुत्र शब्द का उल्लेख विभिन्न लोगों के लिये कई तरह से हुआ है।

(१) क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को रचा है, इसलिये शारीरिक रूप से सभी मनुष्य परमेश्वर के पुत्र (सन्तान) कहे जा सकते हैं। यह हम उत्पत्ति ६:२ में देखते हैं। मनुष्य परमेश्वर का वंश है। (प्रेरितों २७:२८)। इसलिये चाहे कोई अच्छा हो या बुरा, परमेश्वर की सेवा करता हो या न करता हो, देह तथा आत्मा, वह परमेश्वर की सृष्टि है, और इस भौतिक संसार में वह परमेश्वर का एक पुत्र या सन्तान है। किन्तु, अब जबकि वह अपने ही पापों के कारण अपने सृष्टिकर्त्ता से अलग होकर दूर हो गया है, तो उसकी आवश्यकता है कि वह अपने पापों से छुटकारा पाकर फिर से परमेश्वर के पास आए। (इफिसियों २: १६ ; कुलुस्सियों १:१४)।

(२) इस्राएल जाति का वर्णन करते हुए परमेश्वर ने उसे अपना

पुत्र कहकर सम्बोधित किया। यह सच था, क्योंकि शारीरिक तथा आत्मिक रूप से, वे उसके चुने हुए लोग थे : "और तू फ़िरौन से कहना, कि यहोवा यों कहता है, कि इस्राएल मेरा पुत्र वरन मेरा जेठा है, और मैं जो तुझ से कह चुका हूं, कि मेरे पुत्र को जाने दे कि वह मेरी सेवा करे ; और तूने अब तक उसे जाने नहीं दिया, इस कारण मैं तेरे पुत्र वरन जेठे को घात करूंगा।" (निर्गमन ४:२२, २३)।

(३) परमेश्वर की आज्ञाओं को मानकर मनुष्य आत्मिक रूप से परमेश्वर का पुत्र बन जाता है। "इसलिये कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।" (रोमियों ८:१४)। "मैं यह कहता हूं, कि वारिस जब तक बालक है, यद्यपि सब वस्तुओं का स्वामी है, तौभी उसमें और दास में कुछ भेद नहीं। परन्तु पिता के ठहराए हुए समय तक रक्षकों और भन्डारियों के वश में रहता है। वैसे ही हम भी, जब बालक थे, तो संसार की आदि शिक्षा के वश में होकर दास बने हुए थे। परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा और व्यवस्था के आधीन उत्पन्न हुआ। ताकि व्यवस्था के आधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हम को लेपालक होने का पद मिले। और तुम जो पुत्र हो, इसलिये परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारता है, हमारे हृदय में भेजा है। इसलिये तू अब दास नहीं, परन्तु पुत्र है ; और जब पुत्र हुआ, तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ।" (गलतियों ४:१-७)।

पुत्र होने के कारण, हम परमेश्वर के सन्तान भी हैं। सुनिये : "क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्हों ने मसीह को पहिन लिया है।" (गलतियों ३:२६,२७)। "इसलिये प्रिय बालकों की नाईं परमेश्वर के सदृश्य बनो।" (इफिसियों ५:१)। "इसी से परमेश्वर की सन्तान, और शैतान की

सन्तान जाने जाते हैं ; जो कोई धर्म के काम नहीं करता, वह परमेश्वर से नहीं, और न वह, जो अपने भाई से प्रेम नहीं रखता।" (१ यूहन्ना ३:१०)। "जब हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, तो इसी से हम जानते हैं, कि परमेश्वर की संतानों से प्रेम रखते हैं।" (१ यूहन्ना ५:२)।

(४) और फिर, हम यीशु मसीह के विषय में पढ़ते हैं, कि उसे एक विशेष रूप से, व्यक्तिगत, तथा एक पिता-पुत्र के से सम्बन्ध के रूप में परमेश्वर का पुत्र कहा गया है। सबसे पहिले हम देखते हैं कि परमेश्वर ने मसीह को अपना पुत्र कहकर स्वीकार किया। "और देखो यह आकाशवाणी हुई, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं।" (मत्ती ३:१७)। और परमेश्वर ने फिर कहा, "कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं प्रसन्न हूं इसकी सुनो।" (मत्ती १७:५)। पतरस ने यीशु मसीह को जीवते परमेश्वर का पुत्र कहकर स्वीकार किया। (मत्ती १६:१६)। परमेश्वर ने अपने पुत्र को संसार के लोगों के पापों के कारण मरने को भेजा। (यूहन्ना ३:१६,१७ ; रोमियों ८:३)। और मसीह का प्रचार यह कहकर किया गया कि वह परमेश्वर का पुत्र है। (प्रेरितों ९:२०)। इसी प्रकार के अन्य अनेकों उल्लेखों को भी देखा जा सकता है, परन्तु ये ही प्रर्याप्त होने चाहिएं।

किन्तु, मसीह किस प्रकार से परमेश्वर का पुत्र था ? सबसे बड़ी बात यह है, कि वह आदि में परमेश्वर के साथ था। "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था।" (यूहन्ना १:१,२)। उसने संसार की सृष्टि में भाग लिया। परमेश्वर ने कहा, "हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं।" (उत्पत्ति १:२६)। इब्रानियों की पत्री का लेखक कहता है, "···परमेश्वर ने···इन दिनों के अन्त में हम से पुत्र के द्वारा बातें की; जिसे उस ने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के

द्वारा उसने सारी सृष्टि रची है।" (इब्रानियों १:२)। यूहन्ना फिर कहता है, "सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।" (यूहन्ना २:३)।

मसीह परमेश्वर के व्यक्तित्व (ईश्वरत्व) का एक भाग था, जो कि परमेश्वर, पिता; मसीह, पुत्र; और पवित्र आत्मा के रूप में विद्यमान् था। (मत्ती २८:२०)। मसीह के बारे में बोलते हुए, प्रेरित पौलुस कहता है, "क्योंकि उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है। और तुम उसी में भरपूर हो गए हो जो सारी प्रधान्ता और अधिकार का शिरोमणि है।" (कुलुस्सियों २:९,१०)। रोमियों १:२० को भी पढ़िए।

मसीह परमेश्वर के साथ आत्मा के रूप में विद्यमान् था, जैसे कि परमेश्वर स्वयं आत्मा है। और तब, एक निश्चित समय पर, जिस प्रकार से प्रतिज्ञा की गई थी, वह अपने पिता को छोड़कर इस संसार में आने के लिये तैयार हो गया, ताकि वह एक कुवांरी से जन्म ले, और एक मनुष्य का स्वरूप धारण करे, एक विशेष कार्य को पूरा करे, और संसार के लोगों के पापों के लिये अपने आपको एक क्रूस पर बलिदान करे, गाड़ा जाए, और जी उठे, और अपने पिता के पास स्वर्ग में वापस चला जाए, जहां वह अभी भी है। (मत्ती १:२१; यूहन्ना ३:१७; गलतियों ४:१; यूहन्ना ४:९; १ यूहन्ना ४:१४; १ कुरिन्थियों १५:१-४; प्रेरितों २)।

यद्यपि मसीह आदि में परमेश्वर के साथ था, वह अनन्त है, ईश्वरीय है, तथा उसमें परमेश्वर के सारे गुण हैं, तौभी वह परमेश्वर पिता नहीं है। क्योंकि केवल एक ही परमेश्वर, एक ही मसीह, और एक ही पवित्र आत्मा है। (इफिसियों ४:१-६)। वे एक हैं तौभी तीन हैं। प्रत्येक एक व्यक्तित्व है, प्रत्येक के पास करने को एक विशेष कार्य है, और प्रत्येक परमेश्वरत्व का एक विशेष भाग है।

यह कहना कि परमेश्वर का एक पुत्र नहीं हो सकता परमेश्वर को सीमित करना है। यह हम नहीं कर सकते। यह बात कदाचित् हम पूर्ण रूप से नहीं समझ सकते, परन्तु हम परमेश्वर को भी पूरी तरह से नहीं समझते। परमेश्वर तथा उसका पुत्र ईश्वरीय हैं, परन्तु हम मानव हैं। जिसे विश्वास से स्वीकार किया जाता है उसे हम पूर्णतयः नहीं जान सकते। आप को व मुझे इन बातों के बारे में अनुमान लगाने की आवश्यकता नहीं है। सब वस्तुएं परमेश्वर की ओर संकेत करती हैं, और उसने हमें अपना वचन दिया है, तथा उस वचन में वह अपने पुत्र को हम पर प्रगट करता है। ऐसे अनेकों प्रमाण तथा वास्तविकताएं विद्यमान् हैं जो यह सिद्ध करते हैं कि वह परमेश्वर का पुत्र है। इसलिये, उसने कहा, "तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो।" (यूहन्ना १४:१)। और हम कर सकते हैं। हमें करना चाहिए, अन्यथा हम अपने पापों में ही नाश होंगे। (यूहन्ना ८ : २४)।

मूर्ति–पूजा का पाप

एक मूर्ति, लकड़ी, पत्थर या किसी अन्य वस्तु के द्वारा बनाया गया एक स्वरूप है, जिसे किसी "देवता" या "देवी" का प्रतीक समझा जाता है। इसे किसी मनुष्य के रूप में, या सृष्टि के किसी एक भाग के रूप में, या किसी अन्य ऐसी वस्तु के रूप में भी, जिसके लिये मनुष्य अपना समय दे और जिसकी वह उपासना करे, पाया जा सकता है। उपासना में मूर्तिपूजा का स्थान उतना ही पुराना है जितना कि प्राचीन-काल और उतना ही नया है जितना की आधुनिककाल। इसे कई प्रकार से व्यवहार में लाया जाता है, परन्तु क्योंकि यह मूर्तिपूजा है इसलिये यह पाप है, क्योंकि मूर्तिपूजा करके लोग एक ऐसी वस्तु की उपासना करते हैं जो सच्चा व जीवता परमेश्वर नहीं है।

मूर्तियों के विषय में बाइबल कहती है, "तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में व पृथ्वी पर, वा पृथ्वी के जल में है। तू उनको दन्डवत न करना, और न उनकी उपासना करना, क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला ईश्वर हूं।" (निर्गमन २०:४,५)। "सो इस्राएल के घराने से कह, प्रभु यहोवा यों कहता है, फिरो और अपनी मूर्तों को पीठ के पीछे करो ; और अपने सब घृणित कामों से मुंह मोड़ो।" (यहेजकेल १४:६)।

इसी विषय पर नए नियम के लेखक आगे कहते हैं, "इसलिये मेरा विचार यह है कि अन्य जातियों में से जो लोग परमेश्वर की ओर फिरते हैं, हम उन्हें दुख न दें। परन्तु उन्हें लिख भेजें, कि वे मूर्तों की अशुद्धताओं और व्यभिचार और गला घोंटे हुओं के मांस से और लोहू से परे रहें।" (प्रेरितों १५:१९-२०)। "हे बालको, अपने आप को

मूरतों से बचाए रखो।" (१ यूहन्ना ५:२१)।

पवित्र लेखक मूर्तों तथा उनकी उपासना की मूर्खता को इस प्रकार कहकर दर्शाते हैं : "उनका देश मूरतों से भरा है ; वे अपने हाथों की बनाई हुई वस्तुओं को जिन्हें उन्हों ने अपनी उंगलियों से सवांरा है, दन्डवत करते हैं। इस से मनुष्य झुकते और बड़े मनुष्य प्रणाम करते हैं, इस कारण उनको क्षमा न कर!" (यशायाह २:८,९)। "जो मूरत खोदकर बनाते हैं, वे सब के सब व्यर्थ हैं और जिन वस्तुओं में वे आनन्द ढूंढ़ते उन से कुछ लाभ न होगा ; उनके साक्षी, न तो आप कुछ देखते और न कुछ जानते हैं, इसलिये उनको लज्जित होना पड़ेगा। किस ने देवता वा निष्फल मूरत ढाली है ? देख, उसके सब संगियों को तो लज्जित होना पड़ेगा, कारीगर तो मनुष्य ही हैं; वे सब के सब इकट्ठे होकर खड़े हों ; वे डर जाएंगे ; वे सब के सब लज्जित होंगे। लोहार एक बसूला अंगारों में बनाता और हथौड़ों से गढ़कर तैयार करता है, अपने भुजबल से वह उसको बनाता है ; फिर वह भूखा हो जाता है और उसका बल घटता है, वह पानी नहीं पीता और थक जाता है। बढ़ई सूत लगाकर टांकी से रेखा करता है और रन्दनी से काम करता और परकार से रेखा खींचता है, वह उसका आकार और मनुष्य की सी सुंदरता बनाता है ताकि लोग उसे घर में रखें। वह देवदार को काटता वा वन के वृक्षों में से जाति जाति के बांजवृक्ष चुनकर सेवता है, वह एक तूस का वृक्ष लगाता है जो वर्षा का जल पाकर बढ़ता है। तब वह मनुष्य के ईंधन के काम में आता है ; वह उस में से कुछ सुलगाकर तापता है, वह उसको जलाकर रोटी बनाता है ; उसी से वह देवता भी बनाकर उसको दन्डवत करता है ; वह मूरत खुदवाकर उसके सामने प्रणाम करता है। उसका एक भाग तो वह आग में जलाता और दूसरे भाग से मांस पकाकर खाता है, वह मांस भूनकर तृप्त होता ; फिर तापकर कहता है, अहा, मैं गर्म हो

गया, मैं ने आग देखी है ! और उसके बचे हुए भाग को लेकर वह एक देवता अर्थात् एक मूरत खोदकर बनाता ; तब वह उसके सामने प्रणाम और दन्डवत करता और उस से प्रार्थना करके कहता है, मुझे बचा ले, क्योंकि तू मेरा देवता है। वे कुछ नहीं जानते, न कुछ समझ रखते हैं ; क्योंकि उनकी आंखें ऐसी मूंदी गई हैं कि वे देख नहीं सकते ; और उनकी बुद्धि ऐसी कि वे बूझ नहीं सकते। कोई इस पर ध्यान नहीं करता, और न किसी को इतना ज्ञान व समझ रहती है कि कह सके, उसका एक भाग तो मैं ने जला दिया और उसके कोयलों पर रोटी बनाई ; और मांस भूनकर खाया ; फिर क्या मैं उसके बचे हुए भाग को घिनौनी वस्तु बनाऊं ? क्या मैं काठ को प्रणाम करूं ? वह राख खाता है ; भरमाई हुई बुद्धि के कारण वह भटकाया गया है और वह न अपने को बचा सकता और न यह कह सकता है, क्या मेरे दहिने हाथ में मिथ्या नहीं ?" (यशायाह ४४:९-२०)।

इसी बात की मूर्खता के विषय में दाऊद ने यूं लिखा: "हे यहोवा, हमारी नहीं, बरन अपने ही नाम की महिमा, अपनी करुणा और सच्चाई के निमित्त कर। जाति-जाति के लोग क्यों कहने पाएं, कि उनका परमेश्वर कहां रहा ? हमारा परमेश्वर तो स्वर्ग में है ; उसने जो चाहा वही किया है। उन लोगों की मूरतें सोने चान्दी ही की तो हैं ; वे मनुष्यों के हाथ की बनाई हुई हैं। उनके मुंह तो रहता है परन्तु वे बोल नहीं सकतीं ; उनके आखें तो रहती हैं परन्तु वे देख नहीं सकतीं। उनके कान तो रहते हैं, परन्तु वे सुन नहीं सकतीं ; उनके नाक तो रहती है परन्तु वे सूंघ नहीं सकतीं। उनके हाथ तो रहते हैं, परन्तु वे स्पर्श नहीं कर सकतीं ; उनके पांव तो रहते हैं, परन्तु वे चल नहीं सकतीं ; और अपने कंठ से कुछ भी शब्द नहीं निकाल सकतीं। जैसी वे हैं वैसे ही उनके बनानेवाले हैं ; और उन पर सब भरोसा रखनेवाले भी वैसे ही हो जाएंगे।" (भजन ११५:१-८)।

इसके अतिरिक्त, नए नियम में, हमें यूं मिलता है : "जब पौलुस

अथेने में उनकी बाट जोह रहा था, तो नगर को मूरतों से भरा हुआ देखकर उसका जी जल गया।" (प्रेरितों १७:१६)। और आगे लिखा है, "तब पौलुस ने अरियपगुस के बीच में खड़े होकर कहा ; हे अथेने के लोगो मैं देखता हूं, कि तुम हर बात में देवताओं के बड़े माननेवाले हो। क्योंकि मैं फिरते हुए तुम्हारी पूजने की वस्तुओं को देख रहा था, तो एक ऐसी वेदी भी पाई, जिस पर लिखा था, कि "अनजाने ईश्वर के लिये।" सो जिसे तुम बिना जाने पूजते हो मैं तुम्हें उसका समाचार सुनाता हूं।" (प्रेरितों १७:२२, २३)। और वह उन्हें आगे बताते हुए कहता है, कि जिस परमेश्वर की सेवा वह करता है, वह सब वस्तुओं का बनाने वाला है, और वह मनुष्य के हाथों से बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता, और न उसे भोजन वा जल इत्यादि की आवश्यकता होती है। एक अन्य स्थान पर वह कहता है, "सो मूरतों के सामने बलि की हुई वस्तुओं के खाने के विषय में—हम जानते है, कि मूरत जगत में कोई वस्तु नहीं, और एक को छोड़ और कोई परमेश्वर नहीं। यद्यपि आकाश में और पृथ्वी पर बहुत से ईश्वर कहलाते हैं, (जैसा कि बहुत से ईश्वर और बहुत से प्रभु हैं)। तौभी हमारे निकट तो एक ही परमेश्वर है ; अर्थात् पिता जिसकी ओर से सब वस्तुएं हैं, और हम उसी के लिये हैं, और एक ही प्रभु है ; अर्थात् यीशु मसीह जिस के द्वारा सब वस्तुएं हुई, और हम भी उसी के द्वारा हैं।" (१ कुरिन्थियों ८:४-६)।

सो बाइबल मूर्त्ती पूजा की निन्दा करती है और यह भी कहती है कि सब मूर्त्तीपूजक, झूठे इत्यादि नरक की आग में डाले जाएंगे। (प्रकाशितवाक्य २१:८)। दूसरी ओर, बाइबल हमें बताती है, तथा सृष्टि, ज्ञान, और बुद्धि भी हमें सिखाते हैं कि केवल एक ही परमेश्वर है। (इफिसियों ४:६)। और वह आत्मा है (यूहन्ना ४:२४), तथा हमें केवल उसी की सेवा करनी चाहिए। (१ थिस्सलुनीकियों १:९)।

मसीह का लोहू

मनुष्य और परमेश्वर के संबन्ध में लोहू का सर्वदा एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। पुराने नियम के समय में यह सत्य था क्योंकि उस समय पशुबलियाँ चढ़ाई जाती थीं। परन्तु इन बलिदानों के द्वारा स्थायी रूप से पापों से मुक्ति नहीं मिल सकती थी, क्योंकि इब्रानियों की पत्री में हम पढ़ते हैं, "क्योंकि अनहोना है, कि बैलों और बकरों का लोहू पापों को दूर करे।" (इब्रानियों १०:४)। तब यदि पशुओं का लोहू पापों को दूर नहीं कर सकता, तो मनुष्य का उद्धार किस प्रकार से हो सकता था? नये नियम का अध्ययन करने से हमें ज्ञात होगा कि यीशु मसीह का लोहू समस्त संसार के लोगों के लिये केवल एक बार बहाया गया ताकि हर एक व्यक्ति उस लोहू के साथ सम्पर्क स्थापित करके अपने पापों से शुद्ध हो सके। सो यहीं से हमारे वास्तविक पाठ का आरम्भ होता है।

मनुष्य क्योंकि पापी है इसलिए वह स्वयं को नहीं बचा सकता, पौलूस कहता है, "परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।" (रोमियों ५:८)। १ कुरिन्थियों १५:३ में वह कहता है कि यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मरा, और यह मृत्यु उसने क्रूस पर सही। (फिलिप्पियों २:८)। इस मृत्यु से उसका लोहू बहाया गया ताकि उसके द्वारा हमें पापों की क्षमा प्राप्त हो सके। अब प्रश्न यह है, कि उस लोहू के साथ हमारा सम्पर्क किस प्रकार से स्थापित हो सकता है? अधिकांश लोग कहेंगे, विश्वास के द्वारा। ठीक है, विश्वास बहुत आवश्यक है, परन्तु केवल विश्वास ही पर्याप्त नहीं है। पवित्र-शास्त्र का अध्ययन करने से हमें ज्ञात होता है कि हम उसके वचन पर चलनेवाले बनें (याकूब १:२२), उसका अनुसरण करें (इब्रानियों ५:

८,९), और उसकी आज्ञाओं को मानें (यूहन्ना १४:१५), इत्यादि। इसलिए, जब हम उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं तो हमारा सम्पर्क उसके लोहू के साथ हो जाता है। अब, उसने हमें क्या करने के लिये आज्ञा दी है? यह जानने के लिए हम निम्नलिखित पदों पर ध्यान करें: उदाहरणार्थ, उसने कहा, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६:१६)। जबकि यीशु मसीह ने कहा कि विश्वास करके बपतिस्मा लेने के द्वारा मनुष्य का उद्धार होता है, तब इस आज्ञा का पालन करने के द्वारा निश्चय ही मनुष्य का सम्पर्क मसीह के लोहू के साथ हो जाता है, और वह अपने पापों से शुद्ध हो जाता है। फिर, पतरस ने लोगों की एक भीड़ से कहा, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।" (प्रेरितों २:३८)। एक बार फिर हम देखते हैं कि यदि कोई मन फिराए और पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; (क्योंकि यीशु मसीह ने स्वयं को एक निर्दोष बलिदान करके चढ़ाया, और अपना लोहू बहाया ताकि मनुष्य को पापों की क्षमा प्राप्त हो सके) तो इन आज्ञाओं का पालन करने के द्वारा मनुष्य का सम्पर्क यीशु मसीह के लोहू के साथ हो जाता है और उसे पापों की क्षमा प्राप्त होती है। फिर, शाऊल के मन-परिवर्तन के विषय में, उपदेशक ने आकर कहा, "अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।" (प्रेरितों २२:१६)। परन्तु बपतिस्मा किस तरह से पापों को धो डालता है? यहाँ महत्व जल का नहीं है, परन्तु आज्ञा पालन का है। इसलिए, जब कोई प्रभु की आज्ञा मानता है तो मसीह का लोहू उसके पापों को धो डालता है। यह कितना साधारण है।

रोमियों ६:३-६ में प्रेरित पौलूस कहता है, "क्या तुम नहीं जानते,

कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया ? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उस के साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे। क्योंकि हम जानते हैं, कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें।" वह यहाँ क्या बता रहा है ? वह हम से कह रहा है कि यीशु मसीह की आज्ञा पालन करने के द्वारा हम उस की मृत्यु में सम्मिलित होते हैं व उस मृत्यु के लाभ हमें प्राप्त होते हैं। इसका तात्पर्य यह हुआ कि इस प्रकार हम मसीह के लोहू के सम्पर्क में आते हैं और वही लोहू हमें धोता व शुद्ध करता है। इफिसियों १:७ में पौलूस कहता है कि हमें उसके लोहू के द्वारा ही पापों की क्षमा मिलती है, और मत्ती २६:२८ में यीशु मसीह ने स्वयं कहा कि उसका लोहू इसलिए बहाया गया ताकि हमें पापों की क्षमा मिल सके। यह पद हमें फिर पापों की क्षमा और उद्धार का स्मरण दिलाते हैं, जैसा कि प्रेरितों २:३८ और मरकुस १६:१६ में हम पढ़ते हैं, इसलिए इन आज्ञाओं को मानने के द्वारा हम मसीह के लोहू के पास आते हैं और तब हम शुद्ध हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं है।

आईये, अब यीशु मसीह के लोहू के सबन्ध में कुछ और बातों को देखें।

(१) मसीह के लोहू से नई वाचा मुद्रांकित हुई। (मत्ती २६:२८)।

(२) मसीह के लोहू ने उस दीवार को ढा दिया जो यहूदी व गैर-यहूदियों के मध्य थी। (इफिसियों २:१३,१४)।

(३) हम उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरते हैं। (रोमियों ५:९)।

(४) उसके लोहू के द्वारा छुटकारा प्राप्त होता है। (कुलुस्सियों १:१४)।

(५) उसने अपने लोहू से कलीसिया को मोल लिया है। (प्रेरितों २०:२८)।

(६) क्रूस पर बहे हुए उसके लोहू के द्वारा मेल होता है (कुलुस्सियों १:२०)।

(७) पापियों का छुटकारा मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा होता है। (१ पतरस १:१८,१९)।

(८) मसीह का लोहू सब पापों से शुद्ध करता है। (१ यूहन्ना १:७)।

(९) उसने अपने लोहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है (प्रकाशितवाक्य १:५)।

(१०) मेम्ने के लोहू में वस्त्रों को धोया गया। (प्रकाशितवाक्य ७:१४)।

(११) प्रभु भोज में भाग लेने के द्वारा हम मसीह के लोहू को स्मरण करते हैं। (मत्ती २६:२६-२८)।

आपके लिये मसीह का लोहू क्या महत्व रखता है? क्या आपने उसके सम्पर्क में आने के लिए प्रभु की आज्ञा का पालन किया है? यदि नहीं, तो आप अभी तक पाप के दासत्व में हैं। परन्तु यदि आप प्रभु की आज्ञाओं का पालन करेंगे तो उसके लोहू के सम्पर्क में आने के परिणाम स्वरूप आपका उद्धार होगा। तब आप कलीसिया

में मिला लिये जाएंगे जिसे यीशु मसीह ने अपना लोहू देकर मोल लिया है। फिर एक मसीह जन की तरह यदि आप हर सप्ताह प्रभु—भोज में भाग लेने के द्वारा उस लोहू को स्मरण रखेंगे, और ज्योति में चलेंगे, जैसा कि वह ज्योति में है, तो यीशु मसीह का लोहू आप को सब पापों से व अधर्म से शुद्ध करेगा और अनन्त जीवन के सुनिश्चित पुरुस्कार के लिए आपको सुरक्षित रखेगा। निःसंन्देह, यीशु मसीह के लोहू में सामर्थ है।

यीशु मसीह क्यों मरा

मसीह मरा। यह एक सत्य है जिसका समर्थन बाइबल तथा लौकिक इतिहास दोनों ही ने किया है। इसको ध्यान में रखते हुए हम यह चाहते हैं कि इस विषय के ऊपर कुछ विचार करें।

१. यीशु मसीह की मृत्यु कोई साधारण मृत्यु नहीं थी। बहुत-से मनुष्य संसार में रहे और मर गए। पवित्रशास्त्र का लेखक कहता है कि सब मनुष्यों को मरना अवश्य है। (इब्रानियों ९ : २७)। तब, यीशु मसीह की मृत्यु में क्या विशेषता थी ? क्या वह ऐसे नहीं रहा और मरा जैसे दूसरे मनुष्य ? हां, परन्तु उसका जीवन भिन्न था और जिस उद्देश्य के लिए वह मरा वह भी भिन्न था। उसने पापरहित जीवन व्यतीत किया और वह इसलिए मरा ताकि मनुष्यों का उद्धार करे। (२ कुरिन्थियों ५ : २१)।

२. यीशु मसीह की मृत्यु के विषय में भविष्यद्वाणी में कहा गया था। यशायाह भविष्यद्वक्ता ने कहा था "निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुःखों को उठा लिया; तौभी हमने उसे परमेश्वर का मारा-कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। परन्तु वह हमारे अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएं। हम तो सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गये थे; हम में से हरएक ने अपना-अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया (यशायाह ५३ : ४-६)।

३. यीशु मसीह ने अपनी मृत्यु के विषय में स्वयं कहा था, "यीशु

उनको उत्तर दिया, कि इस मन्दिर को ढा दो, और मैं उसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा" (यूहन्ना २ : १९)। आगे चलकर वह बतलाता है, कि वह अपने ही शरीर के मन्दिर के विषय में और अपनी ही मृत्यु और जी उठने के विषय में कह रहा था।

४. यीशु मसीह को परमेश्वर ने मरने के लिए भेजा था। "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३ : १६)।

५. यीशु मसीह मृत्यु तक आज्ञाकारी रहा। यह उसके पिता की इच्छा थी कि वह मारा जाए। "और मनुष्य के रूप में प्रकट होकर अपने आपको दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।" (फिलिप्पियों २ : ८)।

६. यीशु मसीह निष्पाप मरा। मसीह के विषय में प्रेरित यूहन्ना ने कहा, "और तुम जानते हो, कि वह इसलिए प्रकट हुआ कि पापों को हर ले जाए; और उसके स्वभाव में पाप नहीं।" (१ यूहन्ना ३ : ५)।

७. यीशु मसीह पापियों के लिए मरा। "परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा।" (रोमियों ५ : ८)। "प्रेम इस में नहीं, कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इसमें है कि उसने हम से प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित्त के लिए अपने पुत्र को भेजा।" (१ यूहन्ना ४ : १०)।

८. यीशु मसीह मरा ताकि हम जीवन पाएं। "जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, वह इस से प्रकट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं। (१ यूहन्ना ४ : ९)।

९. यीशु मसीह क्रूस पर मरा। यह बहुत ही कठोर मृत्यु थी। इसमें शारीरिक पीड़ा तो थी ही, किन्तु मसीह के लिये इसको और भी अधिक पीड़ाजनक बनाने के लिये उसको दो डाकुओं के मध्य में क्रूस पर चढ़ाया गया। यद्यपि उसका अपराध इस से और अधिक कुछ न था कि वह स्वयं का अपराधी था।(पढ़िये मत्ती २७)। "और विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें; जिसने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न कर के, क्रूस का दुःख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दहिने जा बैठा।" (इब्रानियों १२ :२)।

१०. यीशु मसीह पुरानी व्यवस्था को हटाने के लिए मरा। "और विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर, और हमारे विरोध में था मिटा डाला; और उसको क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया।" (कुलुस्सियों २ : १४)।

११. यीशु मसीह एक नई विधि अथवा नियम देने के लिये मरा। (मत्ती २६ : २८)। "नई वाचा के स्थापन से उसने प्रथम वाचा को पुरानी ठहराई, और जो वस्तु पुरानी और जीर्ण हो जाती है उसका मिट जाना अनिवार्य है।" (इब्रानियों ८ : १३)।

१२. यीशु मसीह कलीसिया के लिए मरा। "हे पतियो, अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आपको उसके लिए दे दिया।" (इफिसियों ५ : २५)।

१३. यीशु मसीह इसलिए मरा ताकि हमें आशा हो। "और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आपको वैसा ही पवित्र करता है, जैसा वह पवित्र है।" (१ यूहन्ना ३ : ३)।

१४. यीशु मसीह मरा, परन्तु गाड़े जाने के पश्चात् वह जी उठा और तब स्वर्ग में अपने पिता के पास चला गया। (मत्ती २८ :६; प्रेरितों १ : १०)। इसलिए मसीह ने समस्त मनुष्य जाति को एक

पुनरुत्थान का विश्वास दिलाया। (१ कुरिन्थियों १५)। सत्य ही मसीह में विजय है। (१ यूहन्ना ५ : ४, ५)।

सो ये कुछ कारण हैं जिनसे हम देखते हैं कि मसीह क्यों मरा। जैसे कि आप देख सकते हैं, वह केवल इसलिए नहीं मरा कि उसे मरना था। इसके विपरीत वह एक उद्देश्य के लिये मरा। वह आपके लिये और मेरे लिये मरा। वह समस्त मनुष्य जाति के लिये मरा। वह इसलिए मरा ताकि हम नाश न हों परन्तु अनन्त जीवन पाएं। वह इसलिये मरा ताकि हमारा जीवन एक उत्तम जीवन हो सके। विशेषकर वह इसलिए मरा ताकि हम सदा के लिए उद्धार पाएं।

प्रभु ने अपना प्रेम आपके लिये अपने प्राण देकर दिखाया ताकि आप जीवन पाएं। अब यह आप पर निर्भर करता है कि आप उसे प्रेम करें और उसकी आज्ञा मानें। मसीह ने कहा, "यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।" (यूहन्ना १४ : १५)।

क्या आपने कभी मसीह की कलीसिया के बारे में सुना है ?

संसार में अनेकों लोगों से मसीह की कलीसिया के बारे में बातें करने से पता चलता है, कि बहुतेरे लोगों ने इसके विषय में कभी नहीं सुना। क्या आपने कभी सुना है ? कदाचित् यह हो सकता है। मैं आपसे पूछना चाहता हूं, क्या आपने कभी मसीह की कलीसिया के बारे में सुना है ? यदि नहीं, तो मैं आपसे पूछता हूं, जैसे कि मैंने अन्य लोगों से पूछा हैं। **कि क्यों नहीं** ? क्या आपके पास बाइबल नहीं है? बाइबल में आप कौन-सी कलीसिया के बारे में पढ़ते हैं? यदि आप फिर से पढ़ेंगे तो आप देखेंगे कि उस में केवल एक ही कलीसिया का वर्णन हुआ है, और वह है मसीह की कलीसिया। तब ऐसा क्यों है कि आपने इस कलीसिया के बारे में कभी नहीं सुना ? क्यों नहीं अन्य लोग इसके बारे में जानते ? अनेकों लोगों के पास, और कदाचित् आपके पास भी, वर्षों से बाइबल विद्यमान् है, अनेकों स्थानों पर विभिन्न लोग किसी न किसी कलीसिया के सदस्य हैं, परन्तु प्रभु की कलीसिया का महत्त्व उनके निकट क्या है ?

मसीह की कलीसिया संसार में अनेकों स्थानों पर विद्यमान् है। यह प्रत्येक स्थान पर तो विद्यमान् नहीं है, परन्तु इसकी स्थापना हर एक उस स्थान पर हो सकती है जहां पर इस प्रकार के लोग विद्यमान् हैं जो बाइबल, व केवल बाइबल का ही अनुसरण करें। यह कलीसिया कोई सम्प्रदाय नहीं है, यह एक पंथ अथवा मनुष्यों का बनाया हुआ

कोई संगठन नहीं है। न तो यह कैथलिक है, न प्रोटेस्टैन्ट और न यहूदी। तब यह क्या है ? यह केवल एक कलीसिया है जैसे कि बाइबल बताती है, और यह उन सब लोगों से मिलकर बनी हुई एक मन्डली है जो प्रभु की आज्ञाओं को मानते हैं और उसके प्रति विश्वासी बने रहते हैं।

मसीह स्वयं इस कलीसिया का बनानेवाला है। पढ़िए व स्वयं देखिए। मत्ती १६ : १८ में यीशु मसीह ने कहा, "और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा"

इसका आरम्भ यरूशलेम नगर में हुआ था। पढ़िए लूका २४ तथा प्रेरितों के काम २ अध्याय और आप स्वयं देखेंगे कि यह सत्य है। इसका आरम्भ लन्दन, या जर्मनी या अमेरिका में नहीं हुआ, परन्तु यरूशलेम में।

कलीसिया की स्थापना लगभग ३३ ई० स० में हुई थी। इसका अभिप्राय यह है कि कलीसिया लगभग २००० वर्ष पुरानी है। एक बार फिर से प्रेरितों २ अध्याय को पढ़कर कलीसिया के आरम्भ होने के विषय में देखिए, और इसी आधार पर समय का निश्चय किया जा सकता है।

क्योंकि मसीह इसका बनानेवाला है, इसलिये यह उसी के नाम से कहलाई। यह सच था एक कलीलिया के दृष्टिकोण से, "तुमको मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार।" (रोमियों १६ : १६)। और यही बात इसके सदस्यों के विषय में भी सच थी। हम पढ़ते हैं, "और चेले सबसे पहिले अन्ताकिया ही में मसीही कहलाए।" (प्रेरितों ११ : २६)। केवल बाइबल के द्वारा लोग केवल मसीही ही बनेंगे। इसे याद रखिए।

मसीह ने केवल एक ही कलीसिया की स्थापना की। इफिसियों ४ : ४ में इसे एक देह कहा गया है। कुलुस्सियों १ : १८ में लेखक

बताता है कि देह ही कलीसिया है। इसलिये केवल एक कलीसिया।

मसीह कलीसिया का सिर है। "क्योंकि पति-पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है; और आप ही देह का उद्धार-कर्त्ता है।" (इफिसियों ५ : २३)। प्रभु की कलीसिया का पृथ्वी पर न तो कोई सिर, अर्थात् प्रधान या संचालक, है और न ही पृथ्वी पर इसका कोई प्रधान कार्यालय है। सिर केवल मसीह है और वह स्वर्ग में परमेश्वर के दहिने हाथ विद्यमान् है।

मसीह कलीसिया का उद्धारकर्त्ता है। इसका उल्लेख इफिसियों ५ : २३ में भी हुआ है। तो फिर इसका अर्थ यह हुआ कि यदि कोई उद्धार पाना चाहे तो यह आवश्यक है कि वह कलीसिया का एक सदस्य हो।

मसीह कलीसिया के लिये मरा। (इफिसियों ५ : २५; प्रेरितों २० : २८)। उसके निकट कलीसिया का महत्व इतना बड़ा था। आप के निकट इसका महत्व क्या है ?

जो उद्धार पाते हैं वे इस में मिलाए जाते हैं (प्रेरितों २ : ४७)। और जिन लोगों का उद्धार हुआ है उन्हें मसीह केवल एक ही उचित कलीसिया में मिलाएगा, अर्थात् उसकी अपनी कलीसिया।

एक दिन वह अपनी कलीसिया के लिये वापस आ रहा है। (इफिसियों ५ : २७)। परन्तु यदि आप इसके एक सदस्य नहीं हैं और वह आ जाए तब क्या होगा ? इसके बारे में विचार करें।

प्रभु की कलीसिया अनेकों स्थानों पर विद्यमान् है, कदाचित् आप के नगर में ही हो। आप भी इसके एक सदस्य बन सकते हैं यदि आप प्रभु से इतना प्रेम रखें कि आप उसके वचन को पढ़ें व अध्ययन करें और उसकी शिक्षाओं को मानें। और यदि आप ऐसा करेंगे तो परि-णामस्वरूप आप परमेश्वर तथा उसके वचन, और उसके पुत्र, यीशु

मसीह में विश्वास करने लगेंगे (इब्रानियों ११ : ६; यूहन्ना १४:१-३; रोमियों १० : १७), और तब आप अपने सारे पापों से पश्चात्ताप करेंगे, अर्थात् अपना मन फ़िराएंगे (लूका १३ : ३; प्रेरितों १७:३०; प्रेरितों २ : ३८), आप मसीह को परमेश्वर का पुत्र मानकर उसका अंगीकार करेंगे (रोमियों १० : १०; मत्ती १० : ३२), और अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेंगे, अर्थात् जल के भीतर दफ़न होंगे, (प्रेरितों २ : ३८; मरकुस १६ : १६; रोमियों ६ : ३, ४; गलतियों ३ : २६, २७; १ पतरस ३ : २१)। और इसके फलस्वरूप प्रभु आपको अपनी कलीसिया में मिलाएगा (प्रेरितो २ : ४७), और आप केवल एक मसीही बनेंगे (१ पतरस ४ : १६)। इस प्रकार से आप अपने ही नगर या गांव में मसीह की कलीसिया के एक सदस्य बन जाएंगे और उस स्थान पर कलीसिया तब तक विद्यमान् रहेगी जब तक कि वहां पर ऐसे लोग होंगे जो प्रभु से प्रेम करते हैं, उसकी आज्ञाओं पर चलते हैं और उसके प्रति विश्वासी बने रहते हैं। किन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं होगा कि आप पृथ्वी पर की अनेकों कलीसियाओं में से किसी एक के सदस्य बन गए। न ही आप एक सम्प्रदाय का आरम्भ करेंगे, क्योंकि प्रभु की कलीसिया एक सम्प्रदाय नहीं है।

अब, यदि इस कलीसिया के बारे में आप और अधिक जानना चाहते हैं, तो अपनी बाइबल में से पढ़िए। हम आपको यह कहकर भी प्रोत्साहित करते हैं कि यदि सम्भव हो सके तो हम से मिलिए या इस विषय में हमारे यहां से उपलब्ध बाइबल के सरल पाठों का डाक द्वारा अध्ययन करिए।

"कलीसिया में, और यीशु मसीह में, उसकी महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन।" (इफिसियों ३:२१)।

मसीह की कलीसिया क्या है ?

संसार में आज अनेकों कलीसियाएं विद्यमान् हैं। कई तरह से उनमें बहुत समानता है। उन्हें मनुष्यों ने स्थापित किया है। उनका कोई विशेष महत्व नहीं है, क्योंकि उनके सदस्य भी यह मानते हैं कि उनका एक सदस्य हुए बिना भी मनुष्य स्वर्ग में पहुंच सकता है। यद्यपि वे बहुतेरे सम्प्रदायों में बटी हुई हैं परन्तु उन सबका एक ही कहना है कि सभी सम्प्रदाय अपने-अपने स्थान पर उचित हैं। वे विभिन्न प्रकार के नामों से कहलाती हैं और उन सबके पास अपनी-अपनी विशेष पुस्तकें हैं जिनके द्वारा वे अपनी उपासना इत्यादि करती हैं। परन्तु केवल एक ही कलीसिया है जो इन सभी संगठनों से बिल्कुल भिन्न है। उसका इनसे किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है। और वह है मसीह की कलीसिया।

मसीह की कलीसिया एक सम्प्रदाय नहीं है। यह बहु-साम्प्रदायिक नहीं है। यह कैथलिक नहीं है, तथा प्रोटस्टैन्ट अथवा यहूदी नहीं है। यह एक पंथ नहीं है। इसका आरम्भ किसी मनुष्य ने नहीं किया। कोई मनुष्य इसका सिर (प्रधान) नहीं है। पृथ्वी पर इसका कोई भी प्रधान-कार्यालय नहीं है। यह मनुष्य के नामों द्वारा नहीं कहलाती। यह किसी मनुष्य की लिखी हुई पुस्तक का अनुसरण नहीं करती। और न ही स्वभाव में यह राजनीतिक अथवा सामाजिक है। तब यह क्या ? यह क्या हो सकती है ? आईए, इस विषय में देखें।

कलीसिया शब्द को यूनानी भाषा के "एककलीसिया" शब्द से लिया गया है, और इसका अर्थ है "बुलाए हुए"। दूसरे शब्दों में, कलीसिया उन सब लोगों का एक झुंड है जो प्रभु की सेवा में संसार में से बुलाए गए हैं। पौलुस इस विषय में कहता है, कि वे लोग अंधकार

के वश से छुड़ाए जाकर परमेश्वर के राज्य अर्थात् प्रभु की कलीसिया में मिलाए गए हैं। (कुलुस्सियों १:१३,१४)।

कलीसिया के विषय में बाइबल दो भाव से बताती है। सबसे पहिले, इसका उल्लेख सार्वदेशिक भाव से हुआ है। यीशु मसीह ने इसी अभिप्राय से कहा था, कि "मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा" (मत्ती १६: १८)। इस स्थान पर उसका उद्देश्य कलीसिया के बारे में एक विशाल सार्वदेशिक मन्डली के रूप में बताने का था, यहां उसका अभिप्राय कलीसिया की स्थानीय मन्डलियों से नहीं था। दूसरी ओर कलीसिया का उल्लेख स्थानीय रूप से भी हुआ है, अर्थात् विभिन्न स्थानों पर कलीसिया की अनेकों मन्डलियां। इसके बारे में हम अनेकों स्थानों पर पढ़ते हैं, जैसे कि कलीसिया जो कुरिन्थुस में है, तथा थिस्सलुनीकियो की कलीसिया, इत्यादि। (१ कुरिन्थियों १:२; १ थिस्सलुनीकियों १:१)। फिर अनेकों मन्डलियों को विचार में रखकर, पौलुस ने कहा, "तुमको मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार।" (रोमियों १६:१६)। इसी दृष्टिकोण से प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में "आसिया की सात कलीसियाओं" का वर्णन हुआ है।

पृथ्वी पर कलीसिया मसीह की आत्मिक देह के रूप में विद्यमान् है। यह उन सब लोगों से मिलकर बनी हुई एक मन्डली है जिन्होंने उसकी आज्ञाओं को माना है तथा उसकी सेवा में लगे हुए हैं। इस देह में अंग तो बहुतेरे हैं परन्तु इसका केवल एक ही सिर है। (१ कुरिन्थियों १२; कुलुस्सियों १:१८)। देह केवल एक ही है। (इफिसियों ४:४)। और वही देह कलीसिया है। (इफिसियों १:२२,२३)।

यदि आप मनुष्यों द्वारा बनाई हुई कलीसियाओं के बारे में जानना चाहते हैं, तो अवश्य है कि आप इतिहास इत्यादि की पुस्तकों को पढ़ें। उनके विषय में जानने के लिये आप बाइबल में से नहीं पढ़ सकते क्योंकि प्रभु से उनका कोई सम्बन्ध नहीं है। इसके अतिरिक्त,

यदि आप मसीह की कलीसिया के बारे में जानने के इच्छुक हैं तो इसके बारे में आपको केवल बाइबल ही उचित जानकारी दे सकती है। बाइबल केवल कलीसिया के इतिहास तथा कलीसिया से सम्बन्धित हर एक अन्य बात के विषय में ही हमें नहीं बताती परन्तु पूर्ण रूप से कलीसिया की अगुवाई भी करती है। (२ तीमुथियुस ३ : १६, १७ ; याकूब १ : २५)।

इस कलीसिया को स्वयं मसीह ने स्थापित किया है (मत्ती १६:१८), यरूशलेम नगर में, ३३ ई० स० में। (प्रेरितों २)। इसका अर्थ तब यह हुआ कि कलीसिया न तो मेरी है, न आपकी और न किसी अन्य मनुष्य की। इसका आरम्भ इंगलैन्ड में नहीं हुआ और इसलिये यह इंगलैन्ड की कलीसिया नहीं है। यह अमेरिका से आरम्भ नहीं हुई और इस कारण यह एक अमेरिकन कलीसिया नहीं है। परन्तु इसका आरम्भ यरूशलेम नगर, एशिया में, हुआ था। न ही यह कोई नई व आधुनिक कलीसिया है क्योंकि इसकी स्थापना उन्नीस सौ वर्ष पूर्व हुई थी।

प्रेरितों के दिनों में केवल एक ही ऐसा मार्ग था जिसके फलस्वरूप लोग इस कलीसिया के सदस्य बनते थे और वह था यीशु मसीह के सुसमाचार को मानकर। वे जो सुसमाचार को सुनते थे (रोमियों १० : १७), उस पर विश्वास करते थे (इब्रानियों ११:६), अपने पापों से मन फिराते थे (प्रेरितों १७:३०), मसीह का अंगीकार करते थे (रोमियों १०:१०), और बपतिस्मा लेते थे (जल के भीतर दफ़न होते थे) अपने पापों की क्षमा के लिये (प्रेरितों २:३८), परिणामस्वरूप उनका उद्धार होता था और वे कलीसिया में मिला लिये जाते थे (प्रेरितों २:४७)। आज भी प्रभु ठीक यही करता है।

इसके सदस्य केवल मसीही कहलाते थे (प्रेरितों ११:२६; १ पतरस ४:१६), और वे सब मिलकर एक कलीसिया की नाईं मसीह

की कलीसिया या परमेश्वर की कलीसिया कहलाते थे। (रोमियों १६: १६; प्रेरितों २०:२८)। इसे मसीह की देह कहा गया है (१ कुरिन्थियों १२:२७), और क्योंकि देही ही कलीसिया है (कुलुस्सियों १:१८), इसलिये इसका अर्थ यह हुआ कि यहां भी लेखक का अभिप्राय मसीह की कलीसिया से था जो कि मसीह की आत्मिक देह है। मसीह का सम्मान यह उसके नाम को अपने ऊपर रखकर करती है। (प्रेरितों ४:१२)।

संसार में विभिन्न स्थानों पर पाई जानेवाली हजारों मन्डलियां मिलकर एक कलीसिया हैं। यद्यपि इन में से प्रत्येक मन्डली व्यक्तिगत रूप से एक दूसरे से स्वतन्त्र हैं तौभी वे सब आपसी प्रेम तथा उद्देश्य की एकता के कारण एक बन्ध में बन्धी हुई हैं। मसीह सिर है। (इफिसियों ५:२३)। जिन स्थानों पर मन्डलियां व्यक्तिगत संख्या में बड़ी तथा आत्मिक दृष्टिकोण से पुष्ट हैं, और उनमें योग्य पुरुष उपलब्ध हैं तो वहां उनमें अपने-अपने अध्यक्ष, सेवक तथा प्रचारक व शिक्षक इत्यादि होते हैं। (१ तीमुथियुस ३ : तीतुस १)।

प्रत्येक सप्ताह के पहिले दिन उपासना सभा की जाती है (प्रेरितों २०:७)। सदस्य अध्ययन करने के लिये (२ तीमुथियुस २:१५), प्रार्थना करने के लिये (१ थिस्सलुनीकियों ५:१७), भजन गाने के लिये (इफिसियों ५:१९), प्रभु-भोज में भाग लेने के लिये (१ कुरिन्थियों ११), तथा चन्दा देने के लिये (१ कुरिन्थियों १६:२), एकत्रित होते हैं।

परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग संसार से अलग होकर निष्कलंक तथा उसके प्रति भक्तिपूर्ण बने रहें। (इफिसियों ५:२७)। कलीसिया का उद्देश्य सारे संसार के लोगों को सुसमाचार प्रचार करना (मरकुस १६:१५,१६), तथा आवश्यकता से पीड़ित लोगों की सहायता करना

है। (याकूब १:२७)। वे जो अंत तक विश्वसी बने रहेंगे उन्हें जीवन का मुकुट प्राप्त होगा। (प्रकाशितवाक्य २:१०; मत्ती २५)।

यह मसीह की कलीसिया है—प्रभु की कलीसिया--यह एकमात्र वह कलीसिया है जिसके बारे में आप बाइबल में पढ़ सकते हैं। इसके विषय में और सीखिए, और इसके सदस्य बनिये। केवल तभी आप मसीह की कलीसिया के सदस्य होंगे।

नए नियम की कलीसिया

यदि हम कलीसिया के बारे में ठीक से जानना चाहते हैं तो इसके लिए हमें नए नियम की सहायता अवश्य लेनी चाहिए। यद्यपि इसका उल्लेख भविष्यद्धाणी में भी किया गया है। यशायाह २:२,३; दानिय्येल २:४४, तौभी इसके बारे में सच्चाई को जानने के लिये हमें प्रभु यीशु की शिक्षाओं को देखना आवश्यक है।

याद रखें कि हमारी इच्छा यह जानने की नहीं है कि कलीसिया के बारे में मनुष्य के क्या विचार हैं। परन्तु हम यह जानना चाहते हैं कि प्रभु का वचन क्या चाहता है। तो आइए देखें :

(१) मसीह ने कलीसिया को बनाया। उसने स्वयं ही कहा, "....और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा : और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।" (मत्ती १६:१८)। इस के ऊपर ध्यान दें कि उसने कहा कि मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा। इसलिए, इसका सम्बन्ध केवल उसी से है।

(२) कलीसिया का आरम्भ यरूशलेम में हुआ था। प्रभु यीशु ने प्रेरितों को आज्ञा देकर कहा था कि वे उस समय तक यरूशलेम में ही ठहरें जब तक उन्हें ऊपर से सामर्थ न प्राप्त हो जाए और तब "यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा।" (लूका २४:४६-४८)। यह कैसे पूरा हुआ इसका वर्णन हम प्रेरितों के काम २ अध्याय में पढ़ते हैं।

(३) इसका आरम्भ ईस्वी सन् ३३ में हुआ। कलीसिया की स्थापना प्रभु यीशु के पुनरूत्थान के पचास दिन पश्चात हुइ थी ;

अर्थात उसके जी उठने के बाद पहिले पिन्तेकुस्त के दिन। (प्रेरितों के काम २)।

(४) इसने प्रभु यीशु का नाम धारण किया, जो इसका संस्थापक है। जब पौलूस ने रोम की कलीसिया को लिखा, उसने साथ ही प्रभु की कलीसिया की और भी बहुत सी मंडलियों की ओर से अभिवादन भेजा। सो उसने कहा, "तुमको मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार।" (रोमियो १६ : १६)। १ कुरिन्थियों १२:२७ में वह मसीह की देह के लिए कहता है, जो मसीह की कलीसिया है। (कुलुस्सियों १ : १८)। जब कि मसीह ने इसको बनाया है तो स्वाभाविक ही है कि यह मसीह की कलीसिया है। यदि यह मसीह की कलीसिया है तो यह कैसे सम्भव हो सकता है कि यह कुछ और हो ?

(५) इसके सदस्य केवल मसीही ही थे। प्रेरितों ११ : २६ में हम पढ़ते हैं कि वे सबसे पहले अन्ताकिया में मसीही कहलाए। हम जानते हैं कि यह ईश्वरीय इच्छा के अनुसार था क्योंकि बाद में पतरस कहता है कि मसीही नाम के द्वारा ही मसीह महिमान्वित होगा। (१ पतरस ४ : १६)।

(६) मसीह ने कलीसिया से इतना प्रेम किया कि उसने इसके कारण मृत्यु भी सही। "हे पतियों, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया।" (इफ़िसियों ५ : २५)।

(७) मसीह ने इसको अपने लोहु से मोल लिया है। पौलूस ने इफिसुस की कलीसिया के अध्यक्षों से बोलते हुए कहा, "इसलिए अपनी और पूरे झुण्ड की चौकसी करो ; जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है ; कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लोहु से मोल लिया है।" (प्रेरितों २०:२८)।

(८) कलीसिया केवल एक ही है। परमेश्वर का वचन कहता है, "एक ही देह है" (इफिसियों ४ : ४), और देह ही कलीसिया है। (इफिसियों १ : २२, २३ ; कुलुस्सियों १ : १८)। तो जब कि एक ही देह है, और देह कलीसिया है, तब फिर एक ही कलीसिया है।

(९) मसीह इसका सिर है। 'और वही देह, अर्थात कलीसिया का सिर है ; वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठनेवालों में पहिलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे।" (कुलुस्सियों १:१८)। उसने इसमें अपना सहभागी किसी मनुष्य को नहीं बनाया।

(१०) मसीह कलीसिया का उद्धारकर्त्ता है। हम पढ़ते हैं, "क्योंकि पति पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है ; और आप ही देह का उद्धारकर्त्ता है।" (इफिसियों ५ : २३)।

(११) जिन लोगों का उद्धार होता है उन्हें प्रभु अपनी कलीसिया में मिला लेता है। बाइबल हमें बतलाती है कि उद्धार पाने के लिए मनुष्यों को विश्वास करना और बपतिस्मा लेना चाहिए। (मरकुस १६ : १६)। पौलूस कहना है कि विश्वास और बपतिस्मे ही के द्वारा हम मसीह और कलीसिया में सम्मिलित होते हैं। (गलतियों ३ : २६, २७ ; १ कुरिन्थियों १२ : १३)। एक और तरह से हम इसको यूं कह सकते हैं, कि पिन्तेकुस्त के दिन जब लोगों ने पश्चाताप किया और अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लिया, तो "जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।" (प्रेरितों २ : ४७)।

(१२) मसीह अपनी कलीसिया या दुलहिन के लिए एक दिन वापस आएगा। ताकि, "उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिसमें न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो, बरन पवित्र और निर्दोष हो।" (इफिसियों ५ : २७)। इस बात का

ध्यान रहे कि उसकी केवल एक ही कलीसिया या दुलहिन है, और उसने उसका नाम अपने ऊपर धारण किया है और वह केवल उसी के लिए आएगा।

क्या आप उस कलीसिया के सदस्य हैं जिसके विषय में आप नए नियम में पढ़ते हैं ? यदि नहीं, तो आप यह कैसे कह सकते हैं कि आप मसीह की कलीसिया के एक सदस्य हैं ? इन बातों के बारे में विचार कीजिए और मसीह की कलीसिया में आइये।

मसीह की कलीसिया भारत में कब तक रहेगी ?

अकसर यह प्रश्न पूछा जाता है : "मसीह की कलीसिया भारत में कब तक रहेगी ?" यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका उत्तर भारतीय लोग ही दे सकते हैं। दूसरे शब्दों में, यह सम्भव है कि कलीसिया यहां पर सदैव बनी रहे यदि इस देश में इस प्रकार के लोग विद्यमान् रहें जो प्रभु से इतना प्रेम रखें कि उसकी आज्ञाओं को मानें और उसके प्रति विश्वासी बने रहें। परन्तु यदि इस प्रकार के लोग न हों तो इस भूमि पर कलीसिया अधिक समय तक न रह सकेगी। यही एक साधारण उत्तर है।

इस से कोई अंतर नहीं पड़ता चाहे यहां अन्य देशों के लोग विद्यमान् हों या न हो। इस से कोई अन्तर नहीं पड़ता चाहे कोई बाहरी सहायता यहां पर आ रही हों या नहीं। इस से भी कोई अन्तर नहीं पड़ता चाहे कलीसिया के पास सभा-घर हों या न हों। और न ही अनेकों अन्य बातों से कुछ विशेष अन्तर पड़ता है। जिस बात से अन्तर पड़ता है वह यह है कि यहां के लोग वही होना व बनना चाहते हैं जिसकी आज्ञा प्रभु उन से करता है।

यह बात केवल इसी देश के लिये नहीं परन्तु प्रत्येक देश के विषय में भी सच है। प्रभु की कलीसिया केवल उन्हीं स्थानों पर विद्यमान् हो सकती जहां पर ऐसे लोग हों जो उसकी माने तथा उसकी सेवा करें। परन्तु जिस स्थान पर ऐसे लोग न हों वहां कलीसिया नहीं हो सकती।

अकसर देखने में आता है कि यहां लोग मसीह की कलीसिया के सदस्य बनने से कुछ हिचकिचाते हैं वे सोचते हैं, कि वे कहीं किसी सेऐ

संगठन में न मिल जाएं जो आज यहां है और कल समाप्त हो जाए। परन्तु आपको किसी प्रकार का भय नहीं होना चाहिए, एक बार जब कोई प्रभु के परिवार में जन्म ले लेता है तब वह उसका सदस्य सदा के लिये बन जाता है। वह व्यक्ति जो किसी एक स्थान पर कार्य का आरम्भ करने आया हो कदाचित् कुछ समय पश्चात् उस स्थान को छोड़कर चला जाए, परन्तु जैसे कि वह मसीहियत को आपके पास से नहीं ले जा सकता वैसे ही कलीसिया को भी वह अपने साथ नहीं ले जा सकता। आपको सीखने की आवश्यकता होगी कि आप किस प्रकार से उसके बिना कलीसिया के अन्य सदस्यों के साथ मिलकर, उस स्थान पर, कार्य को सम्भालेंगे।

कदाचित् यह जानकर आपको कुछ ढ़ाढ़स मिले कि मसीह की कलीसिया न केवल दिल्ली में ही विद्यमान् है, परन्तु इसके अतिरिक्त कलीसिया बम्बई, बैंगलोर, शिलाँग, मद्रास, आन्ध्र तथा भारत के अनेकों अन्य नगरों व गावों में भी विद्यमान् है। केवल इसलिये कि यह पूरे भारत में प्रत्येक स्थान पर नही है, इसका अभिप्राय यह कदापि नहीं है कि यह अन्य स्थानों पर विद्यमान् नहीं हो सकती या नहीं होगी। इसके अतिरिक्त प्रतीत होता है, कि कलीसिया देश भर में शीघ्रता से फैल रही है। यह इस बात का संकेत है कि कलीसिया यहां है और रहेगी।

मसीह की कलीसिया एक नई कलीसिया नहीं है यद्यपि भारत में इसका आरम्म कुछ ही समय पूर्व हुआ था। परन्तु वास्तव में, मसीह के सुसमाचार का प्रचार, तथा प्रभु की कलीसिया का आरम्भ इस देश में सर्व प्रथम प्रेरित थोमा के द्वारा किया गया था, यदि इस विषय में लौकिक इतिहास के दृष्टिकोण से देखा जाए। इसके अतिरिक्त, हम जानते हैं कि कुलुस्सियों १ : २३ में पौलुस ने लिखकर कहा, कि सुसमाचार का प्रचार आकाश के नीचे की सारी सृष्टि में किया जा चुका है, और

इस में भारत के लोग भी अवश्य ही सम्मिलित होंगे। अब मान लीजिए, उन दिनों में ऐसे लोग हों जिन्हों ने सुसमाचार को न केवल सुना ही हो, परन्तु उसे माना भी हो, तब वे क्या बने होंगे ? प्रेरितों २ : ४७ के अनुसार, इसके फलस्वरूप वे प्रभु की कलीसिया के सदस्य बने होंगे। तब उसका क्या हुआ ? जिस प्रकार से संसार के अनेकों अन्य भागों में हुआ ठीक वही यहां भारत में भी हुआ। कुछ समय पश्चात् धीरे-धीरे लोग सत्य से फिरने लगे और कलीसिया में बदलाव आने लगा और कुछ ही समय में वह इतनी बदल गई कि उस कलीसिया से बिल्कुल भिन्न हो गई जिसका वास्तव में आरम्भ हुआ था। तब इसका अर्थ यह हुआ कि पिछले कुछ वर्षों में भारत में प्रभु की कलीसिया का पुनः आरम्भ हुआ है जिस प्रकार से वह पहिले विद्यमान् थी।

फिर, याद रखिए कि मसीह की कलीसिया एक अमेरिकन कलीसिया नहीं है। इसका आरम्भ सर्वप्रथम अमेरिका में नहीं हुआ था। परन्तु, इसका आरम्भ यरूशलेम नगर, एशिया में लगभग २००० वर्ष पूर्व हुआ था। देखिए प्रेरितों २ अध्याय। तथा न ही यह एक साम्प्रदायिक कलीसिया है। इसका आदि सम्बन्ध मसीह से है, तथा किसी मनुष्य से नहीं (मत्ती १६:१८)।

बाइबल कलीसिया का पूरा आदर्श दर्शाती है। इसीलिये, जहां, कहीं भी इस आदर्श का अनुसरण किया जाता है वहां प्रभु की ही कलीसिया की स्थापना होती है। यह बात यहां, तथा संसार के प्रत्येक भाग के लिये सत्य है। परन्तु इस आदर्श को तनिक ध्यान से देखें :

१. हम पढ़ते हैं, कि कलीसिया को किस ने बनाया। (मत्ती १६ : १८)।

२. हम पढ़ते हैं कि इसकी स्थापना किस स्थान पर हुई थी। (प्रेरितों २)।

३. हम पढ़ते हैं कि इसकी स्थापना कब हुई थी। (प्रेरितों २)।

४. हम पढ़ते हैं कि यह किस नाम से कहलाई। (रोमियों १६: १६)।

५. हम पढ़ते हैं कि लोग किस तरह से इसके सदस्य बने। (मरकुस १६:१५,१६ ; प्रेरितों २:३८,४७)।

६. हम पढ़ते हैं कि इसकी उपासना क्या है। (प्रेरितों २०:७)।

७. हम पढ़ते हैं कि इसका सिर कौन है। (कुलुस्सियों १:१८)।

८. हम पढ़ते हैं कि कलीसिया एक है या अनेक। (इफिसियों ४: ४; इफिसियों १:२२,२३)।

हम कई और बातों के बारे में भी पढ़ते हैं। परन्तु यदि आपने इस आदर्श का पालन किया है तो आप मसीह की कलीसिया के सदस्य बने हैं, और आप संसार में जहां कहीं भी जाएं और वहाँ लोगों ने यदि इसी आदर्श को माना है तो आप पाएंगे कि आप उन्हीं की तरह हैं तथा वे आपकी तरह हैं—मसीह में एक—मसीह की एक देह, जो मसीह की कलीसिया है।

हम आपको इस कारण प्रोत्साहित करना चाहते हैं कि आप अपनी बाइबल को पढ़ें और जिन बातों का उल्लेख यहां हुआ है इनके प्रकाश में पवित्र शास्त्र में से ढूंढ़ें। यदि आप पाते हैं कि ये बातें सत्य हैं, तो इन्हें स्वीकार कीजिए। और यदि आप इन बातों को असत्य पाएं तो इन्हें अस्वीकार कर दें। परन्तु यदि आप सच्चाई तथा ईमानदारी से इन बातों के विषय में देखेंगे, तो निःसंदेह आप इस विषय में सच्चाई को देख सकेंगे। कोई भी आपको धोखा देने का प्रयत्न नहीं कर रहा है। हम आपकी केवल सहायता करना चाहते हैं। और इसका सबसे अच्छा उपाय यही है कि हम आपको स्वयं परमेश्वर के वचन की ओर ले जाएं।

सो यदि आप चाहते हैं कि प्रभु की कलीसिया भारत में बनी रहे, अर्थात् विद्यमान् रहे, तो प्रभु की आज्ञाओं को मानिए, उसके लिये विश्वासी बने रहें, और अन्य लोगों को भी इसी प्रकार से करने के लिये प्रोत्साहित कीजिए। आप, तथा आप ही की तरह अन्य लोगों के कारण, मसीह की कलीसिया सदा बनी रहेगी तथा उन्नति करेगी।

बाइबल के चार प्रश्न

बाइबल हमें स्पष्टता से बताती है कि केवल एक ही कलीसिया है। (इफीसियों ४:४ ; कुलुस्सियों १:१८)। किन्तु, तौभी संसार में आज अनेकों कलीसियाएं विद्यमान् हैं, सो प्रश्न उठता है कि इसका निश्चय कैसे किया जाए कि बाइबल की एक कलीसिया कौन सी है। अकसर यह देखने में आता है कि सारी कलीसियाएं कहती हैं कि वे परमेश्वर के वचन के अनुसार हैं। स्वाभाविक ही, जबकि केवल एक ही कलीसिया है, तो वे सब प्रभु की नहीं हो सकतीं। इस बात का निश्चय करने के लिये कि सच्ची कलीसिया कौन सी है, आपको केवल यही करना है कि आप चार सरल प्रश्नों पर विचार करें। यूं तो अनेकों प्रश्न पूछे जा सकते हैं, परन्तु इस बात का निश्चय करने के लिये कि कौन सी कलीसिया सच्ची है वा कौन सी बनावटी, केवल चार ही प्रश्न पर्याप्त हैं।

आईए, इन प्रश्नों को एक-एक करके पूछें और फिर इनके बारे में बाइबल के उत्तर देखें।

१. कलीसिया की स्थापना किसने की ? मेरे विचार में हम सब इस बात पर सहमति प्रगट करेंगे कि बाइबल स्पष्टता से बताती है कि मसीह ने कलीसिया की स्थापना की। जब यीशु मसीह का यह कहकर अंगीकार किया गया कि वह परमेश्वर का पुत्र है, तो उसने उत्तर के रूप में यूं कहा, "और मैं भी तुझ से कहता हूं, कि तू पतरस है ; और मैं इस पत्थर कर अपनी कलीसिया बनाऊंगा। और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।" (मत्ती १६ : १८)। अब जबकि मसीह ने कलीसिया को बनाने की प्रतिज्ञा की, तब क्या कलीसिया को मसीह ने नहीं बनाया ? निश्चय ही। फिर, आप देखेंगे

कि मसीह ने कलीसिया को बनाने की प्रतिज्ञा की थी, कलीसियाएं नहीं। तो उसने केवल एक को ही बनाया। और फिर उसके विषय में बोलते हुए उसने इस प्रकार से कहा, जो यह दर्शाता है कि इसका सम्बन्ध उसी से है। उसने कहा वह "मेरी कलीसिया" होगी। इसे याद रखें। क्योंकि यदि कलीसिया उसकी होगी तब इसका अर्थ यह हुआ कि वह आपकी नहीं है और न ही वह मेरी है।

२. इसकी स्थापना कहां हुई थी ? प्रेरितों २ अध्याय के अनुसार कलीसिया की स्थापना यरूशलेम में हुई थी। यह हम कैसे जानते हैं ? क्योंकि यीशु मसीह ने अपने प्रेरितों को आज्ञा देकर कहा था के वे उस समय तक यरूशलेम में ठहरे रहें जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पाएं (लूका २४:४९), और जब सामर्थ आई तो वे यरूशलेम में थे। (प्रेरितों २:१-४)। और केवल यही नहीं, परन्तु यशायाह भविष्य-द्वक्ता ने कहा था राज्य, अर्थात् कलीसिया का आरम्भ यरूशलेम से होगा। (यशायाह २:२,३)।

३. इसकी स्थापना कब हुई थी ? क्योंकि मसीह ने कलीसिया को यरूशलेम में स्थापित किया था, जैसे कि प्रेरितों २ अध्याय में मिलता है, इस कारण इसकी स्थापना का समय लगभग ३३ ई० स० था। इसका अर्थ यह हुआ, कि प्रभु की कलीसिया संसार में लगभग दो हज़ार वर्ष से विद्यमान् है।

४. यह किस नाम से कहलाई ? व्यक्तिगत रूप से इसके सदस्य मसीही कहलाते थे। (प्रेरितों ११:२६ ; प्रेरितों २६:२८ ; १ पतरस ४:१६)। और एक साथ मिलकर सब मसीही एक कलीसिया हैं। पवित्र शास्त्र में इसका वर्णन मसीह की देह कहकर हुआ है (१ कुरिन्थियों १२:२७), परन्तु देह कलीसिया है (कुलुस्सियों १:१८), और इसलिये इसका अभिप्राय मसीह की कलीसिया से है। कलीसिया की विभिन्न मन्डलियां पौलुस के दिनों में, मसीह की कलीसियाएं कहलाती थीं।

(रोमियों १६:१६)। यदि मसीह ने कलीसिया को स्थापित किया तो यह स्वाभाविक ही है कि उसका नाम इस पर हो। और यदि यह मसीह की नहीं है तब यह किस की कलीसिया हो सकती है? क्या यह कलीसिया मसीह की हो सकती यदि यह उसका नाम भी अपने ऊपर न रखे? वास्तव में नहीं।

ये हैं चार साधारण प्रश्न तथा उनके बाइबलानुसार उत्तर। यदि आप किसी कलीसिया के विषय में इस सच्चाई को जानना चाहते हैं, कि वह वास्तव में मसीह की कलीसिया है या नहीं, तो इन चार प्रश्नों को उसके बारे में पूछकर उत्तर जानिए। कोई भी कलीसिया यह कह सकती है कि वह मसीह की कलीसिया है, परन्तु यदि उसकी स्थापना किसी मनुष्य द्वारा हुई थी तो वह प्रभु की कदापि नहीं हो सकती। यदि उसकी स्थापना लन्दन में या अमेरिका में किसी स्थान पर, या संसार के किसी अन्य स्थान पर (यरूशलेम के अतिरिक्त) हुई थी तो वह कैसे मसीह की कलीसिया हो सकती है? यदि उसकी स्थापना अभी पिछले कुछ ही सौ वर्षों में हुई है तब वह एक नई कलीसिया है। और फिर, यदि वह मनुष्य के बनाए हुए किसी नाम से कहलाती है तो वह केवल एक साम्प्रदायिक कलीसिया है। सो आप देख सकते हैं कि यह एक ऐसा उपाय है जिस से आप किसी भी कलीसिया के बारे में यह निश्चित रूप से जान सकते हैं कि वह परमेश्वर की है या मनुष्य की है। यह विधि सदैव सफ़ल सिद्ध होती है।

यदि आप एक ऐसी कलीसिया को पाते हैं जो एक के अतिरिक्त बाकी सभी दृष्टिकोणों से बाइबलानुसार हो तो फिर भी वह प्रभु की कलीसिया नहीं हो सकती। यदि वह वास्तव में बाइबल की एक कलीसिया है तो वह सब बातों में बाइबल के अनुसार होगी।

मेरे मित्र, क्या आप मसीह की कलीसिया के एक सदस्य हैं? इन चारों प्रश्नों कों पूछकर स्वयं देखें। और यदि आप ऐसा करते हैं, और

तब आप पाते हैं कि आप एक साम्प्रदायिक संगठन में हैं, तो मैं आपसे निवेदन करूंगा कि आप अपनी बाइबल का अध्ययन करें और प्रभु की आज्ञाओं को मानें। और किसी बात की चिन्ता न कीजिए—यदि आप बाइबल की शिक्षानुसार करेंगे तो प्रभु आपका उद्धार करेगा तथा आपको अपनी कलीसिया में मिला लेगा, और वह कभी भी गलती से आपको किसी दूसरी कलीसिया में नहीं मिलाएगा। वह अपनी कलीसिया को जानता है और आपको उसी में मिलाएगा (प्रेरितों २:४७)। तब आप उस कलीसिया के सदस्य होंगे जिसके बारे में आप स्वयं बाइबल में पढ़ सकते हैं फिर आपको लोगों को तरह-तरह के कारण नहीं बताने पड़ेंगे कि आप इस कलीसिया में या उस कलीसिया में क्यों हैं, क्योंकि प्रभु की केवल एक ही कलीसिया है और आप केवल उसी के सदस्य होंगे।

अपने नगर या गांव में मसीह की कलीसिया का आरम्भ आप कैसे कर सकते हैं

कदाचित् आप किसी ऐसे नगर या गांव में रहते हों जहां पर मसीह की कलीसिया वर्तमान न हो। सम्भवतः वहां पर साम्प्रदायिक कलीसियाएं अथवा मनुष्य द्वारा बनाई हुई कलीसियाएं हों, परन्तु अभी तक प्रभु की कलीसिया की स्थापना न हुई हो। सो, आप इस उलझन में हों कि आपको क्या करना चाहिए। क्या आपको वहां पर विद्यमान् कलीसियाओं में से किसी एक का सदस्य बन जाना चाहिए ? क्या आपको इसी स्थिति में रहना चाहिए जिसमें आप हैं ? क्या आप को किसी ऐसे स्थान में चले जाने का प्रयत्न करना चाहिए जहां पर मसीह की कलीसिया वर्तमान हो ? यह प्रश्न महत्वपूर्ण है और कदाचित् इनके उत्तर सहज ही न मिल पाएं।

मैं आपको कुछ सुझाव देना चाहता हूं। आपके लिए यह सम्भव है कि आप मसीह की कलीसिया के एक सदस्य बन जाएं और यह कि अपने नगर या गांव में या जहां कहीं भी आप हों प्रभु की कलीसिया की मन्डली की अगुवाई आरम्भ में आप स्वयं ही करें। इस विषय में निम्नलिखित सुझाव आपके लिए हैं।

(१) अपने लिए एक बाइबल लीजिए। यदि आप परमेश्वर की इच्छा के अनुसार चलना चाहते हैं तो आपको एक बाइबल की आवश्यक्ता है और संसार भर में हर जगह बाइबल उपलब्ध है। जब आप इसकी एक प्रति प्राप्त करलें, तब इसे पढ़ना आरम्भ करें व इसका

अध्ययन करें। नये नियम के ऊपर विशेष ध्यान दें क्योंकि इसमें यीशु मसीह की व्यवस्था है जो कि आज के लोगों के लिए है। ऐसा करने से आपको यह ज्ञात होगा कि उद्धार पाने के लिए क्या करना चाहिए, प्रभु की कलीसिया के सदस्य कैसे बन सकते हैं, उपासना कैसे करनी चाहिए, व मसीही जीवन किस प्रकार का होना चाहिए, इत्यादि।

(२) स्वयं ही सत्य का पालन करें। प्रभु की शिक्षानुसार यदि आप उसके ऊपर विश्वास करेंगे, अपने पापों से पश्चात्ताप करेंगे, मसीह को मनुष्यों के सामने मान लेंगे व बपतिस्मा लेंगे (जल में गाड़े जाएंगे) तो आपका उद्धार होगा। (मरकुस १६ : १६; मत्ती १० : ३२ प्रेरितों २ : ३८)। प्रेरितों के समय में लोगों के मन यीशु मसीह की ओर कैसे फिरे यह जानने के लिए बाइबल में 'प्रेरितों के काम' की पुस्तक को पढ़िये। जब आप प्रभु की आज्ञा मानने के लिए तैयार हो जाएं तो किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढ़े जो आपको पवित्र शास्त्र के अनुसार बपतिस्मा दे सके। उसके साथ किसी ऐसे जल के स्थान में जाईये जहां पर वह आप को, आपके पापों की क्षमा के लिए, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से जल में गाड़ सके। अब, बपतिस्मा लेने के बाद आप मसीह की कलीसिया के सदस्य बन जाते हैं, क्योंकि जो उद्धार पाते हैं उन्हें प्रभु अपनी कलीसिया में मिला लेता है। (प्रेरितों २ : ४७)। याद रखिए, अब आप केवल एक मसीही हैं। (प्रेरितों ११ : २६)।

३. अब आप अपने ही घर में उपासना सभा करना आरम्भ कर दें। आप अपने परिवार के सदस्यों को व अपने उन मित्रों को जो इच्छुक हों इन उपासना सभाओं में उपस्थित होने के लिए प्रोत्साहित करें। यह सभा प्रत्येक रविवार के दिन होनी चाहिए, अर्थात सप्ताह के पहिले दिन। (२ तीमुथियुस २ : १५)। इस सभा को परमेश्वर के ग्रहण योग्य होने के लिए यह अवश्य है कि सभा का कुछ समय बाइबल अध्ययन में लगाया जाए। सभा में प्रार्थना होनी चाहिए (प्रेरितों २ :

४२), भजन व गीत होने चाहियें (इफिसियों ५ : १९), भजन व स्तुति-गान गाते समय किसी प्रकार के भी वाद्य-संगीत का उपयोग नहीं करना चाहिये। प्रभु भोज में भाग लेना चाहिए·····रोटी में इसलिए क्योंकि वह मसीह की देह की प्रतीक है और कटोरे में इसलिए क्योंकि वह उसके लोहू का प्रतीक है। (मत्ती २६:२६-२८; १ कुरिन्थियों ११)। प्रभु ने कहा कि प्रभु-भोज में दाखरस (अंगूर का रस) उपयोग करना चाहिए। यदि बाज़ार में आपको यह न मिल सके तो आप कुछ मुनक्के या किशमिश लेकर, उन्हें उबाल लें, उनमें से रस निकालकर उसका उपयोग करें? और फिर, एक चन्दा होना चाहिए ताकि आप अपने धन में से अपनी आमदनी के अनुसार दें। (१ कुरिन्थियों १६:२)। इस धन को बहुत ईमानदारी के साथ रखना चाहिये व इसका उपयोग निर्धन लोगों की सहायता करने में और यीशु मसीह का सुसमाचार फैलाने में करना चाहिये। उपासना करने के ये नियम हर सप्ताह के पहिले दिन व्यवहार में लाए जाने चाहियें, अर्थात् हर एक रविवार को। (प्रेरितों २०:७)।

(४) अब आप केवल अपने घर में ही रविवारीय सभाएं न करें, परन्तु यह प्रयत्न करें कि नगर या गांव के अन्य भागों में भी आप सभाओं का प्रबन्ध कर सकें। वहां पर आप उस समय तक केवल प्रचार सभाएं ही करें जब तक कि वहां पर कुछ लोग परमेश्वर की आज्ञा मानने को तैयार न हो जाएं और जब वे लोग कलीसिया के सदस्य बन जाएं तो उपासना सभाएं (जैसा कि पूर्व उल्लेख किया गया है) की जा सकती हैं। परन्तु लोगों को आप यह अवश्य बताएं कि उन्हें उद्धार पाने के लिए क्या करना चाहिए और यह कि वे उस "मसीह की कलीसिया" के सदस्य बन सकते हैं जिस के बारे में हम नए नियम में पढ़ते हैं, और उन्हें हर सप्ताह के पहिले दिन परमेश्वर की उपासना करनी चाहिये, व उन्हें मसीही जीवन बिताना चाहिये। यदि आप ऐसा करेंगे तो परमेश्वर आपके कामों पर आशीष देगा।

(५) प्रभु की उपासना करने में, प्रचार करने में व अपने जीवन में प्रभु के लिये ईमानदार बने रहें। प्रभु का वचन फैलाने में किसी प्रकार की भी कमी न करें। याद रखें कि आप एक मसीह बन सकते हैं। परन्तु यह तभी हो सकता है जब आप प्रभु की आज्ञाओं का पालन करेंगे।

यदि इस विषय में आप हमसे कोई सहायता लेना चाहते हैं तो अवश्य ही हमारे पते पर लिखकर हमसे सम्पर्क स्थापित करें।

मसीह का नाम

यदि कोई नए नियम को ध्यान से पढ़े तो वह यह देखकर चकित होगा कि अनेकों स्थानों पर मसीह के नाम का उल्लेख हुआ है। मनुष्य बहुधा तर्क करके कहता है कि नाम का कोई महत्त्व नहीं है, या नाम में कुछ नहीं है। कुछ अन्य नामों के विषय में कदाचित् यह सत्य हो, परन्तु प्रभु के नाम के विषय में यह बात निश्चय ही असत्य है। निम्नलिखित पर ध्यान दें।

(१) परमेश्वर के लोगों को एक नया नाम दिया जानेवाला था। (यशायाह ६२:२)। जब हम नए नियम में से देखते हैं तो हम पढ़ते हैं कि कलीसिया मसीह के नाम से कहलाई (रोमियों १६:१६; १ कुरिन्थियों १२:१३), और उसके सदस्य व्यक्तिगत रूप से मसीही कहलाए। (प्रेरितों ११:२६)। यह नया नाम था।

(२) पारिवारिक नाम मसीह का नाम है। पौलुस ने इसी बात को इफिसियों ३:१४,१५ में यूं कहा, "मैं इसी कारण उस पिता के सामने घुटने टेकता हूं, जिस से स्वर्ग और पृथ्वी पर, हर एक घराने का नाम रखा जाता है।"

(३) कलीसिया का उल्लेख मसीह की दुल्हिन कहकर हुआ है और इस कारण उसकी दुल्हिन उसके नाम से कहलाती है। (प्रकाशित वाक्य २१:९; २२:१७)। मसीह की केवल एक ही दुल्हिन है और जब वह वापस आएगा तो वह केवल उसी एक को स्वीकार करेगा जो उसके नाम को अपने ऊपर रखती है। (इफिसियों ५:२७)।

(४) उसका नाम सब नामों से श्रेष्ठ है। "इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान् भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब

नामों में श्रेष्ठ है। कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे हैं ; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।" (फिलिप्पियों २:९-११)।

(५) उद्धार मसीह के नाम में है। "और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं ; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।" (प्रेरितों ४:१२)।

(६) मनुष्य को मसीह के नाम में विश्वास करना है। "मैंने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिये लिखा है, कि तुम जानो, कि अनन्त जीवन तुम्हारा है।" (१ यूहन्ना ५:१३)।

(७) मनुष्य को मसीह के नाम का अंगीकार करना हैं।"..... और जो कोई प्रभु का नाम लेता है, वह अधर्म से बचा रहे।" (२ तीमुथियुस २:१९)।

(८) मनुष्य को पापों से मन फिराकर यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लेना है। "पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले ; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।" (प्रेरितों २:३८)।

(९) उन्हें प्रभु के नाम में उसकी उपासना करने के लिये इकट्ठा होना है। यीशु ने कहा, "क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं, वहां मैं उनके बीच में होता हूं।" (मत्ती १८:२०)।

नोट : आप कैसे मसीह के नाम पर इकट्ठा हो सकते हैं यदि आप उसके नाम को भी अपने ऊपर नहीं रखते ?

(१०) हमें सब कुछ प्रभु के नाम से करना है। "और वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो।" (कुलुस्सियों ३:१७)।

(११) मसीह के नाम के कारण धार्मिकता से बैर किया जाएगा। "मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे, पर जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा उसी का का उद्धार होगा।" (मत्ती १०:२२)।

(१२) मनुष्य को मसीह के नाम से प्रार्थना करनी चाहिए। "और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वही मैं करूंगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो।" (यूहन्ना १४:१३)।

(१३) पापों की क्षमा मसीह के नाम के द्वारा प्राप्त होती है। "हे बालको, मैं तुम्हें इसलिये लिखता हूं, कि उसके नाम से तुम्हारे पाप क्षमा हुए।" (१ यूहन्ना २:१२)।

(१४) मसीह के नाम की निन्दा नहीं करनी चाहिए। "क्या वे उस उत्तम नाम की निन्दा नहीं करते जिस के तुम कहलाए जाते हो।" (याकूब २:७)।

(१५) उसके नाम के कारण दुख उठाना है। "और तू धीरज धरता है, और मेरे नाम के लिये दुख उठाते-उठाते थका नहीं।" (प्रकाशितवाक्य २:३)।

(१६) मसीह के नाम से अनन्त जीवन मिलता है। "परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।" (यूहन्ना २०:३१)।

अब आप, वास्तव में, देख सकते हैं कि मसीह का नाम कितना महत्त्वपूर्ण है। और यदि यह सच है, तो आप यह भी देख सकते हैं

कि मेरे व आप के लिये व्यक्तिगत रूप से तथा कलीसिया के सदस्य होने के कारण यह कितना आवश्यक है कि हम मसीह के नाम को अपने ऊपर रखें। मैं मसीह की कलीसिया का एक सदस्य हूं, और इसलिये केवल एक मसीही हूं। आप क्या हैं ? क्या आप उस एक कलीसिया के सदस्य हैं जिसके बारे में आप बाइबल में पढ़ते हैं ? क्या आप एक मसीही हैं ? यदि नहीं, तो आप आज बन सकते हैं।

आप केवल एक मसीही बन सकते हैं

हम एक ऐसे संसार में रहते हैं जो धार्मिक दृष्टिकोण से बटा हुआ है। सैंकड़ों कलीसियाएं हैं और हज़ारों नाम हैं। इस सब से मसीह के कार्य को कोई लाभ नहीं हुआ हैं, परन्तु इसके अतिरिक्त इस से अधिकांश लोगों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है। सधारणत: लोग इस सब के कारण इतने खींज उठे हैं कि उनमें से बहुतेरे इस सीमा तक पहुंच गए हैं कि वे धर्म को ही छोड़ देना चाहते हैं। परन्तु क्या यह उचित उपाय है ? वास्तव में नहीं, क्योंकि इससे भी अच्छा कोई उपाय हो सकता है।

क्या आप जानते हैं कि आपके लिये यह सम्भव है कि आप केवल एक मसीही बन सकते हैं ? यह सच है। आप, और अन्य सब, यदि आप चाहें, एक मसीही और केवल एक मसीही बन सकते हैं। इसकी क्या आवश्यकता है कि आप लोगों के बनाए हुए विभिन्न नामों से कहलाएं, जबकि आप मसीह के नाम से कहलाए जा सकते हैं ? बाइबल आपको केवल एक मसीही ही बनाएगी।

नए नियम के समय में लोग केवल मसीही ही होते थे। उदाहरण के रूप से, हम पढ़ते हैं, "……और चेले सबसे पहिले अन्ताकिया ही में मसीही कहलाए।" (प्रेरितों ११:२६)। किस प्रकार के मसीही हमारे समय का एक विशेष प्रश्न होगा ? परन्तु उन दिनों में वे केवल मसीही ही कहलाते थे। फिर हम पढ़ते हैं, कि जब पौलुस, राजा अग्रिप्पा को प्रचार करता है, तो अग्रिप्पा उससे कहता है कि "तू थोड़े ही समझाने से मुझे मसीही बनाना चाहता है ?" (प्रेरितों २६:२८)। इस मनुष्य को यह कैसे मालूम था कि यदि शिक्षाओं को मानेगा तो ऐसा करने से वह एक मसीही बन जाएगा ? प्रत्यक्ष ही उसने अन्य लोगों को

इस प्रकार से मसीही बनते देखा होगा, या फिर उससे ऐसा विशेष रूप से कहा गया होगा। कुछ भी हो, परन्तु वह जानता था कि यदि वह मसीह की आज्ञाओं को मानेगा तो इस प्रकार से वह एक मसीही बन जाएगा। और फिर, पतरस लिखकर कहता है, "पर यदि मसीही होने के कारण दुख पाए, तो लज्जित न हो, पर इस बात के लिये परमेश्वर की महीमा करे।" (१ पतरस ४: १६)।

मसीही नाम का उल्लेख नए नियम में तीन स्थानों पर हुआ है और प्रत्येक स्थान पर यह स्पष्ट है कि इसका वर्णन उस व्यक्ति, या उन लोगों के लिये हुआ है जिन्होंने मसीह की आज्ञाओं को माना है या फिर यह दिखाया गया है कि जब कोई प्रभु की आज्ञा मानता है तो परिणाम स्वरूप वह एक मसीही बन जाता है। मसीही शब्द का अर्थ है मसीह के समान होना या मसीह का स्वभाव अपने भीतर रखना। कोई मनुष्य कैसे प्रभु की आज्ञाएं मान सकता है जबकि उसका नाम भी वह अपने ऊपर न रखे? कोई व्यक्ति कैसे मसीह के समान बन सकता है या उसके स्वभाव को अपने भीतर रख सकता है जबकि वह मसीह के नाम के अतिरिक्त किसी मनुष्य के बनाए हुए नाम को अपने ऊपर रखे या उससे कहलाए ? निःसंदेह यह असम्भव है।

यह सुनने में आता है कि लोग कहते हैं कि नाम में कुछ नहीं है परन्तु पवित्र शास्त्र हमें बताता है कि उद्धार मसीह के नाम में है। (प्रेरितों ४:१२)। इसके अतिरिक्त, किसी और नाम में उद्धार नहीं है। १ कुरिन्थियों के पहिले अध्याय में, हम देखते हैं कि कुरिन्थुस में कलीसिया के कुछ सदस्य आपस में फूट डालकर कहने लगे कि वे पौलुस, अपल्लोस, कैफ़ा तथा मसीह के हैं। पौलुस ने इस बात पर उनकी कोई प्रशंसा नहीं की, परन्तु इसके अतिरिक्त उसने इस बात के कारण उन की निन्दा की। उसने कहा, "हे भाइयो, मैं तुम से यीशु मसीह जो हमारा प्रभु है उसके नाम के द्वारा बिनती करता हूं, कि

तुम सब एक ही बात कहो ; और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो।" (१ कुरिन्थियों १:१०)। और फिर, उनके कार्य की मूर्खता को बताने के लिये, उस ने उन से पूछा "क्या मनीह बट गया ? क्या पौलुस तुम्हारे लिये क्रूस पर चढ़ाया गया ? या तुम्हें पौलुस के नाम पर बपतिस्मा मिला ?" (१ कुरिन्थियों १:१३)। वास्तव में वे जानते थे कि मसीह केवल एक है, और केवल वही उनके लिये क्रूस पर चढ़ाया गया था, और उन सब ने प्रभु के नाम से बपतिस्मा लिया था। इसलिये, परिणाम स्वरूप यह आवश्यक था कि वे मनुष्यों के नामों के अतिरिक्त केवल मसीह के ही नाम से कहलाएं। और आज भी इसी एक बात की बड़ी आवश्यकता है।

यदि आप ऐसे नामों इत्यादि से कहलाते हैं जिनका वर्णन हमें बाइबल में नहीं मिलता, तब आप वास्तव में बाइबल के अनुसार एक मसीह नहीं हैं। दूसरी ओर, आप कदाचित् किसी ऐसे नाम से कहलाते हों जिसका उल्लेख बाइबल में कहीं पर हुआ हो, परन्तु यदि प्रभु नहीं चाहता कि आप, अन्य लोग, किसी इस प्रकार के नाम से कहलाएं तो यह अनुचित है। यदि आपने मसीही नाम के साथ कुछ और जोड़ा है, चाहे उसके पहिले या बाद में, तो आप प्रभु के नाम का अनुचित उपयोग कर रहे हैं, और इसलिये आप एक मसीह नहीं हैं उस दृष्टिकोण से जैसा कि बाइबल सिखाती है। आप किसी एक विशेष प्रकार के मसीह होकर भी केवल एक मसीही नहीं हो सकते। या तो आप केवल एक मसीही हैं, या फिर आप एक मसीही नहीं हैं।

हम आप से यह कहना तथा निवेदन करना चाहते हैं कि आप अपनी बाइबल को पढ़ें, उसका अध्ययन करें, और फिर केवल वही करें जो बाइबल शिक्षा देती है। और यदि आप ऐसा करेंगे तो हम जानते हैं कि आप क्या होंगे—आप केवल एक मसीही होंगे—न इससे कुछ अधिक और न कम। क्या यह पर्याप्त नहीं होगा ? क्या आवश्यकता

है कि आप एक मसीही से कुछ कम हों या एक मसीही से कुछ अधिक हों जब कि आप केवल एक मसीही बन सकते हैं ?

यदि आप प्रभु का वचन सुनेंगे (रोमियों १०:१७), परमेश्वर में विश्वास करेंगे (इब्रानियों ११:६), अपने पापों से मन फिराएंगे (प्रेरितों १७:३०), मसीह का अंगीकार करेंगे (मत्ती १०:३२), और पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेंगे (प्रेरितों २:३८ ; मरकुस १६:१६), तो प्रभु आपका उद्धार करेगा और तब आप केवल एक मसीही बनेंगे। इसी आज्ञापालन के फलस्वरूप आप प्रभु की कलीसिया के एक सदस्य भी बन जाएंगे, वह एकमात्र कलीसिया जिसके बारे में आप बाइबल में पढ़ सकते हैं। (प्रेरितों २:४७ ; मत्ती १६:१८ ; रोमियों १६:१६)।

केवल एक मसीह, तथा मसीह की कलीसिया के एक सदस्य होने के परिणामस्वरूप आप इस बात के लिये निश्चित होंगे कि आप उचित मार्ग पर चल रहे हैं। तब आप सबको गर्व के साथ कह सकेंगे कि आप मसीह के नाम से कहलाते हैं और आप उसी की कलीसिया के एक सदस्य हैं। इसका अर्थ यह होगा कि आप किसी सम्प्रदाय में नहीं हैं, व आप मनुष्यों की शिक्षाओं का अनुसरण नहीं कर रहे हैं, परन्तु जिस नाम से आप कहलाते हैं, और जिस कलीसिया के आप सदस्य हैं, तथा धार्मिक दृष्टिकोण से आप जो कुछ भी करते हैं उस सब के लिये आप पवित्र शास्त्र में से प्रमाण दे सकते हैं। तब आप निश्चय ही प्रसन्न होंगे, तथा इस बात को जान सकेंगे कि पौलुस ने क्यों लिखकर कहा, "और वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो।" (कुलुस्सियों ३:१७)।

मसीही धर्म
आपके लिए क्या कर सकता है

मसीही धर्म ने संसार के लिये अन्य सभी से बढ़कर बहुत कुछ किया है। वे भी जिन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया है इस से प्रभावित हुए बिना नहीं रहे। मनुष्य चाहे कितना भी बुरा क्यों न हो, परन्तु वह जहां तक भी अच्छा है इसका कारण यह है क्योंकि इसका प्रभाव उसके ऊपर है। इसकी अपेक्षा, तनिक कल्पना करके देखें कि संसार किस प्रकार का होता यदि मसीही धर्म का परिचय इससे न हुआ होता। निःसन्देह, यह एक ऐसा भयंकर स्थान होता कि इसमें रहना कठिन हो जाता, यदि वास्तव में हम उस में रह रहे होते।

जब कि मसीह धर्म ने संसार में सब मनुष्यों के लिये बहुत कुछ किया है, तौभी इसका स्वभाव निजी तथा व्यक्तिगत है। सो यदि हम इस से पूर्ण रीति से लाभ उठाना चाहें तो हमें अवश्य ही इसे स्वीकार कर लेना चाहिए। यह केवल तभी हो सकता है जब हम इसके रचियता प्रभु मसीह का अनुसरण करना और उसकी शिक्षाओं को मानना आरम्भ कर दें। ऐसा करने से, इसके मूलतत्व अथवा सिद्धान्त हमारे जीवनों में प्रवेश करते हैं और वे हमारे जीवनों में आशिष तथा फल लाने के कारण सिद्ध होते हैं।

कुछ लोगों का विश्वास है कि यदि वे मसीही धर्म को मानसिक रीति से स्वीकार कर लें अथवा किसी धर्म संगठन से सम्पर्क स्थापित कर लें तो उन्हें असंख्य आशिषें और प्रतिफल प्राप्त होंगे। वे सोचते हैं कि ऐसा करने से वे बहुत धनवान हो जाएंगे, उनकी सारी समस्याएं तत्काल हल हो जाएंगी, और इसके बदले में उन्हें कुछ भी नहीं देना

होगा। इस प्रकार के विचार अक्सर वे लोग करते हैं जो केवल जीवन उपयोगी वस्तुओं की खोज में रहते हैं, उन्हें आत्मिक लाभ की कोई चिन्ता नहीं होती। यह इस प्रकार के लोग होते हैं जिन्हें सदैव निराश होना पड़ता है, क्योंकि जब उनके स्वप्न पूरे नहीं होते तब सहज ही वे किसी अन्य वस्तु की ओर झुक जाते हैं।

मसीही धर्म सरल है और इसमें उन लोगों के लिये अनेकों आशीषें हैं जो दाम चुकाने के लिये तैयार हैं। इसके दाम हैं, विश्वास, आज्ञा-पालन, सेवा, ईमानदारी और वफ़ादारी। जिन्होंने इसे अपने पूरे मन से स्वीकार किया है उन्हें भौतिक और आत्मिक दोनों प्रकार की आशीषें बहुतायत से मिली हैं। यह आपके लिए भी ऐसा कर सकता है।

१. मसीही धर्म आपको आपके पिछले पापों से मुक्ति दिला सकता है। वे सब जो यीशु मसीह की आज्ञाओं को मानते हैं उन्हें वह सदा काल का उद्धार देता है। (इब्रानियों ५:८,९)। उसने कहा, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६:१६)। मनुष्य पापी है और उसे क्षमा की आवश्यकता है। केवल यीशु मसीह ही यह कर सकता है, आत्मा की स्वच्छता और उसका शुद्धिकरण, यह मनुष्य की सबसे बड़ी सम्पति है। (लूका १९ : १० ; मत्ती १६ : २६)।

२. मसीही धर्म आपका सम्पर्क अनेकों ऐसी प्रतिज्ञाओं से कराता है जो परमेश्वर ने की हैं। उदाहरण के रूप से पवित्र आत्मा का दान (प्रेरितों २ : ३८), कलीसिया में मिलाया जाना (प्रेरितों २ : ४७)। प्रभु की संगति (मत्ती २८:२०), प्रार्थना करने का अधिकार (यूहन्ना ९ : ३१) और अनन्त जीवन की आशा (यूहन्ना १४ : १-३)।

३. मसीही धर्म आत्मिक और भौतिक दोनों ही तरह से आशीषित

करता है। यीशु मसीह ने शिक्षा देकर कहा "इसलिए पहिले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो यह सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।" (मत्ती ६ : ३३)। याद रखें, कि और सब वस्तुएं केवल तभी प्राप्त होंगी जब कि परमेश्वर के राज्य अर्थात् कलीसिया को प्रथम स्थान दिया जाएगा। बहुधा मसीही लोग ऐसा सोचते हैं कि वे और अधिक आशिषित क्यों नहीं हैं, परन्तु वे कभी रुककर यह नहीं सोचते कि प्रभु के लिए वे कितना थोड़ा करते हैं। पढ़िए मत्ती ५।

४. मसीही धर्म हमें भलाई करने का अवसर प्रदान करता है, "तुम एक दूसरे के भार उठाओं, और इस प्रकार से मसीह की व्यवस्था को पूरी करो।" (गलतियों ६ : १)। "इसलिए जहां तक अवसर मिले हम सबके साथ भलाई करें ; विशेष करके विश्वासी भाईयों के साथ।" (गलतियो ६ : १०)।

५. मसीही धर्म हमें शिक्षा देता है कि यदि हम अधिक देंगे तो अधिक ही पाएंगे भी। पौलुस ने कुरिन्थुस में मसीही भाइयों को उपदेश देते हुए कहा, "परन्तु बात तो यह है कि जो थोड़ा बोता है वह थोड़ा काटेगा भी ; और जो बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा।" (२ कुरिन्थियों ९ : ६)। और, "·····क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा।" (गलतियों ६ : ७)। बहुतेरे लोग कभी नहीं पाते क्योंकि वे कभी देते नहीं, और तब वे सोचते हैं ऐसा क्यों है।

६. मसीही धर्म यह सिखाता है कि लेने से देना धन्य है। यीशु मसीह ने स्वयं यही कहा। (प्रेरितों २० : ३५)। उसने यह भी कहा, "जो अपने प्राण बचाता है, वह उसे खोएगा, और जो मेरे कारण अपना प्राण खोता है, वह उसे पाएगा (मत्ती १०:३९)।

७. मसीही धर्म हमें जीवन का एक ऐसा मार्ग दिखाता है जो हमें इस संसार में आने वाले संसार की ओर ले जाता है। यीशु मसीह हमें यह शिक्षा देता है कि यदि कोई व्यक्ति चाहे कि दूसरे लोग उसके

साथ वही व्यवहार करें जैसा कि वह चाहता है तो उसे भी उन लोगों के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए (लूका ६ : ३१)। उसने कहा कि मनुष्य को अपने शत्रु से प्रेम रखना चाहिए (मत्ती ५ : ४४), और उसे अपने पड़ोसी के साथ अपने समान प्रेम रखना चाहिए। (मत्ती २२:३९)। एक मसीह का प्रेम संसार के लिए नहीं होना चाहिए (१ यूहन्ना २:१५)। परन्तु वह स्वयं को शुद्ध रखे (मत्ती ५: ८), अपने आपको जीवित और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाए। (रोमियों १२ : १)। इसका अन्तिम परिणाम है शान्तिमय व प्रसन्नतामय भला जीवन और इसके साथ ही अनन्त जीवन की आशा। (कुलुस्सियों १:५)। किसी को इससे अधिक और क्या आवश्यकता होगी ?

सो, मसीही धर्म बहुत प्रतिफल देता है, परन्तु जो व्यक्ति इसके लिए जितना करता या देता है वह उसके अनुसार ही इस से प्राप्त करता है। यदि आप इसके लिए कुछ भी नहीं करना चाहते तो इससे बहुत अधिक प्राप्त करने की आशा भी न रखिये। परन्तु यदि आप स्वयं को परमेश्वर को दे देंगे, और उसकी इच्छा को अपने जीवन में कार्य करने देंगे, तो आपको इतनी अधिक आशिषें मिलेगी। जिनकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते।

वे जो मसीही हैं

अनेकों लोग अपने आप को मसीही कहते हैं। परन्तु वे जो ऐसा कहते हैं उन में से सब वास्तव में मसीही नहीं हैं। यह सुनकर आप कदाचित् चकित हों परन्तु यह बिल्कुल सच है।

१. कोई भी व्यक्ति जिसका जन्म एक ऐसे घराने में हुआ हो जिस में माता-पिता अपने आपको मसीही कहते हों, केवल इसी के फल स्वरूप एक मसीही नहीं बन जाता। मैं जानता हूं कि संसार के अनेकों धर्मों में यह माना जाता है कि शारीरिक रूप से किसी एक परिवार में जन्म ले लेने से ही एक व्यक्ति बौद्ध, हिन्दू, अथवा एक मुसलमान इत्यादि बन जाता है। इसी के साथ मैं यह भी स्वीकार करता हूं कि कैथलिक धर्म में भी कदाचित् ऐसा ही समझा जाता है। किन्तु नए नियम के अनुसार सच्ची मसीहियत के विषय में यह बात सच नहीं है। एक मसीही परिवार में जन्म ले लेने से कोई भी व्यक्ति मसीही नहीं बन जाता। कोई भी व्यक्ति अपने आप को वास्तव में केवल तभी एक मसीही कह सकता है यदि वह एक विश्वासी है और मसीह की आज्ञाओं पर चलता है और जिस ने इस तरह से नए जन्म के द्वारा परमेश्वर के परिवार में प्रवेश किया है (यूहन्ना ३ : ३—५)।

२. कोई भी व्यक्ति केवल इसके फलस्वरूप एक मसीही नहीं बन जाता यदि उसके ऊपर बचपन में कुछ जल छिड़का गया हो। सर्व प्रथम, बपतिस्मे का अभिप्राय पानी छिड़कने से नहीं है परन्तु बपतिस्मे का अर्थ है पानी के भीतर गाड़े जाना। (कुलुस्सियों २ : १२; रोमियों ६ : ३, ४; प्रेरितों ८ : ३५—३९)। दूसरी ओर, वह व्यक्ति जिसका

बपतिस्मा होता है, उसका बपतिस्मा इस उद्देश्य से होना चाहिए कि उस ने सत्य को सुना है (रोमियों १० : १०), और उसने विश्वास किया है (रोमियों १० : १०), और उसने अपने पापों से मन फिराया है (लूका १३ :३) और उसने अपने मुंह से यह अंगीकार किया है कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है (मत्ती १० : ३२) । इन में से कोई भी कार्य, उस व्यक्ति के अतिरिक्त जो बपतिस्मा लेता है, कोई अन्य व्यक्ति नहीं कर सकता और तीसरे स्थान पर, छोटे बालक अपने कार्यों के लिये परमेश्वर के निकट ज़िम्मेदार नहीं है (मत्ती १८ : १—३) इस कारण बचपन में या किसी समय पानी के छिड़के जाने से कोई कभी एक मसीही नहीं बन सकता । मनुष्य एक मसीही केवल तभी बनता है जब वह अपने आपको मसीह की आज्ञाओं को मानने के लिये दे देता है, परन्तु जल छिड़कने की शिक्षा मनुष्य की ओर से है ।

३. केवल इसलिये कि यदि कोई कहे कि मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है, इसका अर्थ यह नहीं हो जाता कि वह वास्तव में एक मसीही है । जब कि एक मसीही बनने के लिये यह आवश्यक है कि मनुष्य यह विश्वास करे कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है परन्तु मसीही बनने के लिये यही पर्याप्त नहीं है । और यदि ऐसा हो सकता है तो दुष्टात्मा भी मसीही हो सकते हैं क्योंकि पवित्रशास्त्र कहता है कि दुष्टात्मा भी विश्वास रखते और थरथराते हैं । (याकूब २ : १९) । परन्तु एक मसीही बनने के लिये केवल यही आवश्यक नहीं है कि मनुष्य मसीह में विश्वास करे कि वह परमेश्वर का पुत्र है किन्तु उसका विश्वास इतना दृढ़ होना चाहिए कि वह उसकी प्रत्येक शिक्षा को मानने के लिये तैयार हो (इब्रानियों ५ : ८, ९; १ पतरस ३ :२१) और अन्त तक उसका एक दृढ़ विश्वासी होकर रहे । (प्रकाशित-वाक्य २ : १०) ।

४. यदि कोई व्यक्ति किसी साम्प्रदायिक कलीसिया का एक सदस्य

है तो इसका अभिप्राय यह नहीं हो जाता कि वह वास्तव में एक मसीही है। संसार में अनेकों कलीसियाएं हैं और इस कारण अनेकों लोग अपने आपको मसीही कहते हैं क्योंकि वे उन साम्प्रदायिक कलीसियाओं के सदस्य हैं। परन्तु वे सब धोखे में हैं। मसीही केवल तभी बनते हैं जब लोग मसीह यीशु का अनुसरण करने लगते हैं। मसीह का अनुसरण करने के फलस्वरूप कोई भी व्यक्ति कभी भी किसी साम्प्रदायिक कलीसिया का सदस्य नहीं बन सकता। केवल बाइबल की ही शिक्षानुसार लोग केवल मसीही ही बनेंगे। (प्रेरितों ११ : २६)। पवित्रशास्त्र हमें कभी विभाजित नहीं करेगा परन्तु मसीह में हम सबको एक करेगा। (१ कुरिन्थियों १ : १०)। इस कारण यदि कोई किसी मनुष्य की बनाई हुई एक कलीसिया का सदस्य है तो इसका अर्थ यह है कि वह वास्तव में एक मसीही नहीं है। ऐसा व्यक्ति अपने हित के प्रति अनेकों बातें कह सकता है वा अनेकों तर्क कर सकता है परन्तु वास्तविकता यही है कि वह बाइबल के अनुसार एक सच्चा मसीही नहीं है। क्योंकि यदि वह एक मसीही होता तो वह कभी भी एक साम्प्रदायिक कलीसिया में नहीं होता, परन्तु प्रभु की कलीसिया का एक सदस्य होता और केवल एक मसीही ही होता। (प्रेरितों २ : ४७; १ पतरस ४ : १६)। बाइ-बल का अध्ययन करिए तथा स्वयं देखिए।

५. यदि कोई अपने आप को एक मसीही कहे तो केवल कहने ही से वह एक मसीही नहीं बन जाता। इस संसार में अपने लिये कोई कुछ भी कह सकता है परन्तु जब तक अपने विषय में वह कोई विशेष प्रमाण न दे तो वह झूठा तथा धोखेबाज़ प्रमाणित हो सकता है। तौभी हर एक वह व्यक्ति जो अपने आप को एक मसीही कहता है अकसर अन्य लोगों द्वारा एक मसीही व्यक्ति के रूप में केवल इसीलिये स्वीकार कर लिया जाता हैं क्योंकि वह स्वयं को एक मसीही बताता है। परन्तु यह अनुचित है। जब तक कोई व्यक्ति परमेश्वर के वचन तथा अपने

जीवन के द्वारा यह प्रमाणित नहीं कर देता कि वह एक मसीही है तो वास्तव में वह एक मसीही नहीं हो सकता चाहे वह कितना भी क्यों न कहे (मत्ती ७ : २१—२३)।

मैं आप से निवेदन करता हूं कि आप स्वयं अपनी स्थिति पर विचार करें। क्या आप एक मसीही हैं ? क्या आप बाइबल की शिक्षा अनुसार एक मसीही हैं ? क्या आप इसका प्रमाण दे सकते हैं ? क्या आपने प्रभु की आज्ञाओं को माना है ? क्या आप उसके प्रति पूर्ण रूप से विश्वासी हैं ? और यदि नहीं तो आप एक मसीही बनने के लिये प्रभु यीशु में विश्वास कीजिए, अपने पापो से मन फिराइए, यीशु मसीह को परमेश्वर का पुत्र मानकर अंगीकार कीजिए तथा अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लीजिए। (मरकुस १६ : १५, १६, प्रेरितों २ : ३८)। मसीह आपका उद्धार करेगा, आपको अपनी कलीसिया में मिलाएगा, और तब आप केवल एक मसीही ही होंगे। (प्रेरितों २ : ४७; प्रेरितों ११ : २६)। परिणामस्वरूप यदि आप अन्त तक उसके प्रति एक विश्वासी बने रहेंगे तब आपको अनन्त जीवन मिलेगा। (रोमियों ६ : २३; यूहन्ना १४ : १—३)।

उद्धार कैसे मिले ?

"सब ने पाप किया है।" (रोमियों ३ : २३) "कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं।" (रोमियों ३ : १०) "पाप की मजदूरी तो मृत्यु है।" (रोमियों ६ : २३)। और इसी प्रकार के अन्य पदों का भी उल्लेख किया जा सकता है। इन पदों को पढ़कर हम देखते हैं कि मनुष्य खोया हुआ है, अपूर्ण, व आशा रहित है। तब, मनुष्य का उद्धार किस प्रकार से हो सकता है ? यदि हम बाइबल में 'प्रेरितों के काम' की पुस्तक का अध्ययन करें तो हमें इस प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा।

'प्रेरितों के काम' की पुस्तक में मनपरिवर्तन की ग्यारह घटनाओं का उल्लेख मिलता है। यदि यहां लिखने के लिए पर्याप्त स्थान होता, तो यह जानने के लिए कि उन्होंने उद्धार पाने के लिए क्या किया, हम उस में से हर एक घटना पर विचार करते। परन्तु इस अध्ययन में हम उनमें से केवल तीन घटनाओं पर ही विचार करेंगे। हर एक घटना में, निश्चित रूप से, एक ही तरह का प्रश्न पूछा गया और एक ही उत्तर दिया गया। प्रश्न सामान्यतः यह था "उद्धार पाने के लिये मैं क्या करूं ?" अब उत्तर जानने के लिये हम हर एक घटना पर अलग-अलग से विचार करेंगे।
कृपया ध्यान दें :

१. पिन्तेकुस्त के दिन लोगों ने प्रश्न किया, "हम क्या करें ?" (प्रेरितों २)

यहाँ पतरस व अन्य प्रेरित अविश्वासी लोगों के एक झुण्ड को प्रचार कर रहे थे। उनमें से बहुतेरे वे थे जिन्होंने यीशु मसीह को क्रूस

पर चढ़ाने में भाग लिया था। इसलिए सब से पहिले उन्हें विश्वास दिलाना था कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। ऐसा करने के लिये, पतरस ने उनको उन सामर्थ के कामों और आश्चर्य के कामों और चिन्हों का स्मरण दिलाया जो यीशु मसीह ने उनके बीच में रह कर किये थे। तब उसने उन्हें बताया कि यीशु मसीह को क्रूस के उपर कीलों से ठोंका गया, परन्तु कब्र में गाड़े जाने के तीन दिन के बाद वह भी उठा, और उन में से बहुतों को दिखाई भी दिया, और तब स्वर्ग में अपने पिता के पास वापस चला गया। और फिर, उसने इस सत्य के ऊपर बल देकर कहा, कि यीशु मसीह ने उन भविष्यद्वाणियों को पूरा किया जो उसके विषय में की गई थीं, विशेषकर यह कि दाऊद ने पहिले से उसके आने के विषय में कहा था, और इस समय यीशु मसीह दाऊद के सिंहासन पर बैठा है। जब लोगों ने यह सब सुना, "तब सुननेवालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, कि हे भाईयो, हम क्या करें? पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिये भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।" (प्रेरितों २ : ३७—३९)। और तब आगे हम पढ़ते हैं, "सो जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए।" (प्रेरितों २ : ४१)। और फिर प्रेरितों २ :४७ में लिखा है कि जो उद्धार पाते थे उन्हें प्रभु प्रतिदिन उन में (कलीसिया) मिला देता था।

इस बात पर ध्यान दें कि सुसमाचार प्रचार किया गया, लोगों ने उसे स्वीकार किया, पश्चात्ताप किया, और अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लिया। तब क्या हुआ? उनका उद्धार हुआ और वे प्रभु की कलीसिया में मिलाए गए।

२. शाऊल ने प्रश्न पूछा "हे प्रभु मैं क्या करूँ ?" (प्रेरितों ९; प्रेरितों २२)।

यहाँ एक ऐसा व्यक्ति था जो प्रभु की कलीसिया को नष्ट करने के लिये अपनी शक्ति भर प्रयत्न कर रहा था। और ऐसा करके वह मसीह को सता रहा था। परन्तु एक दिन जब वह दमिश्क की ओर चला जा रहा था तो मार्ग में प्रभु ने उसे दर्शन देकर उसे उसके अनुचित कार्य के लिए बताया। बाद में शाऊल स्वयं कहता है, "जब मैं चलते-चलते दमिश्क के निकट पहुंचा, तो ऐसा हुआ कि दोपहर के लगभग एकाएक एक बड़ी ज्योति आकाश से मेरे चारों ओर चमकी। और मैं भूमि पर गिर पड़ा : और यह शब्द सुना, कि हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है ? मैंने उत्तर दिया, कि हे प्रभु, तू कौन है ? उसने मुझ से कहा; मैं यीशु नासरी हूं, जिसे तू सताता है। और मेरे साथियों ने ज्योति तो देखी, परन्तु जो मुझ से बोलता था उसका शब्द न सुना। तब मैंने कहा; हे प्रभु मैं क्या करूँ ? प्रभु ने मुझसे कहा? उठकर दमिश्क में जा और जो कुछ तेरे करने के लिये ठहराया गया है वहां तुझ से सब कह दिया जाएगा।" (प्रेरितों २२ : ६—१०)। आगे हम पढ़ते हैं कि किस प्रकार से वह नगर के भीतर गया और वहां तीन दिन तक बिना देखे, भूखा, पियासा पड़ा रहा। और हम यह भी पढ़ते हैं कि किस प्रकार से प्रभु ने हनन्याह नाम के एक प्रचारक को शाऊल के पास यह बताने के लिए भेजा कि उसे क्या करना चाहिए। बाद में पौलूस स्वयं उस घटना का वर्णन करके बताता है कि जब हनन्याह उसके पास आया तो उसने उस से कहा, "अब क्यों देर करता है ? उठ, बपतिस्मा ले. और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।" (प्रेरितों २२ : १६)।

अतः शाऊल का उद्धार कब हुआ ? कदाचित् कुछ व्यक्ति कहेंगे कि जब प्रभु ने उसे दर्शन दिया। परन्तु प्रभु ने उस से कहा कि उठकर दमिश्क में जा, और जो कुछ तेरे करने के लिये ठहराया गया है वहां तुझ से सब कह दिया जाएगा। कुछ लोग कहेंगे कि उसका उद्धार

प्रार्थना के द्वारा हुआ। परन्तु यदि वास्तव में ऐसा हुआ होता तो हनन्याह उससे यह क्यों कहता कि उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल ? सत्य यह है कि उसका उद्धार भी उसी तरह से हुआ जिस प्रकार से लोगों का पिन्तेकुस्त के दिन हुआ था। उसने सुसमाचार सुना, उस पर विश्वास किया, अपने पापों से मन फेरा, प्रभु यीशु को परमेश्वर का पुत्र स्वीकार किया, और अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लिया।

३. फिलिप्पी में बन्दीग्रह के दरोगा ने कहा, "हे साहिबो, उद्धार पाने के लिये मैं क्या करूं ? (प्रेरितों १६)।

पौलूस और सीलास को बहुत बुरी तरह से पीटकर बन्दीग्रह में डाल दिया गया था। परन्तु आधी रात के लगभग अद्भुत रीति से उन का छुटकारा हुआ और बन्दीग्रह के द्वार खुले देखकर दारोगा बहुत भयभीत हुआ क्योंकि वह समझा कि बन्धुए भाग गए सो उसने तलवार खींचकर अपने आप को मार डालना चाहा, "परन्तु पौलुस ने ऊँचे शब्द से पुकारकर कहा; अपने आप को कुछ हानि न पहुँचा, क्योंकि हम सब यहां हैं। तब वह दिया मंगवाकर भीतर लपक गया, और कांपता हुआ पौलूस और सीलास के आगे गिरा। और उन्हें बाहर लाकर कहा, हे साहिबो, उद्धार पाने के लिये मैं क्या करूं ? उन्होंनें कहा प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।" (प्रेरितों १६:२८—३१)। अब बहुत से व्यक्ति यहीं पर ठहर जाएंगे व कहेंगे कि उस व्यक्ति को उद्धार पाने के लिये केवल यही करना आवश्यक था। परन्तु यह केवल आरम्भ ही था।

वह व्यक्ति कौन था ? वह एक अविश्वासी था। अतः सबसे पहिले यह आवश्यक था कि वह विश्वास लाए व इसे सम्भव करने के लिये, आगे हम पढ़ते, हैं "और उन्होंने उसको, और उसके सारे घर के लोगों को प्रभु का वचन सुनाया। और रात को उसी घड़ी उसने उन्हें ले जाकर उनके घाव धोए, और उसने अपने सब लोगों समेत तुरन्त

बपतिस्मा लिया। और उसने उन्हें अपने घर में ले जाकर, उनके आगे भोजन रखा और सारे घराने समेत परमेश्वर पर विश्वास करके आनन्द किया।" (प्रेरितों १६ : ३२—३४)। अब उस व्यक्ति व उसके परिवार ने क्या किया ? जब उन्होंने "प्रभु का वचन" सुना तो उस पर विश्वास किया, परन्तु प्रभु यीशु ने क्या आदेश दिया था ? "जो विश्वास करे और बपतिस्मा से उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६ : १६) "प्रभु का वचन" सुनने का परिणाम यह हुआ कि उस व्यक्ति ने बन्दियों के घाव धोकर अपने पश्चात्ताप को व्यक्त किया, और उसी घड़ी बपतिस्मा लिया। यह आज्ञाएं उसी उपदेश का भाग थीं जो पौलूस ने दिया; नहीं तो उस दारोगा को यह कैसे पता चलता।

सो आज मनुष्य को उद्धार पाने के लिये क्या करना चाहिए ? ठीक वही। वह सत्य को सुने, उस पर विश्वास लाए, अपने पापों से पश्चात्ताप करे, प्रभु यीशु को ग्रहण करे, और बपतिस्मा ले। पढ़िये, इब्रानियों ११ :६, रोमियों १० : १०; लूका १३ : ३; प्रेरितों १७ : ३०; मत्ती २० : ३२; मरकुस १६ :१५—१६; प्रेरितों २:३८।

'उद्धार की योजना'

बाइबल बतलाती है कि मनुष्य पापी है। पवित्रशास्त्र कहता है, "इसलिये कि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" (रोमियों ३:२३) तथा "पाप की मजदूरी तो मृत्यु है....." (रोमियों ६ : २३)। इस का अभिप्राय यह हुआ कि मनुष्य को उद्धार की आवश्यकता है। परन्तु वह उद्धार कैसे पा सकता है? बाइबल यह भी बतलाती है।

परमेश्वर ने मनुष्य को केवल बनाया ही नहीं परन्तु यह जानते हुए कि मनुष्य एक दिन अवश्य ही अपने बनानेवाले से मुंह मोड़ लेगा, तथा पाप में फंस जाएगा, उसे इस कठिनाई से छुटकारा देने के लिए एक मार्ग भी प्रदान किया। यह छुटकारा परमेश्वर के प्रेम, दया और अनुग्रह पर निर्भर करता है। (यूहन्ना ३ : १६; इफिसियों २ : ८, ९)। यद्यपि परमेश्वर मनुष्य को अपने पास आने के लिए विवश नहीं करता, परन्तु इसकी अपेक्षा वह उसे अपने पास आने के लिए निमन्त्रण देता है। जो ऐसा करते हैं वे उद्धार पाते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति को उद्धार प्राप्त करने के लिए पाँच साधारण पग उठाने आवश्यक हैं, परमेश्वर अपने वचन में कहता है :

१. उसे सत्य को सुनना चाहिए। ".....यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं प्रसन्न हूँ। इसकी सुनो।" (मत्ती १७ : ५)। "सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।" (रोमियों १० : १७)।

२. उसे परमेश्वर और उसके पुत्र यीशु मसीह में विश्वास करना

चाहिए। "और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करका अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है ; और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।" (इब्रानियों ११ : ६) मसीह ने कहा, "तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो, मुझ पर भी विश्वास रखो।" (यूहन्ना १४ : १)। उसने यह भी कहा, "जो पुत्र पर विश्वास करता है अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।" (यूहन्ना ३:३६)। पवित्रशास्त्र के और भी बहुत से पद यहाँ पर दिए जा सकते हैं, परन्तु आप देखते हैं कि विश्वास या श्रद्धा उद्धार पाने के लिए बहुत आवश्यक है। किन्तु, यह याद रखिए, कि किसी तरह से भी ये पद इस ओर संकेत नहीं करते कि उद्धार केवल विश्वास ही से होता है।

३. उसे अपने पापों से पश्चात्ताप करना चाहिये। यीशु मसीह ने कहा, "मैं तुमसे कहता हूँ कि नहीं ; परन्तु यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब भी इसी रीति से नाश होगे।" (लूका १३ : ३)। पौलुस ने उपदेश दिया, "इसलिए परमेश्वर अज्ञानता के समयों से अनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है।" (प्रेरितों १७ : ३०)। पतरस ने लिखा, "प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कितने लोग समझते हैं ; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता, कि कोई नाश हो; वरन् यह कि सब को मन-फिराव का अवसर मिले।" (२ पतरस ३ : ९)। पश्चात्ताप का अर्थ पापों के प्रति मन का बदलाव है। इसका अभिप्राय है एक दिशा से मुड़कर दूसरी दिशा में जाना या दूसरे शब्दों में इसका अर्थ है, पाप को त्यागना। इस से पहले कि वह अच्छा जीवन आरम्भ करे उसे पाप करना त्यागना चाहिए, और यही प्रभु चाहता है।

४. उसे यह स्वीकार करना चाहिए कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। मसीह ने स्वयं ही कहा, "जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे

मान लेगा, उसे में भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा।" (मत्ती १० : ३२)। पौलुस कहता है, कि इस बात का मुँह से अंगीकार करना चाहिये, "क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिए मुंह से अंगीकार किया जाता है।" (रोमियों १० : १०)। प्रेरितों के काम के ८ अध्याय में हमें इथोपिया के खोजे का एक उदाहरण मिलता है, वह यीशु मसीह का अंगीकार करता है, इस से पहले कि उसे बपतिस्मा दिया जाए। इसे समान्यतः उत्तम स्वीकरण कहते हैं। इस से अच्छा स्वीकरण कोई क्या कर सकता है ?

५. उसे उद्धार पाने के लिए बपतिस्मा लेना चाहिये। मसीह ने इसे यह कहकर स्पष्ट किया। "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा। (मरकुस १६ : १६)। "पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले ; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।" (प्रेरितों २ : ३८)। फिर, वह कहता है, "और उसी पानी का दृष्टान्त भी, अर्थात् बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है ; (उस से शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है)।" (१ पतरस ३ : २१)। शाऊल से कहा गया था, "अब क्यों देर करता है ? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।" (प्रेरितों २२ : १६)। बाइबल हमें बतलाती है कि केवल एक ही बपतिस्मा है (इफिसियों ४ : ५), और वह है "गाड़े जाना।" (कुलुस्सियों २:१२), अर्थात् जल में गाड़े जाना। (प्रेरितों ८ : ३६, ३९) यह एक मात्र बपतिस्मा पिता पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में होना चाहिए (मत्ती २८ : १८-२०), और यह मनुष्य को मसीह और उसकी कलीसिया में सम्मिलित कर देता है। (रोमियों ६ : ३-४ ; १ कुरिन्थियों १२ : १३।

इन साधारण आज्ञाओं को मानने से, कदाचित् कोई भी व्यक्ति अपने पिछले पापों से मुक्ति पाकर, मसीह की कलीसिया में सम्मिलित हो सकता है, और एक मसीही होने के कारण अपने पूरे जीवन भर ईमानदारी से परमेश्वर की सेवा कर सकता है ताकि स्वर्ग उसका हो। हमारा आपसे यह निवेदन है कि आप इन बातों के बारे में आज ही कदम उठाइये।

मसीह में

पवित्रशास्त्र हमें उन सब आशीषों के विषय में बताता है जो हमें मसीह में मिलती हैं तथा उन्हीं में मुक्ति भी सम्मिलित है। उन में से कुछ ये हैं। "सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है। पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गई।" (२ कुरिन्थियों ५: १७)। "हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है।" (इफिसियों १ : ३)। और फिर, "कि समयों के पूरे होने का ऐसा प्रबन्ध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है, और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे।" (इफिसियों १ : १०)।

अब जबकि ये सब आशिषें मसीह में हैं, इसलिये यह प्रश्न पूछना स्वभाविक ही है। "कि एक व्यक्ति मसीह में कैसे सम्मिलित होता है?" इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिये हमें फिर से परमेश्वर के वचन में से देखना आवश्यक है। पढ़ते हुए हम देखेंगे कि अनेकों ऐसे प्रत्यक्ष नियम हैं जिनका पालन करना बहुत ही आवश्यक है। और प्रत्येक नियम अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है। किन्तु, इन में से एक को छोड़-कर अन्य सभी नियम मनुष्य को उस अन्तिम नियम के निकट ले आते हैं जिसको मानकर मनुष्य मसीह से बाहर के वातावरण से छूटकर मसीह के भीतर प्रवेश पा लेता है। उदाहरण स्वरूप, एक घर के भीतर जाने के लिये एक व्यक्ति को अनेकों पग (कदम) उठाने पड़ते हैं ताकि वह उस घर के इतना समीप आ जाए कि वह एक अन्तिम पग उठाकर उस घर के भीतर चला जाए। इस बात को समझना कोई कठिन कार्य नहीं है। ठीक है न? परन्तु अब देखें कि वे नियम या पग क्या हैं:

१. इस विषय में पहिला आवश्यक पग है यीशु मसीह को अथवा परमेश्वर के वचन को सुनना। यीशु के रूपान्तर के समय, परमेश्वर ने कहा, "कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं प्रसन्न हूं। इसकी सुनो।" (मत्ती १७ : ५)। प्रेरित पौलुस के कथनानुसार, "सो विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है।" (रोमियों १०:१७)। यही कारण है कि मसीह ने अपने चेलों को आज्ञा देकर कहा कि तुम सारे संसार में जाकर सुसमाचार का प्रचार करो। (मरकुस १६:१५,१६)। कोई भी प्रभु में विश्वास नहीं कर सकता जब तक वह उसके विषय में न सुने, और विश्वास के बिना कोई प्रभु की आज्ञा नहीं मान सकता।

अब यह पहिला पग चाहे कितना भी महत्त्वपूर्ण क्यों न हो, परन्तु केवल यही एक व्यक्ति को मसीह में सम्मिलित नहीं कर सकता। यदि कोई यहीं रुक जाय तो यह व्यर्थ होगा।

२. दूसरा पग जो एक व्यक्ति को उठाना चाहिए वह है परमेश्वर में विश्वास करना और यह विश्वास करना कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। हम पढ़ते हैं, "और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है ; और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।" (इब्रानियों ११ : ६)। स्वयं प्रभु यीशु ने कहा, "···तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो।" (यूहन्ना १४ : १)। फिर, उसने कहा, "कि तुम अपने पापों में मरोगे ; क्योंकि यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूं, तो अपने पापों में मरोगे।" (यूहन्ना ८ : २४)।

इसके कहने की कोई आवश्यक्ता नहीं, कि उद्धार के लिये विश्वास करना अत्यन्त ही आवश्यक है किन्तु केवल विश्वास से किसी का उद्धार नहीं होता और केवल विश्वास से ही मनुष्य मसीह के भीतर प्रविष्ट नहीं हो सकता। यह उद्धार की दिशा में केवल एक पग है। सुनिये,

कि पौलुस, इस विषय में क्या कहता है। "क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिये मुंह से अंगीकार किया जाता है।" (रोमियों १० : १०)। सो विश्वास धार्मिकता के लिये (की दिशा में) किया जाता है परन्तु धार्मिकता के भीतर होने के लिये नहीं।

३. तीसरा पग जिसे मनुष्य को उठाना चाहिए, वह है अपने सारे पापों से मन फिराना। छोटे बालकों के अतिरिक्त सब मनुष्य परमेश्वर की दृष्टि में पापी है और पाप की मजदूरी मृत्यु है। (रोमियों ३ : २३ ; रोमियों ६ : २३)। तो इसका हल क्या है? पश्चात्ताप। और पश्चात्ताप क्या है? इसका अर्थ है मन का परिवर्तन, मुड़कर एक दूसरी दिशा में चलना, अपने जीवन में वर्तमान सभी पापों को त्यागना और इस प्रकार से एक अच्छे जीवन का आरम्भ करना। मसीह को मालूम था कि जब तक मनुष्य के भीतर उसके पाप हैं उसका उद्धार नहीं हो सकता, इसलिये उसने कहा, "मैं तुम से कहता हूं, कि नहीं परन्तु तुम मन न फिराओगे तो तुम सब भी इसी रीति से नाश होगे।" (लूका १३ : ३)। फिर, पौलूस ने उपदेश देकर कहा, "इसलिये परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है।" (प्रेरितों १७ : ३०)। पतरस ने भी उपदेश देकर कहा, "मन फिराओ और तुम मे से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले ; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।" (प्रेरितों २ :३८)।

यद्यपि कोई अपने सारे मन से प्रभु में विश्वास करे और अपने पापों से पश्चात्ताप करे, किन्तु उसके उद्धार के निमित्त यही पर्याप्त नहीं हैं। अभी कुछ और पग भी उठाने आवश्यक हैं।

इस विषय में चौथा आवश्यक पग है यीशु मसीह का मुंह से यह

कहकर अंगीकार करना कि वह परमेश्वर का पुत्र है। मसीह ने कहा, "जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा।" (मत्ती १०:३२)। प्रेरितों ८:३७ में हम देखते हैं कि ठीक यही खोजे ने किया था, और हमने अभी देखा था कि उद्धार के लिये मुंह से अंगीकार किया जाता है। (रोमियों १०: १०)। तब और क्या है? एक वह अन्तिम पग जो मनुष्य को मसीह में तथा उद्धार में प्रवेश देता है। ये सब अन्य पग आवश्यक थे परन्तु यह अन्तिम पग वह है जो मनुष्य को वास्तव में मसीह के भीतर सम्मिलित करता है। अब आईए इस पर विचार करें।

५. पांचवा पग जिसे मनुष्य को उठाना चाहिए, वह है, प्रभु के साथ बपतिस्मे के जल में पापों की क्षमा के लिये गाड़े जाना। और इस प्रकार से मनुष्य मसीह तथा उसकी कलीसिया में प्रवेश करता है। बपतिस्मे के महत्त्व को पवित्र शास्त्र में इन स्थानों पर बताया गया है। मरकुस १६ : १६ ; प्रेरितों २:३८; प्रेरितों २२ : १६ ; १ पतरस ३ : २१ इत्यादि। फिर पौलुस ने इस प्रकार से लिखा, "क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया?" (रोमियो ६ : ३)। उसने, फिर लिखा, "क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो यीशु पर है, परमेश्वर की संतान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।" (गलतियों ३ : २६, २७)।

तो आपने देखा। एक मार्ग है और केवल एक ही मार्ग है यीशु मसीह में प्रवेश करने का, और वह है बपतिस्मा लेकर। परन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि केवल बपतिस्मे के ही द्वारा मनुष्य का उद्धार होता है। जैसा कि पहिले बताया जा चुका है, कि अन्य सभी नियमों का पालन बपतिस्मा लेने से पहिले करना आवश्यक है

ताकि इस अन्तिम पग को उठाया जा सके। परन्तु यह समझना बहुत ही आवश्यक है कि किसी का भी उद्धार उस समय तक नहीं हो सकता जब तक इन सारे नियमों का पालन नहीं किया जाए या इन सभी पगों को न उठाया जाए। और यदि नहीं तो उद्धार के निमित्त प्रभु के सारे आवश्यक नियमों को पालन किये बिना मनुष्य का उद्धार हो जायेगा, और ऐसा असम्भव है। क्या आप मसीह में हैं? प्रत्यक्ष ही आप नहीं हैं यदि आपने इन सभी पगों को नहीं उठाया है और यदि आपने ऐसा नहीं किया है तो हम आपको प्रोत्साहित करते हैं कि आप ऐसा करें।

नया जन्म

हम अक्सर लोगों को कहते सुनते हैं जबकि वे फिर से जन्म लेने, फिर से जन्मे हुए मसीही, वा नए जन्म इत्यादि के बारे में बताते हैं। इस से उनका क्या अभिप्राय है? यदि आप उन से प्रश्न करें तो वे साधारणतः उत्तर देकर कहेंगे कि इस से उनका अभिप्राय प्रभु को व्यक्तिगत रूप से उद्धारकर्त्ता मान लेने से है। और यदि आप इस विषय में उनसे और प्रश्न करने लगें तो वे कदाचित् और बहुत कुछ बताएं परन्तु फिर भी इस विषय में वे उस तरह से बताने में असफल ही रहेंगे जिस प्रकार से परमेश्वर का वचन हमें बताता है।

क्योंकि यह विषय बाइबल का है, इसलिये उचित यही होगा कि हम स्वयं बाइबल में से ही देखें कि इस विषय में उस में क्या लिखा है। सबसे पहिले यही अच्छा होगा कि हम इस विषय पर आधारित विवरण को पढ़ें। सो हम यूं पढ़ते हैं। "फ़रीसियों में से नीकुदेमुस नाम का एक मनुष्य था, जो यहूदियों का सरदार था। उस ने रात को यीशु के पास आकर उस से कहा, हे रब्बी, हम जानते हैं, कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आया है ; क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, तो नहीं दिखा सकता। यीशु ने उसको उत्तर दिया ; कि मैं तुझ से सच कहता हूं, यदि कोई नए सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नही सकता। नीकुदेमुस ने उस से कहा, मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो क्योंकर जन्म ले सकता है ? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है ? यीशु ने उत्तर दिया, कि मैं तुझ से सच-सच कहता हूं ; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न

जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है ; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है। अचम्भा न कर, कि मैं ने तुझ से कहा, कि तुम्हें नए सिरे से जन्म लेना अवश्य है। हवा जिधर चाहती है उधर चलती है, और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता, कि वह कहां से आती और किधर को जाती है ? जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।" (यूहन्ना ३ : १-८)।

सबसे पहले, इस बात का ध्यान रखें कि यह जन्म, जो कि विचार-धीन है इसका शारीरिक जन्म से कोई सम्बन्ध नहीं है। अनेकों लोगों ने इस वार्त्तालाप में पाये जानेवाले "जल" शब्द की तुलना शारीरिक जन्म से करने का प्रयत्न किया है, परन्तु यह सत्य नहीं है। नीकुदेमुस का भी विचार था कि प्रभु उस से शारीरिक जन्म के बारे कह रहा है परन्तु प्रभु ने उसे समझाया कि उसका ऐसा सोचना अनुचित है। दूसरी ओर, यदि इसका अभिप्राय शारीरिक जन्म से नहीं है तो अवश्य ही वह एक आत्मिक जन्म के विषय में कह रहा है। और हम देखते हैं कि यीशु ने उसे यह कहकर समझाया, "कि मैं तुझ से सच-सच कहता हूं; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।" (यूहन्ना ३ : ५)। यहां वह क्या बता रहा है ?

१. "जब तक" प्रभु के राज्य में प्रवेश करने का केवल एक ही मार्ग है, और इसीलिये प्रभु यीशु ने कहा, कि "जब तक" अर्थात् इसके अतिरिक्त।

२. "मनुष्य" अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति। दूसरे शब्दों में, हरएक वह व्यक्ति जो अपने कार्यों के लिये उत्तरदायी है। (छोटे बालक यहां सम्मिलित नहीं हैं।)

३. "जल" यहां जल का अभिप्राय बपतिस्मे से है। यहां जल का

अर्थ जल अर्थात् पानी से है क्योंकि पवित्र बाइबल में जहां कहीं भी जल शब्द का उपयोग प्रतीकात्मक ढंग से हुआ है वहां सदैव इसके साथ ऐसे शब्दों का भी उपयोग हुआ है जैसे कि जीवन का जल, इत्यादि। मसीही धर्म में केवल एक ही ऐसा कार्य है जिसमें जल का उपयोग होता है, और वह है बपतिस्मा। इस कारण, जब कोई व्यक्ति बपतिस्मे के द्वारा पानी के भीतर गाड़ा जाता है (रोमियों ६ : ३,४), और फिर ऊपर आता है तो उसका नया जन्म होता है।

४. "आत्मा" नए जन्म में मनुष्य आत्मा से उत्पन्न होता है। परन्तु कैसे ? परमेश्वर के वचन के द्वारा। वचन आत्मा के द्वारा दिया गया था, और जब इसे अच्छे हृदयों में बोया या डाला जाता है तो इसकी उत्पन्न करनेवाली शक्ति के द्वारा मनुष्य के हृदय में आज्ञापालन की भावना जागृत होती है। और तब, विश्वासी जन निश्चय करता है कि वह अपना जीवन परमेश्वर को देगा, वह संसार और पाप से अपना मन फिराएगा, फिर वह बपतिस्मे के द्वारा यीशु के साथ दफ़न होता है ताकि वह एक नई सृष्टि बनकर उठ खड़ा हो। पाप से धुलकर परमेश्वर के घराने में जन्म ले। सुनिए, कि पतरस क्या कहता है। "सो जब कि तुम ने भाईचारे की निष्कपट प्रीति के निमित्त सत्य के मानने से अपने मनो को पवित्र किया है, तो तन मन लगाकर एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो। क्योंकि तुमने नाशमान नहीं पर अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरनेवाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है।" (१ पतरस १ : २२,२३)। सो आत्मा परमेश्वर के वचन के द्वारा उत्पन्न करने का कार्य करता है, और मनुष्य आज्ञा मानने के लिये बपतिस्मा लेता है। और इस प्रकार से उसका जन्म जल और आत्मा से होता है। यह इतना ही साधारण है।

५. "जन्मे" जन्म के सम्बन्ध में दो बातें बहुत ही आवश्यक हैं। उत्पन्न होना तथा स्वयं जन्म। नए जन्म में, जो कि एक आत्मिक जन्म

है : दो आवश्यक वस्तुएं हैं। अर्थात् आत्मा तथा जल। यहां मनुष्य आत्मा से उत्पन्न होकर जल से जन्मता हैं। यह समझना बहुत ही सरल है।

६. "राज्य" इसका अभिप्राय परमेश्वर के राज्य, अर्थात् कलीसिया से है। (मत्ती १६ : १८,१९)। यीशु कहता है कि इसमें प्रवेश करने का केवल एक ही मार्ग है, और वह है जल तथा आत्मा से जन्म लेकर।

इस विवरण में शारीरिक तथा आत्मिक जन्म में भेद को यीशु मसीह ने आगे कहकर बताया तथा उसने वायु का उदाहरण भी दिया यद्यपि वायु को कोई देख नहीं सकता, परन्तु इसके परिणाम को देखा और अनुभव भी किया जा सकता है। आत्मा के विषय में भी यही है। उसे कार्य करते कोई नहीं देख सकता परन्तु उसके फल स्पष्टता से देखे जा सकते हैं। आत्मा वचन के द्वारा कार्य करता है, और उसकी शिक्षाओं के मानने से मनुष्य का उद्धार होता है, तथा वह प्रभु के राज्य में प्रवेश करता है, और आत्मा के फल लाता है। (गलतियों ५ : २२,२३)।

अंत में हम देखते हैं, कि प्रभु ने उद्धार के लिये तथा राज्य या कलीसिया में प्रवेश पाने के लिये मनुष्य को दो मार्ग नहीं दिये हैं। यहां नए जन्म की शिक्षा, मरकुस १६ : १६ ; प्रेरितों २ : ३८ तथा मनुष्य के उद्धार से सम्बन्धित अन्य सभी बाइबल के पदों से पूरी तरह से सहमति में हैं। दूसरे शब्दों में, जब कोई सत्य को सुनता है (रोमियों १० : १७), उस पर विश्वास करता है (रोमियों १० : १०), अपने पापों से पश्चात्ताप करता है (प्रेरितों १७ : ३०), मसीह का अंगीकार करता है (रोमियों १० : १०), और बपतिस्मा लेता है (प्रेरितों २ : ३८ ; प्रेरितों २२ : १६), तो इस प्रकार से उसका नया जन्म होता है, और यूं वह प्रभु की कलीसिया में प्रवेश करता है। (१ कुरिन्थियों १२ : १३ ; प्रेरितों २ : ४७)। प्रश्न यह है : क्या आपका नया जन्म परमेश्वर के वचनानुसार हुआ है ?

नए नियम का बपतिस्मा

बपतिस्मा बाइबल का एक विषय है। यदि इसका वर्णन बाइबल में न होता तो हम इसके बारे में कुछ भी नहीं जान पाते। इसका अर्थ, तब यह हुआ, कि इसका सम्बन्ध परमेश्वर से है और उसने अपने वचन के द्वारा हमें इस विषय पर बताया है। इस कारण, हमारे भीतर एक ऐसी इच्छा प्रबल होनी चाहिए जो इस विषय में सच्चाई को जानने के लिये हमें प्रोत्साहित करे।

१. बपतिस्मा केवल एक ही है। पौलुस, इफिसियों ४ : ५ में, कहता है, "एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा।" इस से पूर्व कुछ अन्य बपतिस्में भी थे, परन्तु ६४ या ६५ ई० स० में जब परमेश्वर के प्रेरित ने उक्त बात का वर्णन किया तो उसने कहा कि अब केवल एक ही बपतिस्मा है। तब से लेकर मनुष्य ने अनेकों अन्य बपतिस्मों को भी जोड़ लिया है, परन्तु वे सभी पवित्र शास्त्र के विरोध में हैं।

२. बपतिस्मे का अर्थ। कुलुस्सियों २ : १२ में हम पढ़ते हैं, "और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिसने उसको मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे।" और फिर, "क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।" (रोमियों ६ : ३, ४)।

इसलिये, बपतिस्मा का अर्थ है "गाड़े जाना"। और इस प्रकार से अन्य सभी रूप अर्थात् जल छिड़कना या उंडेलना इत्यादि अनुचित है।

३. बपतिस्मे का अर्थ है जल के भीतर गाड़े जाना। बपतिस्मा केवल गाड़े जाना ही नहीं है, परन्तु प्रेरितों के ८ अध्याय से हमें शिक्षा मिलती है कि इसका अर्थ है जल के भीतर गाड़े जाना। खोजे की मन परिवर्तन की घटना में हम इस प्रकार से पढ़ते है "मार्ग में चलते चलते वे किसी जल की जगह पहुंचे, तब खोजे ने कहा, देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है। फिलिप्पुस ने कहा, यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है उसने उत्तर दिया, मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। तब उस ने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी, और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े और उस ने उसे बपतिस्मा दिया। जब वे जल में से निकलकर ऊपर आए तो प्रभु का आत्मा फिलिप्पुस को उठा ले गया, सो खोजे ने उसे फिर न देखा, और वह आनन्द करता हुआ अपने मार्ग चला गया।" (प्रेरितों ८ : ३६—३९)।

४. बपतिस्मा पापों की क्षमा के लिये लिया जाता है। "पतरस ने उन से कहा, मन फिराओ, और तुम से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले ; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।" (प्रेरितों २ : ३८)। और प्रेरितों २२ : १६ को भी पढ़िए।

५. बपतिस्मा बचाता है। प्रभु यीशु के कथनानुसार "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६ : १६)। फिर, "और उसी पानी का दृष्टान्त भी, अर्थात् बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है; (उस से शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है)।" (१ पतरस ३ : २१)। बपतिस्मा कब बचाता है ?

जब कोई प्रभु में इतना विश्वास करता है, कि वह उस की आज्ञानुसार, अपना मन फिराता है, उसे परमेश्वर का पुत्र कहकर अंगीकार करता है, और बपतिस्मा लेता है। (प्रेरितों १० : ४२)। केवल तभी बपतिस्मा बचाता है।

६. बपतिस्मा मनुष्य को मसीह में मिलाता है। "क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।" (गलतियों ३ : २६, २७)। तथा रोमियों ६ : ३, ४ को भी देखिए।

७. बपतिस्मा मनुष्य को कलीसिया में सम्मिलित करता है। "क्योंकि हम सबने क्या यहूदी हों, क्या यूनानी, क्या दास, क्या स्वतन्त्र एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया।" (१ कुरिन्थियों १२ : १३)। देह कलीसिया है। (कुलुसियों १ : १८ तथा इफिसियों १ : २२, २३)

८. बपतिस्मे के फलस्वरूप नया जन्म होता है। "यीशु ने उत्तर दिया, कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं ; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।" (यूहन्ना ३ : ५)।

९. बपतिस्मा लेकर मनुष्य यीशु मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने, तथा जी उठने को चित्रित करता है। पढ़िए रोमियों ६ अध्याय।

पवित्र शास्त्र के उक्त तथा अन्य सभी पद भी, जिनका वर्णन यहां किया जा सकता है, इस बात का स्पष्ट प्रमाण हैं कि मनुष्य के उद्धार में बपतिस्मे का एक विशेष स्थान है। क्या प्रभु की आज्ञानुसार आपका बपतिस्मा हो चुका है? यदि नहीं, तो इस विषय पर गम्भीरता से विचार करिए।

बपतिस्मे का उद्देश्य

बपतिस्मा बाइबल का एक विषय है। पवित्र शास्त्र में इसका वर्णन बड़ी ही स्पष्टता से किया गया है, परन्तु अकसर इसे समझने में लोगों को कठिनाई होती है। इसका एक मुख्य कारण यह है कि अधिकांश रूप से लोग इसके उद्देश्य को नहीं समझ पाते। इस विषय में परमेश्वर का वचन क्या शिक्षा देता है ?

सर्वप्रथम, हम इस बात को जान लें कि बपतिस्मा केवल एक ही है। (इफिसियों ४ : ५)। इस से पूर्व कुछ अन्य बपतिस्मे भी थे, जैसे कि यूहन्ना का बपतिस्मा, दुःख का बपतिस्मा, इत्यादि, परन्तु ६४ ई० स० में जब पौलुस ने इस विषय पर कहा तो उस समय केवल एक ही बपतिस्मा था। जब कि यह सत्य है, तो हम यह निश्चय किस प्रकार से कर सकते हैं कि वह एक बपतिस्मा, जिसके बारे में पौलूस कह रहा था, कौन सा है ? यह जानना बिल्कुल सरल है। हमें जो करना है वह यह है कि हम प्रेरितों के काम की पुस्तक को खोल कर पढ़ें और उसमें उल्लिखित मन परिवर्तन की विभिन्न घटनाओं पर विचार करें। और ऐसा करने से हमें पता चलेगा कि बपतिस्मे का अर्थ है गाड़े जाना, अर्थात् पानी के भीतर गाड़े जाना यह पापों की क्षमा के लिये लिया जाता है, तथा यह प्रभु की एक आज्ञा है। (प्रेरितों ८ : २६—३९, प्ररितों २२ : १६; प्रेरितों २ : ३८; प्रेरितों १० : ४८)।

बाइबल में पाए जानेवाले ऐसे विभिन्न स्थानों को पढ़ते हुए, जहां पर बपतिस्मे का वर्णन मिलता है, अनेकों लोग इसका अर्थ पवित्र आत्मा के बपतिस्मे से जोड़ते हैं। किन्तु, याद रखें, कि पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के लिये कभी भी आज्ञा नहीं दी गई। न ही इसका प्रचार किया

गया । परन्तु जब कभी भी बपतिस्मे के विषय में आप पवित्र शास्त्र में से देखते हैं तो इस नियम को ध्यान में रखें, कि यदि जिस बपतिस्मे का वर्णन हुआ है वह जल के बपतिस्मे के अतिरिक्त कोई अन्य बपतिस्मा है जैसे कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा, आग का बपतिस्मा, इत्यादि, तो उसका वर्णन स्पष्ट रूप से कहकर हुआ है । किन्तु, जहां कहीं केवल बपतिस्मा शब्द का वर्णन हुआ है, जैसे कि मरकुस १६ : १६; प्रेरितों २ : ३८, इत्यादि तो आप निश्चित रूप से जान सकते हैं कि इसका अभिप्राय जल के बपतिस्मे से है । यही बात इफिसियों ४ :५ में उल्लिखित एक बपतिस्मे के विषय में भी सत्य है ।

फिर, याद रखें कि अनुचित उद्देश्य के लिये भी बपतिस्मा लेना सम्भव है । उदाहरण स्वरूप, आज-कल अधिकांश रूप से यह शिक्षा दी जा रही है कि मनुष्य पहले उद्धार पाये और फिर बाद में बपतिस्मा ले । और फिर, यह भी कहा जाता है कि यदि किसी का उद्धार हो चुका है तो किसी कलीसिया में सम्मिलित होने के लिये बपतिस्मा लेना चाहिये । दोनों ही स्थानों पर, बपतिस्मे का उपयोग अनुचित उद्देश्य के लिये है । कोई भी व्यक्ति पवित्र शास्त्र की शिक्षानुसार इसलिये बपतिस्मा नहीं ले सकता कि उसका उद्धार हो चुका है क्योंकि जब तक कोई पवित्र शास्त्र की शिक्षानुसार बपतिस्मा नहीं लेता उसका उद्धार नहीं होता है । न ही कोई व्यक्ति पवित्र शास्त्र की शिक्षानुसार बपतिस्मा लेकर किसी साम्प्रदायिक कलीसिया में प्रवेश करता है । वास्तव में बात यह है कि इस प्रकार के सभी लोग इस धोखे में हैं कि उनका बपतिस्मा हो चुका है जब कि सच्चाई यह है कि उनका बपतिस्मा नहीं हुआ है । यद्यपि कोई व्यक्ति जल के भीतर भी गाड़ा गया हो, तौ भी इसका अर्थ यह नहीं हो जाता कि वास्तव में ही उसका बपतिस्मा हुआ है । पवित्रशास्त्र-अनुसार केवल एक ही बपतिस्मा है, और बाइबल पर आधारित यह एक बपतिस्मा उचित उद्देश्य के लिये लिया जाता है । और यदि यह उचित उद्देश्य के लिये नहीं है तो यह

केवल वही बपतिस्मा नहीं है, और इस बात के धोखे में न रहें कि वह है। इस प्रकार की घटना में चाहिए कि वह व्यक्ति फिर से जल के भीतर गाड़ा जाए (दफ़न हो)—इसलिये नहीं कि उसका उद्धार हो चुका है, परन्तु इसलिये ताकि उसका उद्धार हो। तब, और केवल तब ही पवित्र शास्त्र अनुसार उसका एक बपतिस्मा होगा।

और अब आइए पवित्र शास्त्र पर आधारित बपतिस्मे का उद्देश्य देखें :

१. विश्वास, पश्चात्ताप, और अंगीकार करने के बाद, मनुष्य को उद्धार पाने के लिये बपतिस्मा लेना चाहिए। स्वयं प्रभु यीशु ने कहा, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६ : १६) मसीह ने उद्धार को बपतिस्मे के बाद रखा, बपतिस्मे से पहिले नहीं। नाश होने के लिये अविश्वास ही पर्याप्त है, परन्तु उद्धार पाने के लिये विश्वास करना तथा बपतिस्मा लेना आवश्यक है। फिर, पतरस ने लिखकर कहा, "और उसी पानी का दृष्टान्त भी अर्थात् बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है, (उस से शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है)।" (१ पतरस ३ : २१)। कौन कह सकता है, कि "बपतिस्मा नहीं बचाता है ?"

२. बपतिस्मा पापों की क्षमा के लिये लिया जाता है। पतरस ने उपदेश देकर कहा, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।" (प्रेरितों २ : ३८)।

३. बपतिस्मा पापों को धोता है। पौलुस से कहा गया था, "अब क्यों देर करता है ? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।" (प्रेरितों २२ : १६)।

४. बपतिस्मा लेकर मनुष्य मसीह के भीतर प्रवेश करता है। पौलुस, रोम तथा गलतिया के लोगों को, लिखकर कहता है : "क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया ?" (रोमियों ६ : ३)। "क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।" (गलतियों ३ : २६, २७)। अब यदि कोई कहे कि उसका उद्धार बपतिस्मा लेने से पहिले हुआ था तो इसका अर्थ यह हुआ कि वह कह रहा है कि उसका उद्धार मसीह के बाहर हुआ है, अर्थात् मसीह के बिना। एक झूठी शिक्षा को मानने से यही परिणाम होता है।

५. बपतिस्मे के द्वारा मनुष्य कलीसिया में प्रवेश करता है। "क्यों कि हम सब ने क्या यहूदी हो, क्या यूनानी, क्या दास क्या स्वतंत्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया।" (१ कुरिन्थियों १२ : १३)। यहां देह का अभिप्राय कलीसिया से है (कुलुसियों १ : १८) और यह। विचाराधीन पवित्र आत्मा का बपतिस्मा नहीं है परन्तु जल का बपतिस्मा है। पवित्र आत्मा का बपतिस्मा कभी भी कलीसिया में मिलाने के दृष्टिकोण से किसी को नहीं दिया गया। इसके विपरीत, आत्मा की अगुवाई के द्वारा, अर्थात् जिस प्रकार से वह वचन के द्वारा कार्य करता है, मनुष्य देह या कलीसिया में सम्मिलित होने के लिये बपतिस्मा लेता है।

६. बपतिस्मा, प्रभु की मृत्यु, उसके गाड़े जाने तथा उसके जी उठने को चित्रित करना है। (१ कुरिन्थियों १५ : १—४)। पापी मनुष्य अपने पापों के लिये मरता है, जिस प्रकार से मसीह क्रूस पर मारा गया। वह बपतिस्मे के जल के भीतर गाड़ा जाता है, जैसे कि मसीह एक कब्र में

गाड़ा गया था । फिर वह प्रभु में एक नयी सृष्टि के समान जल में से बाहर आता है (२ कुरिन्थियों ५ : १७)) जैसे कि मसीह जी उठा तथा कब्र में से बाहर आया । (रोमियों ६ : १—१२) ।

७. बपतिस्मे के परिणाम स्वरूप नया जन्म होता है । यीशु मसीह ने कहा, "जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्में तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता ।" (यूहन्ना ३ : ५) । यहां अभिप्राय आत्मा के बपतिस्मे से नहीं परन्तु जल के बपतिस्मे से है वास्तव में आत्मा की अगुवाई के द्वारा ही जैसे कि वह अपने वचन के द्वारा कार्य करता है, हमें यह शिक्षा मिलती है कि हम राज्य अर्थात् कलीसिया में प्रवेश करने के लिये बपतिस्मा लें । फिर, पढ़िए २ कुरिन्थियों ५ : १७; १ पतरस १ : २१, २२.

केवल बपतिस्मे के द्वारा ही उद्धार नहीं होता है, परन्तु उद्धार प्राप्त करने के लिये बपतिस्मा लेना आवश्यक है । क्या आपका बपतिस्मा पवित्र शास्त्र के अनुसार हो चुका है ? यदि नहीं, तो हमारी प्रार्थना है कि आप शीघ्र ही इस विषय में निश्चय करेंगे ।

क्रूस पर चढ़ाया गया डाकू

सम्पूर्ण बाइबल में पाए जाने वाले विभिन्न प्रसिद्ध व्यक्तियों में एक वह डाकू भी है जो यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया था। विशेषकर विभिन्न सम्प्रदायों के वे लोग, जो यह अस्वीकार करते हैं कि बपतिस्मा मनुष्य की आत्मा के उद्धार से कुछ भी सम्बन्ध रखता है, क्रूस पर चढ़े उस डाकू की ही ओर रहना चाहते हैं। इस बात को प्रमाणित करने के प्रयत्न में कि बपतिस्मा उद्धार के लिये आवश्यक नहीं है, वे उस डाकू की ओर जाते हैं और अकसर पूछे जानेवाले इस प्रश्न को दोहराते हैं, "परन्तु उस डाकू के विषय में आपका क्या विचार है ?" यह प्रश्न नहीं पूछा जाता, कि "प्रभु ने क्या कहा है ?" परन्तु यह कि "क्या उस डाकू का उद्धार बपतिस्मे के बिना नहीं हुआ था ?" यह वास्तव में बड़ी ही शोकजनक बात है कि बुद्धिमान लोग भी इस प्रकार की युक्तियों के द्वारा एक ऐसी शिक्षा को प्रमाणित करने का प्रयत्न करते हैं जिसके विषय में नए नियम में कहीं पर भी नहीं मिलता। जब वे उस डाकू की बात करते हैं तो कोई भी निश्चित रूप से यह कह सकता है कि अब उनके पास कोई अन्य हथियार बाकी नहीं बचा है, और वे सब लोग वास्तव में जब उनके पास बचाव का कोई अन्य मार्ग नहीं होता तथा कोई दूसरा तर्क नहीं होता तो वे अन्त में उस डाकू को ही अपना हथियार बनाते हैं। यह बात कितनी आश्चर्यजनक प्रतीत होती है कि अपने किसी कार्य को उचित प्रमाणित करने के लिये कोई व्यक्ति एक डाकू का उदाहरण दे।

वे लोग जो क्रूस पर चढ़ाए गए उस डाकू का उदाहरण इसलिये देते हैं कि उस डाकू का उद्धार बपतिस्मा लिये बिना हुआ था वास्तव में अनेकों अन्य बातों पर ध्यान नहीं देते :

१. कोई भी व्यक्ति यह प्रमाणित नहीं कर सकता कि उस डाकू का बपतिस्मा हुआ था और न कोई यह प्रमाणित कर सकता है कि उसका बपतिस्मा नहीं हुआ था। लिखा है, "तब यरुशलेम के और सारे यहूदिया के, और यरदन के आस पास के सारे देश के लोग उसके पास निकल आए। और अपने अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उस से बपतिस्मा लिया।" (मत्ती ३ : ५, ६)। सो जिन लोगों ने यूहन्ना से बपतिस्मा लिया था उन में वह डाकू भी सम्मिलित हो सकता है। परन्तु कदाचित् कोई कहे कि वह तो एक डाकू था। यह ठीक है, परन्तु मेरा विश्वास है कि आपने सुना होगा कि कभी कोई व्यक्ति जिसका बपतिस्मा हो चुका था एक चोर या डाकू बन गया, और ऐसे ही इस घटना में भी सम्भव है कि एक बपतिस्मा पाया हुआ व्यक्ति एक चोर या डाकू बन गया। परन्तु विशेष बात यह है, कि कोई भी व्यक्ति उस डाकू का उदाहरण यह कहकर नहीं दे सकता कि उसका उद्धार बपतिस्मे के बिना हुआ था, और इसलिये इस से यह प्रमाणित करने का प्रयत्न करे कि उद्धार प्राप्त करने के लिये आज किसी को बपतिस्मा लेने की आवश्यकता नहीं है।

२. वह डाकू मूसा की व्यवस्था के आधीन रहता था, और इसी प्रकार से यीशु मसीह भी। व्यवस्था के आधीन मसीह ने अनेकों लोगों के पाप क्षमा किए। उसके पास ऐसा करने की सामर्थ थी। सो मैं किसी से उस डाकू के विषय में इस बात के लिये तर्क नहीं करूंगा कि उसका उद्धार हुआ था या नहीं। प्रश्न यह नहीं है। प्रश्न यह है, कि वह कौन सी व्यवस्था के दिनों में रहता था ?

३. वह डाकू मसीह की मृत्यु की दूसरी ओर रहता था। उस समय जब कि उस डाकू ने मसीह से प्रार्थना की थी, प्रभु संसार के लोगों के पापों के कारण मारा नहीं गया था। इसलिये, आज उद्धार के विषय में कोई कैसे उचित रूप से उस डाकू का उदाहरण दे सकता है ?

४. जब यीशु मसीह क्रूस पर मरा तो उसने नए नियम पर अपने लोहू से मुहर लगाई। हम पढ़ते हैं, "क्योंकि ऐसी वाचा मरने पर पक्की होती है, और जब तक वाचा बान्धनेवाला जीवित रहता है, तब तक वाचा काम की नहीं होती।" (इब्रानियों ९ : १७)। इस कारण मसीह यीशु की मृत्यु से पूर्व उसके पास केवल यह कहकर ही लोगों के पाप क्षमा करने का अधिकार था कि "तेरे पाप क्षमा हुए।" किन्तु, जब वह मर गया तो उसकी वाचा पक्की होकर कार्यशील हो गई, अर्थात् लागू हो गई। जब कि इस डाकू से उस ने कुछ भी कहा हो, कन्तु उसने अपने प्रेरितों को आज्ञा देकर कहा, कि "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" अब, यह उसने कब कहा ? अपनी मृत्यु से पूर्व या अपनी मृत्यु के बाद ? निःसंदेह अपनी मृत्यु के बाद। तो फिर प्रेरितों ने क्या प्रचार किया ? उन्होंने केवल वही प्रचार किया जिसकी आज्ञा उन्हें प्रभु ने दी थी। आप एक बार भी कहीं पर यह नहीं देख सकते कि उन्होंने उस डाकू का उदाहरण देकर किसी से कहा हो कि तुम इस प्रकार उद्धार प्राप्त कर सकते हो, परन्तु न ए नियम में, प्रेरितों के काम की पुस्तक में, आप देखेंगे कि उन्होंने, तथा अन्य मसीही लोगों ने, प्रत्येक स्थान पर केवल उन्हीं बातों का प्रचार किया जिनकी शिक्षा उन्हें प्रभु ने दी थी। परिणाम स्वरूप, लोगों ने विश्वास किया, मन फिराया मसीह का अंगीकार किया, और अपने अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लिया।

५. मसीह की वाचा को तोड़ा या बदला नहीं जा सकता। जो कुछ भी उस में मसीह ने सम्मिलित किया है वह उसी में रहेगा, क्योंकि उसने अपने लोहू से उस पर छाप लगाई है। (प्रकाशितवाक्य २२ : १८, १९; गलतियों १ : ६—९)।

६. मसीह की वाचा साधारण तथा स्पष्ट है। जो कोई भी इसे

समझना चाहता है वह समझ सकता है। यदि कोई इसे न समझना चाहे तो उसे सहायता की आवश्यकता पड़ेगी।

७. क्रूस पर चढ़ाए गए उस डाकू के उदाहरण के द्वारा यह नहीं सिखाया जा सकता कि मृत्यु के बिस्तर पर पड़े किसी भी व्यक्ति का उद्धार, यदि उसने प्रभु की आज्ञाओं को न माना हो, हो सकता है। उस डाकू का न्याय उस व्यवस्था के अनुसार होगा जिसके भीतर वह रहा तथा मरा परन्तु आप का और मेरा न्याय मसीह की वाचा के अनुसार होगा। लोग अक़सर इस प्रकार की शोकपूर्ण बातों को गढ़ने के प्रयत्न में लगे रहते हैं जिसके द्वारा वे सिखा सकें कि ऐसी-ऐसी विशेष परिस्थितियों में मनुष्य का उद्धार, बपतिस्मा लिये बिना हो सकता है, परन्तु मसीह की मृत्यु के बाद, बाइबल में इस प्रकार का एक भी उदाहरण नहीं है, जो इस बात को प्रमाणित कर सके। हम केवल वही जानते हैं जो प्रभु ने कहा है, और वह अभी भी कहता है, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६ : १६)। मैंने बाइबल को बहुत पढ़ा तथा अध्ययन किया है, परन्तु मैंने इसके अतिरिक्त कभी किसी अन्य बात को नहीं पाया। यदि आज लोग प्रभु की आज्ञाओं को उसकी इच्छानुसार मानने के लिये उतना ही कड़ा परिश्रम करें जितना कि वे उन्हें तोड़ने व मोड़ने के लिये करते हैं, तो सब का उद्धार प्रभु के उन्ही नियमों के आधार पर होगा जिन्हें उसने दिया है।

इस बात पर ध्यान दें कि हम यह नहीं कह रहे हैं कि केवल बपतिस्मा लेकर ही उद्धार प्राप्त किया जा सकता है या कोई अन्य वस्तु "केवल" किसी का उद्धार करती है। इसके विपरीत, हम इस बात पर बल दे रहे हैं कि मनुष्य को उद्धार प्राप्त करने के लिये वही करना चाहिए जिसकी आज्ञा प्रभु ने दी है, और उसमें बपतिस्मा लेना भी सम्मिलित है, जिस प्रकार से विश्वास तथा मन फिराव उस में सम्मिलित है। हमारा कहना केवल यही है।

बालकों का बपतिस्मा

बालकों का बपतिस्मा धार्मिक सम्प्रदायों में बहुत अधिक प्रचलित है। परन्तु तौभी, इसका वर्णन पूरी बाइबल में कहीं पर भी नहीं हुआ है। इसका आरम्भ प्रभु के लिखित वचन (बाइबल) के मनुष्य तक पहुँचने के कई वर्ष पश्चात् हुआ। ऑरीजेन नाम का व्यक्ति कलीसिया के इतिहास में पहिला लेखक था जिसने बालकों के बपतिस्मे के विषय में शिक्षा दी। छठी शताब्दि में जब कैथलिक कलीसिया की स्थापना हो चुकी थी, इस रीति को स्वीकार कर लिया गया। इसके कई वर्ष पश्चात् बपतिस्मे के स्थान पर जल छिड़कने की प्रथा का उपयोग किया जाने लगा, और अन्य कारणों के अतिरिक्त यह भी एक कारण था जिसके परिणामस्वरूप इस कलीसिया में फूट पड़ी। वे जिन्होंने छिड़काव की प्रथा को स्वीकार करा, और आज भी करते हैं, रोमन कैथलिक कलीसिया कहलाते हैं। तथा वे जिन्होंने इसे अस्वीकार किया, और आज तक जल के भीतर गाड़े जाने की शिक्षा को मानते हैं, वे ग्रीक ऑर्थोडॉक्स कैथलिक कलीसिया के नाम से कहलाने लगे।

बालकों के बपतिस्मे की शिक्षा का प्रचलन इस विश्वास के फलस्वरूप हुआ कि सब मनुष्य पापी दशा में ही उत्पन्न होते हैं। अर्थात् यह शिक्षा दी जाती थी कि सब बालक आदम के पाप के अपराध के साथ उत्पन्न होते हैं। यह तो ठीक है कि सब मनुष्य पाप के परिणाम को भुगतने के लिये उत्पन्न हुए हैं, परन्तु कोई भी मनुष्य किसी अन्य मनुष्य के पाप के कारण कभी अपराधी नहीं गिना गया। १ यूहन्ना ३ : ४ से हम सीखते हैं कि "पाप तो व्यवस्था का विरोध है" एक नया जन्मा हुआ नन्हा बालक यह कैसे कर सकता है ? वह तो व्यवस्था को जानता तक

भी नहीं। बहुत समय पूर्व, परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता ने कहा था, "जो प्राणी पाप करे वही मरेगा, न तो पुत्र पिता के अधर्म का भार उठाएगा और और न पिता पुत्र का ; धर्मी को अपने ही धर्म का फल, और दुष्ट को अपनी ही दुष्टता का फल मिलेगा।" (यहेजकेल १८ : २०)।

प्रभु यीशु ने शिक्षा देकर कहा, "मैं तुम से सच कहता हूं, यदि तुम न फिरो, और बालकों के समान न बनो, तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे।" (मत्ती १८ : ३)। और फिर, "यीशु ने कहा, बालकों को मेरे पास आने दो। और उन्हें मना न करो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है।" (मत्ती १९ : १४)। सो इस प्रकार से प्रभु ने छोटे बालकों के विषय में बताकर प्रगट किया कि वह निष्पाप तथा निष्कलंक हैं और वे पाप के अपराध से स्वतंत्र हैं। निःसंदेह, यदि वे पाप तथा कुकर्म से भरे हुए होते तो वह कभी भी इस बात की शिक्षा नहीं देता कि मनुष्य फिरे और छोटे बालकों के समान बने ताकि वह स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करे। और फिर, यदि वे पापी होते तब वह यूं कभी नहीं कहता कि स्वर्ग के राज्य में इस प्रकार के लोग सम्मिलित हैं जो छोटे बालकों का सा मन तथा स्वभाव रखते हैं।

एक बालक का जन्म जब इस संसार में होता है तो उसमें कोई भी पाप नहीं होता। उसका जन्म एक ऐसे संसार में हो सकता है जो पाप से भरा हुआ है, और कदाचित् उसे पाप के परिणाम को भी सहना पड़े, परन्तु अपने जन्म के समय वह निष्पाप है। वह उस समय तक निष्पाप तथा निष्कलंकता कि दशा मे परमेश्वर के सम्मुख रहता है जब तक वह बड़ा होकर उस आयु में प्रवेश न कर ले कि वह न्याय के योग्य हो। वह अपने कार्यों के लिये केवल तभी ज़िम्मेदार ठरहता है जब वह भले तथा बुरे में अन्तर देख सकता व उसे समझ सकता है। उस

समय, और केवल तभी, इसकी आवश्यकता होती है कि वह प्रभु की आज्ञाओं का पालन करे।

उद्धार की योजना, जिस प्रकार से परमेश्वर के वचन में दर्शाई गई है, केवल उन्हीं लोगों के लिये है जो न्याय के दृष्टिकोण से ज़िम्मेदार सिद्ध हो सकते हैं। छोटे बालकों के लिये प्रभु की ओर से कोई भी उद्धार की योजना नहीं है। वे निष्पाप हैं, और इसलिए परमेश्वर की दृष्टि में निर्दोष हैं। यदि उनकी मृत्य हो जाए तो वे प्रभु के पास जाएंगे। जब दाऊद के बालक की मृत्यु हो गई तो उसने कहा कि वह बालक उसके पास लौटकर नहीं आ सकता परन्तु वह उस बालक के पास जाएगा। (२ शमूएल १२ : २३)।

किस प्रकार से कोई अन्य व्यक्ति, एक अच्छे माता-पिता भी, एक अन्य आत्मा के विषय में कोई निश्चय कर सकते हैं? यह सम्भव कैसे हो सकता है कि एक बालक को किसी ऐसी वस्तु से, जिसके बारे में न वह कोई ज्ञान रखता है और जो उस पर वास्तव में किसी अन्य व्यक्ति की इच्छा से लादी जाए, कोई लाभ पहुंचे ? प्रभु ने अपनी इच्छा को ऐसे लोगों के लिये दिया है जो सत्य को सुन तथा समझ सकते हैं (मत्ती २८ : १६ ; रोमियों १० : १७), जो इतने बड़े हैं कि अपने मन से उस में विश्वास कर सकते हैं (रोमियों १० : १० ; इब्रानियों ११:६), जो इतने समझदार हैं कि अपने पापों से स्वयं मन फिरा सकते हैं (लूका १३ : ३ ; प्रेरितों १७ : ३०), तथा अपने मुंह से कहकर उसका अंगीकार कर सकते हैं (रोंमियों १० : १० ; मत्ती १०:३२), और इस प्रकार से स्वयं अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले सकते हैं (मरकुस १६ : १६ ; प्रेरितों २ : ३८)। क्या एक छोटा बालक यह सब कर सकता है ? वास्तव में नहीं। क्या एक नन्हा बालक प्रार्थना कर सकता है, प्रभु-भोज में भाग ले सकता है, अन्य लोगों को सिखा सकता है, परमेश्वर का स्तुतिगान, इत्यादि कर सकता है ?

आप जानते हैं कि वह यह सब नहीं कर सकता। और तौभी ये सब कार्य एक मसीही को करना बहुत आवश्यक हैं। सो परमेश्वर की इच्छा का प्रकाशन शिशुओं के लिये नहीं हुआ है, परन्तु बड़े (व्यस्कों) लोगों के लिये हुआ है, वे जो परमेश्वर की दृष्टि में न्याय के लिये ज़िम्मेदार हैं, क्योंकि वे पापी हैं।

और अन्त में, बालकों का बपतिस्मा वास्तव में बपतिस्मा है ही नहीं। वह जल का छिड़का या उंडेला जाना हो सकता है, जिस प्रकार से अधिकांश धार्मिक लोग उपयोग में लाते हैं, परन्तु वह बपतिस्मा नहीं है। सर्वप्रथम, बाइबल के अनुसार बपतिस्मे का अर्थ है गाड़े जाना या दफ़न होना। सुनिये कि प्रेरित पौलुस क्या कहता है : "और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिसने उसको मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे।" (कुलुस्सियों २ : १२)। "क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का, बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया ? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।" (रोमियों ६ : ३,४)। और प्रेरितों ८ अध्याय में हमारे पास एक उदाहरण है जहां हम देखते हैं कि फिलिप्पुस खोजे को जल के भीतर ले जाता है। तब क्या होता है ? वह उसे जल के भीतर गाड़ता या दफ़न करता है और इस प्रकार से उसे बपतिस्मा देता है। दूसरे स्थान पर, बपतिस्मा उचित उद्देश्य के लिये होना चाहिए। यीशु मसीह ने शिक्षा दी कि मनुष्य को उद्धार पाने के लिये विश्वास करना तथा बपतिस्मा लेना चाहिए। (मरकुस १६ : १६)। पतरस ने कहा, कि मनुष्य को पापों की क्षमा के लिये मन फिराना चाहिए तथा बपतिस्मा लेना चाहिए। (प्रेरितों २ : ३८)। मसीह ने यह भी शिक्षा दी कि यह पिता, पुत्र, तथा पवित्र आत्मा के नाम से करना चाहिए। (मत्ती

२८ : १९) । और अन्त में याद रखिए, कि केवल एक ही बपतिस्मा है (इफिसियों ४ : ५), और जैसा कि दिखाया गया है, बपतिस्मा का अर्थ केवल गाड़े जाना है, तथा इसके द्वारा मनुष्य मसीह में तथा कलीसिया में सम्मिलित होता है। (गलतियों ३ : २६,२७ ; १ कुरिन्थियों १२ : १३) ।

नहीं, शिशुओं को या छोटे बालकों को बपतिस्मे की कोई आवश्यकता नहीं है परन्तु उनके माता-पिता को चाहिए कि वे प्रभु के आज्ञाकारी बनें। क्या आपका बपतिस्मा पवित्र शास्त्र की शिक्षानुसार हो चुका है ?

क्या फिर से बपतिस्मा लेना चाहिए ?

बाइबल स्पष्टता से सिखाती है कि मनुष्य को अवश्य ही बपतिस्मा लेना चाहिए। इसके अनेकों कारण हैं। बपतिस्मा बचाता है (१ पतरस ३ : २१), यह पापों की क्षमा के लिये है (प्रेरितों २ : ३८), यह मनुष्य को मसीह में मिलाता है (रोमियों ६ : ३,४), और कलीसिया में सम्मिलित करता है। (१ कुरिन्थियों १२:१३)। तौभी, पवित्र शास्त्र स्पष्टता से शिक्षा देता है कि केवल एक ही बपतिस्मा है। (इफिसियों ४ : ५)। अब प्रश्न यह है कि यदि किसी का बपतिस्मा हो चुका है, तो क्या उसे फिर से बपतिस्मा लेना चाहिए ?

वास्तव में यदि किसी का बपतिस्मा पवित्र शास्त्र की शिक्षानुसार हो चुका है तब यह स्वभाविक ही है कि उसे किसी भी परिस्थिति में फिर से बपतिस्मा लेने की कोई आवश्यकता नहीं है। सर्वप्रथम, ऐसा करना असम्भव है। क्योंकि पवित्र शास्त्र की शिक्षानुसार केवल एक ही बार बपतिस्मा लिया जा सकता है।

तो प्रश्न यह उठता है, कि जिसका बपतिस्मा हुआ है क्या उसका बपतिस्मा वास्तव में पवित्र शास्त्र की शिक्षानुसार ही हुआ है ? ऐसे हज़ारों तथा लाखों लोग हैं जिनका विचार है कि उनका बपतिस्मा हो चुका है जबकि वास्तव में उनका बपतिस्मा नहीं हुआ है। ऐसे ही कुछ उदाहरणों का उल्लेख मैं यहां करूंगा।

१. वे जिनके ऊपर बचपन में जल का छिड़काव हुआ था उनका बपतिस्मा कभी नहीं हुआ। जल छिड़कना बपतिस्मा नहीं है। यह केवल एक मनुष्यों की बनाई हुई रीति है तथा इसका आधार पवित्र

शास्त्र नहीं है। इसके विपरीत बाइबल शिक्षा देती है कि बपतिस्मे का अर्थ गाड़े जाना या दफ़न होना है (कुलुस्सियों २ : १२ ; रोमियों ६ : ३,४), तथा जल के भीतर गाड़े जाना है। (प्रेरितों ८ : ३६-३९)। इसके अतिरिक्त, बाइबल कहीं पर भी बालकों के बपतिस्में की शिक्षा नहीं देती। किन्तु, बाइबल की शिक्षानुसार छोटे बालक निष्पाप हैं। (मत्ती १८ : १-३)। और फिर, बाइबल सिखाती है, कि प्रभु की आज्ञा मानने के लिये यह आवश्यक है कि मनुष्य इतना बड़ा हो, अर्थात् समझदार हो, कि वह स्वयं सत्य को सुन सके (रोमियों १० : १७), अपने मन से उसमें विश्वास कर सके (यूहन्ना ३ : १६), अपने पापों से मन फिरा सके (प्रेरितों १७ : ३०), अपने मुंह से यह अंगीकार कर सके कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है (मत्ती १० : ३२), और स्वयं अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले सके। (प्रेरितों २ : ३८)। सो आप इस पर किसी भी दृष्टिकोण से देखें, यदि बचपन में किसी के ऊपर जल छिड़का गया हो तो उसका बपतिस्मा कभी नहीं हुआ है, परन्तु उसे चाहिए कि वह यीशु की आज्ञानुसार बपतिस्मा ले। (मरकुस १६ : १५,१६)।

२. इसी प्रकार से, वे लोग जिनके ऊपर बड़ी अवस्था में जल छिड़का गया हो उनका भी बपतिस्मा पवित्र शास्त्र के अनुसार कभी नहीं हुआ। एक बार फिर से, इस बात को समझिए कि जल छिड़कने का अर्थ बपतिस्मा नहीं है क्योंकि बाइबल की शिक्षानुसार बपतिस्मे का अर्थ है जल के भीतर गाड़े जाना। ऐसा कोई भी मार्ग नहीं है जिसके द्वारा जल छिड़कने को बपतिस्मे के स्थान पर उचित मान लिया जाए। यद्यपि आप एक शब्दकोष में भी देखें कि उसमें बपतिस्मा का अर्थ जल-छिड़कना या -उंडेलना बताया गया है, तौभी आपको यह समझना चाहिए कि उसका लेखक शब्द की परिभाषा उस प्रकार से दे रहा है जैसे कि उसका उपयोग साधारणतः आज-कल किया जाता है। वह इस विषय में बाइबल की परिभाषा देने का प्रयत्न बिल्कुल

नहीं कर रहा है। प्रभु यीशु ने कहा, कि सम्पूर्ण सामर्थ तथा अधिकार उसी के पास है (मत्ती २८ : १८-२०)। उसने जल-छिड़कने या उडेलने की आज्ञा या अधिकार कभी नहीं दिया और वे सब लोग जो इन्हें बपतिस्में के स्थान पर स्वीकार करते हैं वे प्रभु की नहीं परन्तु मनुष्यों की आज्ञाओं पर चल रहे हैं। इसलिये, यदि किसी के ऊपर जल छिड़का गया है तो इसका अर्थ यह है कि उसका बपतिस्मा नहीं हुआ है। अब यदि वह व्यक्ति बपतिस्मा लेता है, तो इसका अर्थ यह नहीं होगा कि वह फिर से दोबारा बपतिस्मा ले रहा है, परन्तु वह पवित्रशास्त्र की शिक्षानुसार वास्तव में बपतिस्मा ले रहा है।

३. वे लोग जो जल के भीतर इसलिये गाड़े गए हैं ताकि वे किसी साम्प्रदायिक कलीसिया के सदस्य बन जाएं, उनका बपतिस्मा पवित्र शास्त्र की शिक्षानुसार नहीं हुआ है। बाइबल का एकमात्र बपतिस्मा जल के भीतर गाड़े जाकर ही लिया जा सकता है परन्तु यही पर्याप्त नहीं है। इसे अवश्य ही उचित उद्देश्य के लिये लेना चाहिए, और यह अवश्य ही पिता, पुत्र तथा पवित्र आत्मा के नाम से लिया जाना चाहिए। (मत्ती २८ : १९,२०)। यदि किसी व्यक्ति का बपतिस्मा बाइबल की शिक्षानुसार हुआ है तो वह कभी भी किसी मनुष्य की बनाई हुई कलीसिया का सदस्य नहीं बनेगा, परन्तु वह अपने पापों की क्षमा के लिये, जल के भीतर गाड़ा जाएगा, व तदानुसार प्रभु की कलीसिया में मिलाया जाएगा, क्योंकि उसने यीशु मसीह के अधिकार से बपतिस्मा पाया है। यदि आज कोई व्यक्ति किसी साम्प्रदायिक कलीसिया में है, यद्यपि वह जल के भीतर भी क्यों न गाड़ा गया हो तो उसे चाहिए कि वह बपतिस्मा ले, परन्तु इस बार उचित उद्देश्य के लिये। केवल तभी उसका बपतिस्मा वास्तव में एकमात्र बाइबल का बपतिस्मा होगा।

सो बपतिस्मा महत्वपूर्ण है और इसे अवश्य ही उचित रूप से लेना चाहिए। नहीं तो वह किसी भी रीति से बपतिस्मा नहीं होगा। मेरा परिचय ऐसे अनेकों लोगों से हुआ है जिनके कथनानुसार उनका

बपतिस्मा हो चुका था, जबकि वास्तव में ऐसा नहीं हुआ था। परन्तु जब उन्होंने सीखा कि जल छिड़कने का अर्थ बपतिस्मा नहीं है, या वास्तव में बपतिस्मा लेकर कोई व्यक्ति किसी साम्प्रदायिक कलीसिया में नहीं मिल जाता, तो वे बाइबल के एक-मात्र बपतिस्मे को लेने के लिये तैयार हो गए। और इसके पश्चात् वे वास्तव में कह सकते थे कि उनका बपतिस्मा हो चुका है। इसी प्रकार की एक घटना का उल्लेख प्रेरितों के काम की पुस्तक के १९ अध्याय में मिलता है।

क्या आपका बपतिस्मा पवित्र शास्त्र की शिक्षानुसार हो चुका है? यदि नहीं, तो "अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।" (प्रेरितों २२:१६)।

विश्वास द्वारा उद्धार

बाइबल निश्चित रूप से सिखाती है कि उद्धार विश्वास के द्वारा होता है। अर्थात् मनुष्य का उद्धार विश्वास से होता है। या हम इसे यूं कह सकते हैं, कि हम विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरते हैं। प्रेरित पौलुस कहता है, "इसलिये हम इस परिणाम पर पहुंचते है, कि मनुष्य व्यवस्था के कामों के बिना विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है।" (रोमियों ३ : २८)। इस पूरे अध्याय को पढ़ने से हमें पता चलता है कि यहां जिस व्यवस्था का उल्लेख हुआ है उसका अभिप्राय मूसा की व्यवस्था से है। फिर, वह आगे कहता है, "सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें।" (रोमियों ५ : १)। इसी प्रकार के बाइबल के अन्य पदों को भी हम देख सकते हैं। सो हम यह अस्वीकार नहीं कर सकते कि विश्वास से उद्धार होता है।

परन्तु जबकि हम यह इन्कार नहीं कर सकते कि विश्वास से उद्धार होता है, हम यह भी नहीं सिखा सकते कि उद्धार केवल विश्वास से ही होता है। साम्प्रदायिक कलीसियाओं में बहुत बड़ी संख्या में लोग बाइबल में से उन पदों को पढ़कर जो विश्वास से उद्धार की शिक्षा देते हैं यह अर्थ लगा लेते हैं कि मनुष्य का उद्धार "केवल" विश्वास से ही होता है। परन्तु यह सच नहीं है। केवल विश्वास से उद्धार नहीं होता। याकूब इस बात का यह कहकर समर्थन करता है, "सो तुमने देख लिया कि मनुष्य केवल विश्वास से ही नहीं, वरन कर्मों से भी धर्मी ठहरता है।" (याकूब २ : २४)।

यदि मनुष्य का उद्धार केवल विश्वास से नहीं होता, तो पवित्र शास्त्र में उन पदों का अर्थ क्या है, जिनमें हम पढ़ते हैं कि विश्वास से उद्धार होता है ? विशेष बात यह है, कि विश्वास का अभिप्राय केवल यही नहीं है कि मनुष्य मानसिक रूप से यीशु मसीह को परमेश्वर का पुत्र स्वीकार कर ले। परन्तु विश्वास इस प्रकार का होना चाहिए जो परमेश्वर के वचन को काम में लाए, प्रभु की इच्छा को माने, प्रभु की सेवा करे, उसकी आक्षाओं पर चले, आज्ञाकारी होकर उसके कार्य करे। इन सब के कारण हमारे विश्वास में कोई घटी नहीं होती, तथा न ही ये बातें परमेश्वर के अनुग्रह को हमारे सामने से हटा देती हैं। इसके विपरीत, परमेश्वर उद्धार को हम तक पहुंचाता है। और हमारी आवश्यकता है कि हम उस उद्धार को स्वीकार करने के लिये विश्वास तथा आज्ञापालन के साथ आगे बढ़ें। जबकि हम वह सब कुछ कर लें जो परमेश्वर चाहता है कि हम उद्धार पाने के लिये करें तौभी हमारा उद्धार विश्वास तथा परमेश्वर के अनुग्रह से ही होता है।

अब देखें कि यह किस प्रकार से हो सकता है। उदाहरण स्वरूप यूहन्ना ३ : १६ को ले लें। यीशु मसीह ने कहा, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" इस पद को पढ़ने के तुरन्त बाद कोई यह कहने के लिये तैयार हो सकता है कि "प्रभु ने तो कहा है कि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" यह ठीक है। परन्तु उसने यह नहीं कहा कि "जो कोई उस पर केवल विश्वास करे" इसके विपरीत हमें पूछना चाहिए, कि "क्या विश्वास करे ?" यह प्रत्यक्ष ही है कि "जो कोई यीशु में विश्वास करे" अब प्रश्न यह है कि क्या आप यीशु में विश्वास करते हैं? कदाचित् आप कहें कि, हां। तब क्या आप उसमें इतना विश्वास करते हैं कि आप उसकी प्रत्येक बात को मानेंगे ? यदि हां, तो आप उसकी आज्ञाओं का पालन करेंगे यदि आप उसमें

इतना विश्वास नहीं करते कि आप उसकी सब शिक्षाओं को मानें तब आपका विश्वास मरा हुआ है।

अब यूहन्ना ३ : ३६ को देखें : "जो पुत्र पर विश्वास करता है अनन्त जीवन उसका है ; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।" सबसे पहले इस पर ध्यान दें कि वह यह नहीं कहता कि "केवल विश्वास।" और फिर यह देखें कि वह कहता है कि जो पुत्र की नहीं मानता वह जीवन को नहीं देखेगा। दूसरी तरह से हम यूं कह सकते हैं कि वह जो पुत्र अर्थात् यीशु में विश्वास करता है या उसकी मानता है अनन्त जीवन उसका है परन्तु वह जो उस पर विश्वास नहीं करता अर्थात् उसकी नहीं मानता वह जीवन को नहीं देखेगा।

रोमियों की पुस्तक में, पौलुस कहता है, "कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जान कर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।" (रोमियों १०:९)। और फिर इस से अगले ही पद में वह कहता है कि विश्वास तथा अंगीकार दोनों ही इसलिये किए जाते हैं। ताकि उद्धार प्राप्त हो सके, इसलिये नहीं कि प्राप्त हो चुका है। यदि कोई व्यक्ति इस प्रकार से अंगीकार तथा विश्वास करे, तो क्या वह प्रभु की प्रत्येक आज्ञा को नहीं मानेगा ? अब आईए प्रेरितों ८ : ३६-३९ में एक उदाहरण को देखें। यहां फिलिप्पुस ने खोजे को यीशु का प्रचार किया, और "मार्ग में चलते-चलते वे किसी जल की जगह पहुंचे, तब खोजे ने कहा, देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है ? फिलिप्पुस ने कहा, यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है : उसने उत्तर दिया मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। तब उसने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उस ने उसे बपतिस्मा दिया। जब वे जल में से निकलकर ऊपर आए, तो प्रभु का आत्मा

फिलिप्पुस को उठा ले गया, सो खोजे ने उसे फिर न देखा, और वह आनन्द करता हुआ अपने मार्ग चला गया।" तो खोजे ने क्या किया ? उसने मसीह का अंगीकार किया तथा अपने सारे मन से उस में विश्वास किया, और अपने विश्वास को प्रभु की आज्ञा मानकर प्रगट किया। इसलिए उसका उद्धार हुआ।

प्रेरितों १६ : ३१ में उस दरोगा से कहा गया था, "प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।" अनेकों लोग इतना ही पढ़कर रुक जाते हैं परन्तु यह एक गलती है। वह दरोगा कौन था ? वह एक अविश्वासी था। इसलिये सबसे पहले यह आवश्यक था कि वह विश्वास लाए। और यह सम्भव करने के लिये कि वह विश्वास लाए, पौलुस तथा सीलास ने उसे तथा उसके घराने को प्रभु का वचन सुनाया। और जब उसके मन में विश्वास उत्पन्न हुआ (रोमियों १० : १६), उसने उनके घाव धोए, अर्थात् पश्चात्ताप व्यक्त किया, और तब उसने अपने सब लोगों समेत तुरन्त बपतिस्मा लिया।

बाइबल के उन सभी पदों को भी याद रखें जिनमें कुछ प्रत्यक्ष आज्ञाएं सम्मिलित हैं। उदाहरणार्थ, मसीह यीशु ने कहा, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६ : १६)। पतरस ने विश्वासी लोगों के एक झुंड से कहा, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।" (प्रेरितों २ : ३८)। अब, क्या प्रभु एक स्थान पर कुछ लोगों से कहता है कि वे केवल विश्वास से ही उद्धार प्राप्त कर सकते हैं, और दूसरी ओर कुछ अन्य लोगों से कहता है कि उन्हें कुछ विशेष आज्ञाओं का पालन करना आवश्यक है ? वास्तव में नहीं। विशेष बात यह है कि यदि कोई वास्तव में प्रभु में विश्वास करता है, अर्थात् उसका विश्वास सच्चा है, तो अवश्य ही प्रभु की आज्ञाओं को मानेगा। अर्थात् वह अपने विश्वास को

प्रमाणित करेगा, प्रगट करेगा। उदाहरणार्थ, इब्रानियों ११ अध्याय को पढ़िए, यह देखने के लिये कि इतिहास में परमेश्वर के लोगों ने अपने विश्वास को किस प्रकार प्रगट किया। और वास्तव में आज परमेश्वर ऐसे विश्वास के अतिरिक्त कुछ और स्वीकार नहीं करेगा।

इस लघु अध्ययन के अन्त में हमारे सम्मुख यह प्रश्न है : आपके पास कितना विश्वास है ? स्मरण रखें कि एक बार प्रभु ने यह प्रश्न पूछा था "जब तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहते हो ?" (लूका ६ : ४६)। यदि आप केवल विश्वास की ही शिक्षा को मानते हैं, तो प्रभु आप से भी यही प्रश्न कर सकता है। बाइबल में से कुछ पदों को चुनकर अलग न कर लें, उन्हें अनुचित रूप से न पढ़े, तथा एक ऐसी शिक्षा को न मानें जिसका वर्णन पवित्र शास्त्र में नहीं मिलता। प्रभु में विश्वास करिए और जो वह कहता है उसे करिए और केवल तभी आपका उद्धार विश्वास से होगा।

नए नियमानुसार एकता

धार्मिक दृष्टिकोण से आज संसार बहुत बंटा हुआ है। हम देखते हैं कि अनेकों लोग कैथलिक तथा प्रोटेस्टैन्ट हैं, अनेकों सम्प्रदाय, संगठन व समुदाय इत्यादि हैं। ये सभी अपने-अपने विचार में एक ही प्रभु की सेवा करने का प्रयत्न कर रहे हैं। इसी के साथ, वे सभी ये भी स्वीकार करते हैं कि कुछ न कुछ अशुद्धि व अनुचित अवश्य है। परिणाम स्वरूप, ऐसा प्रयत्न किया जा रहा है कि किसी प्रकार से इन सब में एकता हो जाए। विभिन्न धार्मिक समुदायों व सम्प्रदायों के अगुओं के बीच में परीषदें, सभाएं, तथा सेमिनार इत्यादि, किए जाते हैं ताकि उनमें कुछ ऐसे उपायों पर विचार किया जाए कि सभी सम्प्रदाय किसी एक ऐसे मार्ग पर सहमत हो जाएं जिस के ऊपर एकता की नीव डाली जाए। यद्यपि जबकि यह बात प्रशंसनीय है कि कम-से-कम ये लोग एकता की आवश्यकता का अनुभव कर रहे हैं, परन्तु वास्तव में एकता तब तक नहीं आ सकती जब तक ये लोग व समुदाय अपने निजि धर्मसारों (पुस्तकों), निजि विश्वासों, नामों, शिक्षाओं, विधियों इत्यादि को छोड़कर पूर्ण रूप से बाइबल की ओर नहीं आ जाते और उसकी शिक्षाओं को नहीं अपनाते। यदि ऐसा किया जाए तो एकता अवश्य ही विद्यमान् होगी।

परमेश्वर फूट तथा झगड़े से बैर रखता है। पवित्र शास्त्र में इसका वर्णन स्पष्ट रूप से हुआ है। उदाहरणार्थ, कुरिन्थुस नाम स्थान पर प्रभु की कलीसिया की एक मन्डली में जब फूट उत्पन्न हुई तो प्रेरित पौलुस ने एकदम इस बात की निन्दा की। इस वर्णन को ध्यान से पढ़ें: "हे भाइयो मैं तुम से यीशु मसीह जो हमारा प्रभु है उसके नाम के द्वारा विनती

करता हूं, कि तुम सब एक ही बात कहो; और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो। क्योंकि हे मेरे भाइयो, खलोए के घराने के लोगों ने मुझे तुम्हारे विषय में बताया है, कि तुम में झगड़े हो रहे हैं। मेरा कहना यह है, कि तुम में से कोई तो अपने आप को पौलुस का, कोई अपुल्लोस का, कोई कैफ़ा का, कोई मसीह का कहता है। क्या मसीह बंट गया ? क्या पौलुस तुम्हारे लिये क्रूस पर चढ़ाया गया ? या तुम्हें पौलुस के नाम पर बपतिस्मा मिला ? मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं, कि क्रिस्पुस और गयुस को छोड़, मैं ने तुम में से किसी को भी बपतिस्मा नहीं दिया। कहीं ऐसा ना हो, कि कोई कहे, कि तुम्हें मेरे नाम पर बपतिस्मा मिला। और मैंने स्तिफ़नास के घराने को भी बपतिस्मा दिया ; इनको छोड़, मैं नहीं जानता कि मैंने और किसी को बपतिस्मा दिया। क्योंकि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने को नहीं, बरन सुसमाचार सुनाने को भेजा है, और यह भी शब्दों को ज्ञान के अनुसार नहीं, ऐसा न हो कि मसीह का क्रूस व्यर्थ ठहरे।" (१ कुरिन्थियों १ : १०-१७)।

उपरोक्त कथन में, आप एकता के लिये पौलुस के निवेदन को देखते हैं। स्वयं फूट के विषय में बोलते हुए उसने उन से ऐसे तीन प्रश्न पूछे जो उनकी मूर्खता पूर्ण दशा को प्रगट करते थे। सर्व प्रथम, उसने पूछा, "क्या मसीह बंट गया ?" वे जानते थे कि नहीं। दूसरा प्रश्न था, "क्या पौलुस तुम्हारे लिये क्रूस पर चढ़ाया गया ?" और वे जानते थे कि प्रभु उनके लिये क्रूस पर चढ़ाया गया था। और फिर, अन्त में, उसने पूछा, "क्या तुम्हें पौलुस के नाम पर बपतिस्मा मिला ?" कदापि नहीं, उन्हों ने किसी मनुष्य के नाम से बपतिस्मा नहीं लिया था। इस कारण, निष्कर्ष यह था कि उन सबको मसीह में एक होना चाहिए। कितना साधारण !

पौलुस आगे कहता है, कि क्योंकि कुरिन्थुस में इस प्रकार की दशा थी, इस कारण, ऐसी स्थिति में उसे इस बात से प्रसन्नता थी कि उसने

स्वयं वहां बहुत ही कम लोगों को बपतिस्मा दिया था, क्योंकि तब वे यूं नहीं कह सकते थे कि उसने उन्हें अपने नाम पर बपतिस्मा दिया था। इसी बात को ध्यान में रखकर, उसने कहा कि वह बपतिस्मा देने को नहीं आया परन्तु सुसमाचार प्रचार करने को आया था। दूसरे शब्दों में उसके आने का उद्देश्य सुसमाचार प्रचार करने का था। तत्पश्चात्, स्वाभाविक ही, लोगों ने सुसमाचार सुनकर बपतिस्मा लिया था, कुछ ने उसके हाथों से तथा अधिकांश ने अन्य लोगों के द्वारा। पौलुस यहां बपतिस्मे के विरोध में नहीं सिखा रहा था। यदि ऐसा होता, तो उसने किसी को भी स्वयं बपतिस्मा न दिया होता; परन्तु परिस्थिति के कारण उसे इस बात से प्रसन्नता थी कि वहां पर उसने स्वयं कुछ ही लोगों को बपतिस्मा दिया था।

रोमियों १६ : १७,१८ में फिर पौलुस ने कहा, "अब हे भाइयो, मैं तुम से बिनती करता हूं, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुमने पाई हैं, फूट पड़ने, और ठोकर खाने के कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो ; और उन से दूर रहो। क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, परन्तु अपने पेट की सेवा करते हैं ; और चिकनी चुपड़ी बातों से सीधे सादे मन के लोगों को बहका देते हैं।" प्रेरित का कहना है कि वे लोग जो फूट डालते हैं उन्हें ताड़ लेना चाहिए तथा उनसे दूर रहना चाहिए। क्यों ? क्योंकि वे प्रभु यीशु मसीह की सेवा नहीं करते परन्तु अपनी चिकनी चुपड़ी बातों के द्वारा सीधे-सादे मन के लोगों को बहकाते हैं। दूसरे स्थान पर, वह यह नहीं कहता कि उनकी प्रशंसा व बड़ाई की जाए, या उनकी बातों को सह लिया जाए। अन्य स्थानों पर भी इस प्रकार का वर्णन मिलता है। इस बात का अनुभव करने की आज हमें कितनी आवश्यकता है कि वे सब जो अपने आपको परमेश्वर की ओर से बताते हैं वास्तव में परमेश्वर की ओर से नहीं हैं, और न ही वे सब जो कहते हैं हम बाइबल सिखा रहें हैं वास्तव में बाइबल की ही शिक्षा दे रहें हैं। उनमें से बहुतेरे धोखे में हैं, और वे

अनेकों अन्य लोगों को भी धोखा दे रहे हैं क्योंकि वे चेतावनी की ओर ध्यान नहीं देते।

यीशु मसीह ने एकता के लिये प्रार्थना की, अर्थात् एक होने के लिये। सुनिये कि उसने क्या कहा, "मैं केवल इन्हीं के लिए बिनती नहीं करता, परन्तु उनके लिये भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हों। जैसा तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हों, इसलिये कि जगत् प्रतीति करे, कि तू ही ने मुझे भेजा।" (यूहन्ना १७ : २०,२१)। यहां मसीह प्रेरितों के लिये प्रार्थना कर रहा था परन्तु उन सबके लिये भी जो उनके प्रचार के द्वारा उस में विश्वास करेंगे। तब वह उन सबके विषय में बोलते हुए कहता है, "कि वे सब एक हों"। कहां तक? उसने कहा, ठीक वैसे ही जैसे कि वह और पिता एक हैं। यह है सच्ची एकता।

फिर, पौलुस के लेखों में हम देखते हैं, कि वहां एकता के लिये एक नीव का वर्णन हुआ है. उसने कहा, "सो मैं जो प्रभु में बन्धुआ हूं, तुम से बिनती करता हूं कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो। अर्थात् सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो। और मेल के बन्ध में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो। एक ही देह है, और एक ही आत्मा ; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है। एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा। और सबका एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर, और सब के मध्य में, और सब में है।" (इफिसियों ४ : १-६)। यहां सब वस्तुएं कितनी-कितनी हैं? केवल एक-एक। एक का अर्थ कितना है? केवल एक। यदि संसार में अनेकों कलीसियांएं, इत्यादि हैं, और यदि उन सब को मिलाकर एक कलीसिया बन सकती है, तो यही बात परमेश्वर तथा प्रभु यीशु मसीह के विषय में भी कही जा सकती है। कितनी मूर्खता पूर्ण बात है।

मेरे मित्रो, परमेश्वर ने हमें केवल एक ही पुस्तक दी है, अर्थात् बाइबल। यदि हम सब इसी पुस्तक को पढ़ें और इसी में विश्वास करें, और इसी की शिक्षाओं को मानें, तो हम सब एक ही शिक्षा पर चलने वाले होंगे, एक ही कलीसिया में मिलाए जाएंगे, एक ही नाम से कहलाएंगे, एक ही तरह से उपासना करेंगे, और एक ही प्रकार का प्रचार करेंगे। बाइबल हमें कभी भी अगल-अलग नहीं करेगी पर हम सबको एक करेगी। मसीह यीशु ने यह प्रार्थना नहीं की थी कि हम में फूट हो परन्तु यह कि हम सब उसमें एक हों। इसलिये, जब हम प्रभु की इच्छा को पूर्ण करेंगे तभी हम सब एक होंगे, इसके अतिरिक्त नहीं।

नए नियम की उपासना

नया नियम तीन प्रकार की उपासना के बारे में बतलाता है। पहिली है अनजानी उपासना। अरियुपगुस के लोगों का वर्णन करते हुए पौलुस कहता है कि वे अनजानी उपासना कर रहे थे, क्योंकि वे लोग मूर्तियों के सामने झुक रहे थे। (प्रेरितों १७:२२-३१)। दूसरी है, व्यर्थ उपासना। यह उपासना निष्फल और व्यर्थ है क्योंकि यह मनुष्यों की शिक्षा पर आधारित है, यीशु मसीह ने कहा, "और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।" (मत्ती १५ : ९)। और तीसरी, सच्ची उपासना है। यह वह उपासना है जिसे परमेश्वर चाहता है। यीशु मसीह ने इस पर बल देकर कहा कि "परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करनेवाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।" (यूहन्ना ४ : २४)। हम इसका ध्यान रखें कि हमारी उपासना का लक्ष्य परमेश्वर ही होना चाहिए। यद्यपि वह हमें इसके लिए बाध्य नहीं करता कि हम उसकी उपासना करें, परन्तु यदि हम चाहते हैं तो अवश्य है कि हम आत्मा और सच्चाई से उसकी उपासना करें। आत्मा से उसकी उपासना करने का अर्थ पूरी ईमानदारी और समझदारी से है। और सच्चाई से उसकी उपासना करने का अभिप्राय यह है कि हमारी उपासना अवश्य ही नए नियम की शिक्षानुसार, जो कि सत्य है, होनी चाहिए। केवल यही एक मार्ग है जिसके द्वारा हमारी उपासना वास्तविक व स्वीकार्य हो सकती है।

जबकि अवश्य है कि परमेश्वर की उपासना हम सच्चाई से करें, तब हमें यह भी मालूम होना चाहिए कि सत्य क्या है। और यह जानने

के लिए हमें स्वयं नए नियम की ही सहायता लेनी चाहिए। क्योंकि यदि प्रभु हम से वास्तव में सत्य के अनुसार उपासना करवाना चाहता है तो उसने अपनी इच्छा 'सत्य' में प्रकट भी की है। नए नियम का अध्ययन करने से हमें ज्ञात होता है कि निम्नलिखित पांच विशेष नियम हैं जिन्हें प्रथम मसीही लोग परमेश्वर की उपासना करने के लिए अपनाते थे।

१. वे परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने के लिये एकत्रित होते थे। प्रेरितों २०:७ में हम पढ़ते हैं कि पौलुस सभा को उपदेश देता है। प्रभु यीशु ने शिक्षा दी कि हमें पवित्र शास्त्र में से ढूंढ़ना चाहिए। (यूहन्ना ५ : ३९)। और तीमुथियुस को पौलूस कहता है कि परमेश्वर के वचन को ठीक रीति से काम में लानेवाला बन। (२ तीमुथियुस २:१५)। निःसंदेह, उस सभा को जिसमें बाइबल अध्ययन न हो हम उपासना सभा नहीं कह सकते। यह उचित भी है क्योंकि इसके द्वारा परमेश्वर हम से बातें करता है।

२. वे परमेश्वर से प्रार्थना करने के लिए एकत्रित होते थे। हम पढ़ते हैं कि प्रथम मसीही, "……प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।" (प्रेरितों २ : ४२)। जबकि पौलुस ने कहा कि निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो। (१ थिस्सलुनिकियों ५ : १७), तब अवश्य ही उपासना भी इसमें सम्मिलित है। और यीशु मसीह ने शिक्षा दी कि मनुष्य को सर्वदा प्रार्थना करनी चाहिए। (लूका १८:१)। प्रार्थना के द्वारा मनुष्य परमेश्वर से बातें करता है, और निःसंदेह, जिस सभा में प्रार्थना सम्मिलित न हो उसे हम उपासना सभा नहीं कह सकते।

३. वे गाकर परमेश्वर की स्तुति करने के लिए एकत्रित होते थे। नए नियम में ऐसे अनेकों पद हैं जो इसका समर्थन करते हैं, परन्तु हम पहिले निम्नलिखित पद पर ध्यान देंगे। "और आपस में भजन और

स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने-अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो।" (इफिसियों ५:१९)। इसी के साथ कुलुस्सियों ३:१६ पर भी विचार करें। इस पर भी ध्यान दें कि संगीत दो प्रकार के होते हैं, अर्थात् कंठ-संगीत और वाद्य-संगीत। पवित्र शास्त्र में हमें कंठ-संगीत का उल्लेख मिलता है, जिसे प्रभु अपनी उपासना में चाहता है। इब्रानियों १३ : १५ से यह स्पष्ट होता है, कि ठंडे व निर्जीव वाद्य-संगीत की अपेक्षा, प्रभु हमारे होठों के फल की इच्छा रखता है जिन से हम उसकी स्तुति करें। स्मरण रहे, हमारी उपासना प्रभु को प्रसन्न करने के लिए ही होनी चाहिए।

४. वे प्रभु-भोज में भाग लेने के लिए एकत्रित होते थे। मत्ती २६: २६-२८ में, यीशु मसीह ने इस भोज को यह कह कर स्थापित किया कि रोटी उसकी देह की प्रतीक है और कटोरा (दाखरस) उसके लोहू का प्रतीक है। १ कुरिन्थियों ११ अध्याय में पौलुस कहता है कि एक मसीही को यीशु मसीह की देह और उसके लोहू को स्मरण करने के लिए रोटी व कटोरे (दाखरस) में भाग लेना चाहिए। प्रेरितों २० : ७ में हमें प्रथम मसीहियों का एक उदाहरण मिलता है कि वे सप्ताह के पहिले दिन रोटी तोड़ने के लिए एकत्रित होते थे। और इब्रानियों १० : २५ में हमें चिताया गया है कि हम इस प्रकार से इकट्ठा होना न छोड़ें।

५. वे अपनी आमदनी के अनुसार देने के लिए जमा होते थे। पौलुस ने कुरिन्थुस में कलीसिया को यह कहकर उपदेश दिया : "सप्ताह के पहिले दिन तुम में से हरएक अपनी आदमनी के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़ा करे, कि मेरे आने पर चन्दा न करना पड़े।" (१ कुरिन्थियों १६ : २)। इस पर ध्यान दें, कि उन्हें सप्ताह के पहिले दिन देना था और अपनी आदमनी के अनुसार देना था। कोई मात्रा निश्चित नहीं थी। यह विषय स्वेच्छा का था, परन्तु उनसे यह आशा की जाती थी कि यदि उनकी आमदनी है तो वे उसके अनुसार दें, और

यह कर्त्तव्य उनका था कि वे इसका निश्चय करें कि उनकी आमदनी क्या है ।

पवित्र शास्त्र यही प्रगट करता है । प्रत्येक प्रभु के दिन, प्रथम मसीही इसी प्रकार से उपासना करने के लिए एकत्रित होते थे । यदि हम मसीही हैं, तो क्या हमें इस में कुछ कमी करनी चाहिए ?

सप्ताह का पहिला दिन

प्रत्येक सप्ताह में सात दिन होते हैं। इनमें से कौन से दिन मसीही लोगों को परमेश्वर की उपासना करनी चाहिए ? क्या कोई दिन उपासना करने के लिये विशेष रूप से निश्चित किया गया है ? बाइबल इस विषय में क्या शिक्षा देती है ?

जिस प्रकार से कि हम सब जानते हैं, कि व्यवस्था के आधीन यहूदी लोगों की उपासना का दिन सब्त का दिन था। अन्य धर्मों में, मुसलमान लोग शुक्रवार को मानते हैं, बौध धर्म के लोग पोया दिवस मनाते हैं, इत्यादि। परन्तु मसीही लोग किस दिन एकत्रित होते हैं ? क्या कोई विशेष दिन निश्चित है ?

हमारे बीच में ऐसे अनेकों लोग हैं जिनके विचार में यहूदी व्यवस्था का पुराना सब्त का दिन अभी भी उचित रूप से उपासना का दिन है। परन्तु याद रखें कि वह दिन वास्तव में यहूदियों को दिया गया था (निर्गमन २०:१-१७), तथा उस व्यवस्था का एक भाग था जिसके आधीन आज हम नहीं रहते (यूहन्ना १ : १७), व जो पूरी हो चुकी और हटाई जा चुकी है। (मत्ती ५:१७-१९)। यीशु मसीह सब्त के दिन का पालन करता था, परन्तु वह मूसा की व्यवस्था के ही भीतर रहा तथा मरा भी। यह याद रखना चाहिए कि यीशु मसीह ने कभी भी किसी को इसे पालन करने की आज्ञा नहीं दी। प्रेरितों ने इसकी आज्ञा कभी नहीं दी, व कभी इसका पालन नहीं किया। पौलुस अनेकों बार सब्त के दिन यहुदी लोगों के मन्दिरों में गया, परन्तु कभी भी उपासना करने के दृष्टिकोण से नहीं। तो फिर वह क्यों गया ? परमेश्वर के वच

को सिखाने के लिये, और प्रेरितों के काम की पुस्तक को पढ़ते हुए आप यह देखेंगे कि एक बार जब यहुदी लोगों को उसके वास्तविक उद्देश्य का पता चल गया कि वह वहां क्यों आता था, तो उन्हों ने उसके वहां आने का विरोध किया।

कुछ लोग कहते हैं, कि उपासना के दिन को कैथलिक कलीसिया द्वारा बदल दिया गया था। कैथलिक लोग यह भी कहते हैं कि उन्हों ने बाइबल को संसार को दिया है। दोनों ही बातें असत्य हैं। बाइबल न तो इस बात की शिक्षा देती है न कहीं दर्शाती है कि वे लोग जो मसीह की वाचा के आधीन रहे उन्हों ने कभी भी सब्त के दिन का पालन किया हो। न ही इतिहास में इसका कहीं वर्णन हुआ है।

यदि एक बार हम परमेश्वर के वचन को ठीक रीति से काम में लाना सीख लें (२ तीमुथियुस २: १५) और मूसा की व्यवस्था तथा मसीह की वाचा में अन्तर को देख लें तो हम जान लेंगे कि व्यवस्था के पूरा होकर समाप्त होने के बाद, और उसी के साथ सब्त का दिन भी, (२ कुरिन्थियों ३ : ६-१६), मसीह की वाचा का आरम्भ हुआ, तथा उसमें उपासना का एक नया दिन भी सम्मिलित था, अर्थात् सप्ताह का पहिला दिन। यह देखने के लिये, कि वे लोग जो अन्य जातियों में से परमेश्वर की ओर फिरकर मसीही बने थे, किस प्रकार से पवित्र आत्मा द्वारा सब्त न मानने व मूसा की अन्य आज्ञाओं पर न चलने के लिये स्वतंत्र किए गए थे, पढ़िए प्रेरितों १५ : १९-२३।

अब इससे पहिले कि आप कुछ ऐसे निष्कर्ष निकालें जो पवित्र शास्त्र के विरोध में हों, मैं सप्ताह के पहिले दिन के विषय में कुछ विशेष बातें आपको बताना चाहता हूं। सर्वप्रथम, सप्ताह का पहिला दिन एक मसीही सब्त नहीं है। न ही यह एक विश्राम का दिन या एक ऐसा दिन है जिसे माना या मनाया जाए। यह कोई पवित्र दिन इत्यादि नहीं है। तब यह क्या है ? यह केवल एक दिन है जिसे प्रभु ने इसलिये अलग

किया है ताकि मसीही लोग एकत्रित होकर उसकी उपासना करें। किसी भी अन्य रीति से यह पुराने नियम के सब्त से समानता नहीं रखता।

सप्ताह के पहिले दिन के विषय में पवित्र शास्त्र क्या शिक्षा देता है ? निम्नलिखित पर ध्यान दें :

१. यीशु मसीह सप्ताह के पहिले दिन कब्र में से जी उठा। (मत्ती २८ : १-७)। और अपने पुनरुत्थान के बाद वह अपने चेलों से भी दो बार सप्ताह के पहिले दिन मिला। (यूहन्ना २० : १, १९,२६)।

२. चेलों को पवित्र आत्मा पिन्तेकुस्त के दिन प्राप्त हुआ, जो कि सप्ताह का पहिला दिन था। (प्रेरितों २ : १-४)। यह हम कैसे जानते हैं ? क्योंकि पिन्तेकुस्त सदैव सप्ताह के पहिले दिन होता था।

३. सबसे पहिली बार सुसमाचार का प्रचार वास्तविक रूप में सप्ताह के पहिले दिन किया गया। (प्रेरितों २)।

४. कलीसिया की स्थापना सप्ताह के पहिले दिन हुई थी। (प्रेरितों २ : ३८-४७)।

५. सप्ताह के पहिले दिन चेले रोटी तोड़ने के लिये इकट्ठे होते थे। "सप्ताह के पहिले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिये इकट्ठे हुए, तो पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर था, उन से बातें कीं और आधी रात तक बातें करता रहा।" (प्रेरितों २० : ७)। यदि सब्त का दिन उपासना का दिन था, तब पौलुस वहां कुछ अतिरिक्त दिनों तक इसलिये क्यों रुका रहा, व "सब्त" के दिन को भी बिता दिया, ताकि अन्य मसीहियों के साथ एकत्रित होकर सप्ताह के पहिले दिन उपासना करे ? निःसंदेह आप जानते हैं, कि क्यों।

६. मसीही लोगों को आज्ञा देकर कहा गया था कि सप्ताह के पहिले दिन वे अपना चन्दा इकट्ठा किया करें। "अब उस चन्दे के

विषय में जो पवित्र लोगों के लिये किया जाता है, जैसी आज्ञा मैंने गलतिया की कलीसियाओं को दी, वैसा ही तुम करो। सप्ताह के पहिले दिन तुम में से हर एक अपनी आमदनी के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़ा करे, कि मेरे आने पर चन्दा न करना पड़े।" (१ कुरिन्थियों १६ : १,२)। स्पष्ट ही है, कि यह चन्दा एक सभा में सब लोगों से एकत्रित किया जाता था, क्योंकि पौलुस के इस आदेश का उद्देश्य यही था कि उस समय जब धन की आवश्यक्ता पड़े तो इकट्ठा करने के लिये कार्य न किया जाए। यदि चन्दे घरों पर ही रखे जाते, तो उसके आने पर सब को एकत्रित करने की आवश्यकता पड़ती। अब यदि उपासना का दिन सब्त का दिन होता, तो पौलुस यह आदेश क्यों देता कि मसीही लोग फिर से सप्ताह के पहिले दिन इकट्ठा हों केवल इसलिये कि वे अपना चन्दा एकत्रित करें? आप में से वे लोग जो सब्त के दिन को मानने का विचार रखते हैं क्या पौलुस के उक्त आदेश को भी इसी प्रकार से मानते हैं? यदि नहीं तो क्यों नहीं?

७. उस दिन को पास आते देखकर मसीही लोगों को एक दूसरे को प्रोत्साहित करना है, तथा एक साथ एकत्रित होना नहीं छोड़ना है। (इब्रानियों १० : २५)। इसका अभिप्राय सप्ताह के पहिले दिन से है। इस दिन के विषय में बोलते हुए यूहन्ना ने इसे प्रभु का दिन कहा। (प्रकाशितवाक्य १ : १०)। यह उपासना का दिन है, अर्थात् अन्तिम के विपरीत प्रभु को प्रथम स्थान देना। (मत्ती ६ : ३३)। वे लोग जो पुराने नियम के आधीन होकर रहना चाहते हैं, व उसे मानना चाहते हैं, उन्हें चाहिए कि वे रोमियों ७ : १-७ ; २ कुरिन्थियों ३ ; इफिसियों २ ; कुलुस्सियों २ ; तथा इब्रानियों ८ : ७-१० को पढ़ें व अध्ययन करें। परन्तु कितना ही अच्छा हो यदि हम इस बात को मानें कि हम आज उस व्यवस्था के आधीन नहीं है जो मूसा के द्वारा दी गई थी परन्तु हम मसीह के नए नियम के आधीन हैं। इसलिये चाहिए कि हम उस दिन उसकी उपासना करें जिसे उसकी वाचा में निश्चित रूप से दिया गया है। प्रभु इस से कम कुछ भी स्वीकार नहीं करेगा।

कौन सी व्यवस्था कार्यशील है ?

पवित्र बाइबल दो मुख्य पुस्तकों में बंटी हुई है—पुराना नियम तथा नया नियम। नियम शब्द का अर्थ व्यवस्था या वाचा है। स्वयं यही बात इसका संकेत है, कि पूर्व युग में अपने लोगों को परमेश्वर ने एक व्यवस्था दी थी, परन्तु बाद में उसने एक नई व्यवस्था दी, जिसके फलस्वरूप पहली व्यवस्था पुरानी हो गई तथा वह कार्यरहित हो गई। इस बात को स्मरण रखना चाहिए कि एक ही समय में ये दोनों व्यवस्थाएं या वाचाएं कार्यशील या प्रबल नहीं हो सकतीं।

बाइबल के अध्ययन में, हम यह प्रत्यक्ष रूप से देखते हैं, कि पुरानी वाचा अर्थात् मूसा की व्यवस्था, अब हमारे ऊपर एक नियम के रूप में कार्यशील या लागू नहीं है, न ही हम उस समय में रहते हैं जिसके लिये वह व्यवस्था दी गई थी। बाइबल में से निर्गमन नामक पुस्तक को पढ़कर हम देखते हैं कि यह परमेश्वर द्वारा मूसा को इस्राएली लोगों के लिये ही दी गई थी।(निर्गमन २०)। अब आईए व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में से इस विषय पर कुछ पढ़ें। "मूसा ने सारे इस्राएलियों को बुलवाकर कहा, हे इस्राएलियो, जो जो विधि और नियम मैं आज तुम्हें सुनाता हूं वे सुनो, इसलिये कि उन्हें सीखकर मानने में चौकसी करो। हमारे परमेश्वर यहोवा ने तो होरेब पर हम से वाचा बान्धी। इस वाचा को यहोवा ने हमारे पितरों से नहीं, हम ही से बान्धा, जो यहां आज के दिन जीवित हैं।" (व्यवस्थाविवरण ५ : १-३)। फिर इसके आगे वह उन्हें दस आज्ञाएं देता है। इसलिये, यह व्यवस्था इस्राएलियों अर्थात् यहूदियों को दी गई थी, गैर यहूदियों को नहीं। अब प्रश्न यह है, कि कितने समय तक यह व्यवस्था कार्यशील रही ? क्या यह सम्भवत:

अभी भी लागू या कार्यशील है ? आईए देखें ।

स्वयं प्रभु यीशु मसीह मूसा की व्यवस्था के दिनों में रहा तथा मरा। इस विषय में, उसने कहा, "यह न समझो, कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूं लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूं; क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूं, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा ।" (मत्ती ५ : १७,१८) । अब, कुछ लोगों का विचार है कि यहां प्रभु व्यवस्था का समर्थन करके यूं कह रहा था कि व्यवस्था का अन्त कभी नहीं होगा तथा वह सर्वदा बनी रहेगी, परन्तु यह सत्य नहीं है। एक नियम या वाचा को दो प्रकार से कार्य में लाया जा सकता है । या तो उसे नाश किया जा सकता है, या फिर उस नियम या वाचा की बातों को स्वीकार करके उन्हें पूरा किया जा सकता है। यीशु मसीह ने कहा, कि वह उसे लोप या नाश करने नहीं आया है, परन्तु उसे पूरा करने के लिये आया है । और फिर आगे, उसने बल देकर कहा, कि उसका कोई भी भाग बिना पूरा हुए नहीं टलेगा । "जब तक" शब्द एक सीमित समय की ओर संकेत करता है। अर्थात् व्यवस्था उस समय तक कार्य-शील रहेगी, जब तक क्या न हो जाए ? जब तक सब कुछ पूरा न हो जाए । यह प्रभु के पुनःआगमन के समय नहीं होना था, या उस समय जबकि सब वस्तुओं का नाश होगा, क्योंकि यह प्रत्यक्ष ही है कि उस समय सभी वस्तुएं नाश होंगी । किन्तु, वह निकट भविष्य में व्यवस्था के पूरा होने के विषय में कह रहा था । तब यह कब हुआ?

क्रूस पर अपनी मृत्यु के कुछ ही क्षण पूर्व प्रभु ने कहा, "पूरा हुआ ।" (यूहन्ना १९ : ३०) । उसकी मृत्यु के तुरन्त बाद, लिखा है, कि मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया । (मत्ती २७ : ५१) । इस प्रकार से व्यवस्था का अन्त हुआ तथा मन्दिर के परदे का फटना इस बात का एक लाक्षणिक प्रमाण था । पौलुस लिखकर बताता है, "और विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर,

और हमारे विरोध में था मिटा डाला ; और उसको क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया।" (कुलुस्सियों २ : १४)। तो मसीह ने व्यवस्था को क्रूस पर कीलों से जड़ा।

यूहन्ना के कथनानुसार, "इसलिये कि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई ; परन्तु अनुग्रह, और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुंची।" (यूहन्ना १:१७)। इन दोनों में जिस विशेष अन्तर को दर्शाया गया है, उस पर ध्यान दें। स्वयं परमेश्वर ने, मूसा, एलिय्याह तथा यीशु मसीह की उपस्थिति में घोषणा करके कहा, "कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं प्रसन्न हूं : इसकी सुनो।" (मत्ती १७ : ५)। परमेश्वर पूर्व युग में, भांति-भांति से, विभिन्न व्यक्तियों के द्वारा बोला, परन्तु अब इस समय में वह हमसे अपने पुत्र के द्वारा बातें करता है। (इब्रानियों १ : १,२)।

इब्रानियों की पत्री का लेखक इस बात को यह कहकर स्पष्ट करता है, "क्योंकि जहां वाचा बान्धी गई है, वहां वाचा बान्धनेवाले की मृत्यु का समझ लेना भी अवश्य है। क्योंकि ऐसी वाचा मरने पर पक्की होती है, और जब तक वाचा बांधनेवाला जीवित रहता है, तब तक वाचा काम की नहीं होती।" (इब्रानियों ९ : १६,१७)। और, वह फिर कहता है, "निदान, वह पहिले को उठा देता है, ताकि दूसरे को नियुक्त करे। उसी इच्छा से हम यीशु मसीह की देह के एक ही बार बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र किए गए हैं।" (इब्रानियों १० : ९,१०)। किन्तु, पहिला क्या था? व्यवस्था, अर्थात् पुराना नियम। और दूसरा क्या था ? नया नियम। इस प्रकार, उसने पुराने नियम को हटा दिया ताकि उसका स्थान नया नियम ले ले।

इसके अतिरिक्त २ कुरिन्थियों ३ अध्याय को पढ़ने के बाद कौन यह स्वीकार नहीं करेगा कि व्यवस्था अब कार्यशील नहीं है? पौलुस वहां कहता है, कि पुरानी व्यवस्था मृत्यु की वाचा थी व जबकि नई वाचा (मसीह का नियम) आत्मा अथवा जीवन की वाचा है। गलतियों की पुस्तक के द्वारा पौलुस इस बात को दिखाने का प्रयत्न करता है कि यह कितनी

बड़ी मूर्खता होगी यदि कोई मसीह को छोड़कर व्यवस्था की ओर फिरे, और वह अपनी बात का अन्त यह कहकर करता है, "तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गए हो।" (गलतियों ५ : ४)। तथा गलतियों ४ : २१-३१ को भी पढ़ लें।

इस कारण, अब हम मूसा की व्यवस्था (पुराने नियम) के आधीन नहीं हैं, परन्तु अब हम मसीह की वाचा अर्थात् नए नियम के आधीन हैं। यही कारण है कि आज हम मसीही बनने या उद्धार पाने के लिये क्रूस पर चढ़ाए गए उस डाकू का उदाहरण नहीं दे सकते। न ही हम दशमांश, उपासना में बाजों का उपयोग, सब्त के दिन, और अनेकों अन्य बातों के लिये पुराने नियम का उदाहरण दे सकते हैं। परन्तु केवल इसलिये कि मूसा की व्यवस्था आज कार्यशील नहीं है इसका अर्थ यह नहीं हो जाता कि हमें हत्या, व्यभिचार इत्यादि करने की छूट मिल गई, क्योंकि नए नियम में भी इन सब की कड़ी निन्दा की गई है—शारीरिक तथा मानसिक दोनों ही रूप में।

पुराना नियम परमेश्वर का वचन है, परन्तु एक वाचा के दृष्टिकोण से अब वह कार्यशील नहीं है। इसके विपरीत, हम आज मसीह की वाचा के आधीन रहते हैं और इस कारण विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर देखते हैं। किसी को व्यवस्था की ओर जाने की क्या आवश्यकता है, जबकि मसीह हमारे लिये मरने को आया ताकि हमारा उद्धार हो और हमें अनन्त जीवन की आशा हो? जब आप अध्ययन करें, तो पौलुस की चेतावनी को ध्यान में रखें, और अब, परमेश्वर के वचन को ठीक रीति से काम में लाएं। (२ तीमुथियुस २ : १५)। यदि आप ऐसा करेंगे तो वाचाओं या नियमों के मध्य अन्तर को देखने में आपको कोई कठिनाई नहीं होगी और न यह जानने में कि आज कौन सी वाचा कार्यशील है।

पवित्र आत्मा के नाप

अनेकों लोगों का विश्वास है कि आजकल भी आश्चर्यकर्म किए जा रहे हैं। इसी प्रकार के लोग यह शिक्षा भी देते हैं कि जिस प्रकार से प्रेरितों ने पहली शताब्दि में पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त किया था आज भी परमेश्वर के सन्तान उसी प्रकार पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त करते हैं। परन्तु इस विषय में यह सब उलझन पवित्र आत्मा के नाप को न समझने के कारण है।

१. मसीह ने पवित्र आत्मा बिना नाप के, अर्थात् असीमित रूप में, प्राप्त किया। "क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बातें कहता है। क्योंकि वह आत्मा नाप-नापकर नहीं देता।" (यूहन्ना ४:३४)। इस कारण, उसके पास सारे कार्य करने की सामर्थ थी। उसने लंगड़ों को चंगा किया, अन्धों को आंखें दीं, गूगों को बोलने की शक्ति तथा बहिरों को सुनने की शक्ति दी, हज़ारों की भीड़ को भोजन खिलाकर तृप्त किया, जल पर चला, समुद्र को शांत किया, तथा मुर्दों को जिलाया। और सबसे बड़ी बात यह कि वह स्वयं मुर्दों में से जी उठा। परन्तु क्यों ? वचन को सिद्ध करने तथा लोगों के हृदयों में विश्वास उत्पन्न करने के लिये। (यूहन्ना २०:३०,३१)।

२. पवित्र आत्मा का बपतिस्मा। पूरे नए नियम में इस से सम्बन्धित हमारे पास केवल दो ही घटनाएं हैं। सबसे पहिले, प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला। (प्रेरितों २)। इस से पूर्व, मसीह ने उन से प्रतिज्ञा करके कहा था कि उन्हें एक सहायक प्राप्त होगा जो उन्हें सम्पूर्ण सत्य का मार्ग दिखाएगा। (यूहन्ना १६ : १३)। मसीह

वापस जानेवाला था, और वह जानता था कि उन प्रेरितों को अगुवाई की आवश्यकता पड़ेगी, सो उसने कहा कि वह उनके पास पवित्र आत्मा को भेजेगा जो उनकी अगुवाई करेगा। तथा जब उन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिल गया तो वे सामर्थ से परिपूर्ण होकर अन्य-अन्य भाषाएं बोलने लगे, उन्हों ने लंगड़ों को चंगा किया, बीमारों को चंगा किया, मुर्दों को जिलाया, और उन्हों ने कुछ अन्य लोगों पर अपने हाथ रखे ताकि वे भी सामर्थ प्राप्त करके आश्चर्यकर्म करें।

दूसरे, कुरनेलियुस तथा उसके घराने को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा इसलिये मिला ताकि इस से यह प्रगट हो जाए कि यहूदी लोगों की ही तरह परमेश्वर को अन्य जाति के लोग भी स्वीकार्य थे। (प्रेरितों १० तथा ११ अध्याय)। जब उन्हों ने उसे प्राप्त कर लिया, और अन्यान्य भाषा बोलकर प्रमाणित भी कर दिया, तो पतरस जानना चाहता था कि, "क्या कोई जल की रोक कर सकता है, कि ये बपतिस्मा न पाएं, जिन्हों ने हमारी नाईं पवित्र आत्मा पाया है ?" (प्रेरितों १० : ४७)। बाद में इस घटना का उल्लेख करते हुए उसने अन्य लोगों से कहा, "जब मैं बातें करने लगा, तो पवित्र आत्मा उन पर उसी रीति से उतरा, जिस रीति से आरम्भ में हम पर उतरा था।" (प्रेरितों ११ : १५)। इस पर ध्यान दें, कि पतरस ने यूं नहीं कहा, कि कुरनेलियुस तथा उसके घराने ने उसी रीति से पवित्र आत्मा प्राप्त किया जिस प्रकार से अन्य विश्वासियों ने, परन्तु इसके विपरीत उसने कहा कि उसने तथा उसके घराने ने उस प्रकार से पवित्र आत्मा पाया जैसे कि उन्हों ने पाया था, अर्थात् प्रेरितों ने। उसने कहा, कि उन्होंने उसी प्रकार से उसे प्राप्त किया जैसे कि आरम्भ में प्रेरितों ने किया था।

३. लोगों पर हाथ रखकर पवित्र आत्मा का दिया जाना। क्योंकि प्रेरित गिनती में थोड़े ही थे, और उनके सामने बहुत ढ़ेर कार्य करने को पड़ा था, इस कारण उन्होंने विभिन्न लोगों पर हाथ रखे ताकि वे पवित्र आत्मा की सामर्थ प्राप्त करें। सबसे पहिले, प्रेरितों ने

सात विशेष व्यक्तियों पर अपने हाथ रखे। (प्रेरितों ६ : ६)। इसके द्वारा, फिलिप्पुस जैसे व्यक्तियों को, सामर्थ मिली कि वे सामरिया में जाकर आश्चर्यकर्म दिखाए। परिणाम स्वरूप, अनेकों लोगों ने सुसमाचार का पालन किया, परन्तु फिलिप्पुस के पास यह योग्यता नहीं थी कि वह उस सामर्थ को उन लोगों को दे सके। बाद में, पतरस तथा यूहन्ना, प्रेरितों को, येरूशलेम से बुलवाया गया और उन्होंने कुछ लोगों पर अपने हाथ रखे ताकि वे पवित्र आत्मा पाएं। (प्रेरितों ८ : १४-१७)।

४. साधारण रूप में पवित्र आत्मा प्राप्त करना। वे लोग जिन्होंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त किया तथा वे जिन्हों ने प्रेरितों द्वारा हाथ रखे जाने से पवित्र आत्मा पाया, उन सबके अतिरिक्त अन्य सभी लोगों ने साधारण रूप में पवित्र आत्मा प्राप्त किया। अर्थात् उन्हें पवित्र आत्मा तो मिला, परन्तु आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ नहीं प्राप्त हुई। पिन्तेकुस्त के दिन पतरस ने लोगों से कहा, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले ; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।" (प्रेरितों २ : ३८)।

स्मरण रखें, कि पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की प्रतिज्ञा केवल प्रेरितों से ही की गई थी, व यह स्वयं प्रभु द्वारा दिया गया था, तथा इसलिये दिया गया था ताकि वह उन्हें सत्य का मार्ग दिखाए, प्रभु के वचन को प्रमाणित करे, तथा नया नियम लिखने में उनकी अगुवाई करे। इसके अतिरिक्त, कुरनेलियुस तथा उसके घराने की घटना में, उन्होंने जल का बपतिस्मा लेने से पूर्व इसे पाया।

फिर, हाथ रखकर पवित्र आत्मा देने के क्रम में केवल प्रेरितों के पास ही यह शक्ति थी कि वे इसे दें। इस कारण जब सारे प्रेरितों की मृत्यु हो गई, तथा उनकी भी मृत्यु हो गई जिनके ऊपर प्रेरितों ने अपने हाथ रखे थे, तो पवित्र आत्मा की सामर्थ से आश्चर्यकर्म करनेवाल

कोई भी व्यक्ति बाकी नहीं बचा। वास्तव में, उस समय तक अब इसकी कोई आवश्यकता भी नहीं रह गई थी, न ऐसे लोगों की, क्योंकि नए नियम का लिखा जाना पूरा हो चुका था, और वह लोगों को दिया जा चुका था, तथा उसका उद्देश्य लोगों को सत्य का मार्ग दिखाने का था। (याकूब १:२५; २ तीमुथियुस ३:१६,१७)।

परन्तु फिर उन लोगों के विषय में हम क्या कह सकते हैं, जो आज कहते हैं कि हमें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त हुआ है तथा हम आश्चर्यकर्म कर सकते हैं? वे धोखे में हैं, अज्ञानी हैं, तथा झूठे हैं। वे तो परमेश्वर की इच्छा तक को भी पूरा नहीं कर रहे हैं, तो फिर पवित्र आत्मा उनकी कैसे अगुवाई कर सकता है? क्या पवित्र आत्मा उनकी अगुवाई ऐसी कलीसियाओं के सदस्य बनने में करेगा जिनका नाम तक बाइबल में कहीं नहीं मिलता, तथा उनकी अगुवाई करेगा कि वे मनुष्यों के नामों से कहलाएं, इत्यादि? कदापि नहीं। यदि उनके पास वास्तव में सामर्थ होती जिस प्रकार से कि वे कहते हैं, तो वे उन सब कार्यों को कर सकते थे जिन्हें यीशु मसीह तथा उसके प्रेरितों ने किया। परन्तु वास्तव में, वे बातें करने तथा बड़ी-बड़ी डींगें मारने के अतिरिक्त और कुछ नहीं करते और न ही कर सकते हैं। मेरे मित्र, ऐसे लोगों की झूठी शिक्षाओं के धोखे में न आईए, परन्तु बाइबल का अध्ययन कीजिए और उसी की अगुवाई में चलिये।

अन्य भाषा

धार्मिक दृष्टिकोण से हमारे बीच में अनेकों ऐसे लोग हैं जो कहते हैं कि वे अन्यान्य भाषाओं में या एक अन्य भाषा में बोल सकते हैं। इस बात का अर्थ वे यह कहकर समझाते हैं कि परमेश्वर का आत्मा उनके द्वारा बोलता है। वे आगे कहते हैं, कि उस समय उन्हें यह ज्ञात नहीं रहता कि वे क्या बोलते हैं, न वे लोग जो उन्हें सुनते हैं कुछ समझ पाते हैं कि वे क्या कह रहे हैं, परन्तु केवल परमेश्वर ही जानता है। परन्तु बाइबल में इस प्रकार की बात का कहीं उल्लेख नहीं मिलता। ऐसे लोग केवल एक धोखे में हैं और वे किसी भी भाषा में नहीं बोल रहे हैं, एक अन्य भाषा की बात तो अलग रही, वे केवल मुंह से आवाज़ निकालते हैं, व्यर्थ का शोर मचाते हैं, और बड़बड़ाते है, व इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं करते।

बाइबल में हमें अन्य भाषा का वर्णन मिलता है (१ कुरिन्थियों १४ : २), परन्तु तौभी उस व्यक्ति के लिये जो उसे बोलता है यह एक अन्य या अज्ञात भाषा नहीं है। उक्त घटना में, बोलनेवाला समझता है कि वह क्या कह रहा है परन्तु सुननेवाले नहीं समझते—सो इस प्रकार से उसका समझना फलदायक सिद्ध नहीं होता। परिणाम स्वरूप वह परमेश्वर से बोलता है अपनी ही उन्नति के लिये (समझने के द्वारा), परन्तु उसके सुननेवालों के लिये उसका बोलना व्यर्थ ठहरता है क्योंकि उनके लिये उसकी भाषा एक अन्य भाषा होती है, जिसे वे नहीं समझ सकते। (१ कुरिन्थियों १४ : ४)।

हम जानते हैं कि लेखक का "भाषा" से अभिप्राय उन शब्दों से है जिन्हें समझा जा सकता है, क्योंकि प्रेरित पौलुस के कथनानुसार,

"ऐसे ही तुम भी यदि जीभ से साफ़-साफ़ बातें न कहो, तो जो कुछ कहा जाता है, वह क्योंकर समझा जाएगा ? तुम तो हवा से बातें करनेवाले ठहरोगे।" (१ कुरिन्थियों १४ : ९)। और फिर, वह आगे कहता है, "इसलिये यदि मैं अन्य भाषा में प्रार्थना करूं, तो मेरी आत्मा प्रार्थना करती है, परन्तु मेरी बुद्धि काम नहीं देती। सो क्या करना चाहिए ? मैं आत्मा से भी प्रार्थना करूंगा, और बुद्धि से भी प्रार्थना करूंगा ; मैं आत्मा से गाऊंगा, और बुद्धि से भी गाऊंगा।" (१ कुरिन्थियों १४ : १४,१५)। अन्य भाषा से यहां अभिप्राय ऐसी भाषा से है जिसे वे लोग, बोलने वाले के अतिरिक्त, न समझ सकें जो सुन रहे हैं। इसी का उल्लेख करके पौलुस कहता है कि वह प्रार्थना तो कर रहा होगा परन्तु वे जो उसकी प्रार्थना को सुन रहे होंगे उनके लिये उसका कोई अर्थ न होगा। और यही बात गाने के विषय में भी होगी। सो वह निश्चय करके कहता है कि वह आत्मा तथा बुद्धि दोनों से प्रार्थना करेगा और गाएगा भी।

यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि जब पौलुस भाषाओं का वर्णन करता है तो उसका अर्थ उन भिन्न-भिन्न भाषाओं से है जो विभिन्न स्थानों पर बोली जाती हैं, और इसलिये जब वह अन्य भाषा कहता है तो उसका अर्थ एक ऐसी भाषा से है जिसे अन्य लोग न समझ सकें। इसी विचार को दृष्टि में रखकर, वह आगे कहता है, "नहीं तो यदि तू आत्मा ही से धन्यवाद करेगा, तो फिर अज्ञानी (वह जो उपयोग में लाई जानेवाली उस भाषा को समझने में असमर्थ है) तेरे धन्यवाद पर आमीन क्योंकर कहेगा ? इसलिये कि वह तो नहीं जानता, कि तू क्या कहता है ? तू तो भली भांति से धन्यवाद करता है, परन्तु दूसरे की उन्नति नहीं होती। मैं अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि मैं तुम सब से अधिक अन्यान्य भाषा में बोलता हूं। परन्तु कलीसिया में अन्य भाषा में दस हज़ार बातें कहने से यह मुझे और भी

अच्छा जान पड़ता है, कि औरों के सिखाने के लिये बुद्धि से पांच ही बातें कहूं।" (१ कुरिन्थियों १४ : १६-१९)।

और फिर, आगे वह उन्हें याद दिलाकर कहता है, "व्यवस्था में लिखा है, कि प्रभु कहता है, मैं अन्य भाषा बोलनेवालों के द्वारा, और पराए मुख के द्वारा इन लोगों से बातें करूंगा तौभी वे मेरी न सुनेंगे। इसलिये अन्यान्य भाषाएं विश्वासियों के लिये नहीं, परन्तु अविश्वासियों के लिये चिन्ह हैं, और भविष्यद्वाणी अविश्वासियों के लिये नहीं परन्तु विश्वासियों के लिये चिन्ह है।" (१ कुरिन्थियों १४ : २१,२२)।

और फिर सुनिये, "यदि अन्य भाषा में बातें करनी हों, तो दो दो, या बहुत हों तो तीन-तीन जन बारी-बारी बोलें, और एक व्यक्ति अनुवाद करे। परन्तु यदि अनुवाद करनेवाला न हो, तो अन्य भाषा बोलनेवाला कलीसिया में शांत रहे, और अपने मन से, (अर्थात्, बोलनेवाला अपनी भाषा को स्वयं समझ सकता है), और परमेश्वर से बातें करे।" (१ कुरिन्थियों १४ : २७,२८)। अन्य भाषा का अभिप्राय उस भाषा से है जिसे सुननेवाला समझने में असमर्थ हो। सो यदि ऐसे लोग उपस्थित हों जो किसी अन्य भाषा में बोलें, तो उन्हें चाहिए कि वे एक-एक करके बोलें, और जो वे कहें उसका अनुवाद करवाएं। परन्तु यदि कोई ऐसा व्यक्ति वहां उपस्थित न हो जो अनुवाद कर सके, तो उन लोगों को शान्त रहना चाहिए और स्वयं से तथा परमेश्वर से बातें करनी चाहिएं। दूसरे शब्दों में, उन्हें चुपचाप अपने मन में प्रार्थना करनी चाहिए।

अब, अन्यान्य भाषाओं में, बोलने की सामर्थ किसके पास थी? प्रेरितों के पास थी, क्योंकि प्रभु ने उन्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देने की प्रतिज्ञा की थी तथा फलस्वरूप अन्य चिन्हों के अतिरिक्त उनमें यह एक और विशेषता थी कि वे अन्यान्य भाषाओं में बोल सकते थे, (प्रेरितों २ : ६)। कुरनेलियुस तथा उसके घराने ने भी पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया था, जिसके कारण यह प्रगट हुआ कि परमेश्वर को

अन्य जाति के लोग भी स्वीकार्य थे, तथा उन्हों ने भी अन्यान्य भाषाओं में बातें कीं। (प्रेरितों १०)। इसके अतिरिक्त, जिन लोगों के ऊपर प्रेरितों ने अपने हाथ रखे उन्हों ने पवित्र आत्मा प्राप्त किया तथा परिणाम स्वरूप उन्हों ने भी अन्यान्य भाषाओं में बोलने की सामर्थ प्राप्त की। (प्रेरितों १९ : १-७)। तब क्या कुछ अन्य लोग भी थे ? यदि थे, तो बाइबल उनके बारे में कहीं नहीं बताती। परन्तु इन लोगों के पास यह शक्ति क्यों थी ? इसलिये ताकि अन्यान्य भाषाओं को सीखने में समय व्यर्थ करने तथा अनुवादकों की आवश्यक्ता को अनुभव किए बिना वे संसार के विभिन्न भागों में जाकर वहां के लोगों को उन्हीं की भाषाओं में सुसमाचार सुना सकें। ऐसा कब तक होना सम्भव था ? जब तक कि नया नियम न लिखा जाता व लोगों के हाथों में न आ जाता। पौलुस ने कहा था कि ऐसा समय आएगा जब कि भाषाएं (आश्चर्यपूर्ण) समाप्त हो जाएंगी। (१ कुरिन्थियों १३ : ८-१० ; याकूब १ : २५)। इसलिये आश्चर्यजनक ढंग से अन्यान्य भाषाओं में बोलने का क्रम अब समाप्त हो चुका है। और न ही इसकी अब कोई आवश्यकता है। क्योंकि बाइबल संसार में लोगों को दी जा चुकी है।

वे लोग भी जो आज कहते हैं कि वे अन्यान्य भाषाओं में बोल सकते हैं कुछ विशेष बातों को ध्यान में नहीं रखते, अर्थात् :

१. पवित्र आत्मा के बपतिस्मे को देने की प्रतिज्ञा उनसे नहीं की गई थी।

२. क्योंकि केवल प्रेरित लोग ही इस योग्य थे कि उनके हाथ रखे जाने से अन्य लोग पवित्र आत्मा प्राप्त करते थे, और जबकि अब सारे प्रेरित मर चुके हैं, इसलिये आज कोई भी व्यक्ति पवित्र आत्मा इस रीति से (आश्चचर्यजनक) प्राप्त नहीं कर सकता।

३. अन्यान्य भाषाओं का अभिप्राय अपरिचित भाषाओं से होता था।

४. अन्यान्य भाषाओं में अविश्वासियों के लिये बोला जाता था। (परन्तु आज इसका उपयोग उनकी सभाओं में, अधिकांश रूप में, विश्वासियों के लिये ही किया जाता है) !

५. आज यदि उक्त भाषा का बोलनेवाला स्वयं ही नहीं जानता कि वह क्या कह रहा है, तथा वे भी जो उसकी सुनते है नहीं जानते कि क्या कहा जा रहा है, तब वे कैसे यह आशा कर सकते हैं कि परमेश्वर उसे समझ लेगा ? यह बात अनुचित है तथा नए नियमनुसार नहीं है। इस कारण, प्रत्यक्ष ही है कि आज लोग उस प्रकार की आश्चर्यजनक शक्ति नहीं रखते।

६. वे जो आज कहते हैं, कि हम अन्यान्य भाषाओं में बोल सकते हैं, वे प्रेरितों की तरह अन्य-अन्य भाषाओं में नहीं बोल सकते, जैसे कि उन्होंने पिन्तेकुस्त के दिन बोलीं, और सब ने उन्हें समझा। आज जब उनके बड़े-बड़े प्रचारक भारत में आते हैं, तो उनके प्रचार को अनुवाद करने के लिये उन्हें अनुवादकों की आवश्यकता पड़ती है, जैसे कि हमें जो "भाषाओं में बोलने के दान" के प्राप्त होने की डींग नहीं मारते। सो, इसलिये आज बोली जानेवाली अन्यान्य भाषाएं किसी भी रीति से नए नियम में उल्लिखित भाषाओं से समानता नहीं रखतीं।

सो, प्रत्यक्ष में, इसका अर्थ यह है कि अनेकों लोग आज धोखे में हैं। हम आप से निवेदन करके कहते हैं कि आप अपनी बाइबल को अवश्य ही पढ़ें तथा उसका अध्ययन करें ताकि इस विषय में आप को सच्चाई का ज्ञान प्राप्त हो सके। परन्तु किसी भी रीति से इस विचार के धोखे में न रहें कि आपके पास कोई आश्चर्यजनक वस्तु है, या किसी अन्य व्यक्ति के पास कुछ इस प्रकार की शक्ति है, क्योंकि आज वास्तव में परमेश्वर की ओर से लोगों को इस प्रकार की शक्ति नहीं दी गई है।

धार्मिक नाम तथा पदविएं

मनुष्य व्यर्थ है। वह बड़ाई, आदर, तथा प्रतिष्ठता से प्रेम करता है। वह चाहता है कि लोग उसकी ओर आकृषित हों, उसे पदविओं से प्रेम है, तथा वह सामर्थी होना चाहता है। यदि वह एक मसीही है, या मसीह के सुसमाचार का एक शिक्षक है, तथा केवल वही है जो परमेश्वर चाहता है, तो वह इसी में संतुष्ट नहीं होता। वह और कुछ होने की इच्छा रखता है। इसी लालसा की पूर्ति के लिये, मनुष्य ने अनेकों नाम, विधिएं, तथा अपनी इच्छानुसार अनेकों अधिकारों की रचना कर ली है। यही कारण है कि आज आप देखते हैं कि अनेकों लोग ऐसे नामों तथा पदविओं द्वारा जाने जाते हैं और इस प्रकार के कार्यों को करने का अधिकार रखते हैं जिनका परमेश्वर के साथ कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। इसके विपरीत, वह इनके विरोध में बोलता है। आईए, उन में से कुछ के विषय में देखें :

१. **रेवरेन्ड**। इस पदवी का न केवल अधिकांश धार्मिक अगुओं द्वारा उपयोग ही किया जाता है, परन्तु वे इसे पर्याप्त न समझते हुए कुछ और आगे बढ़ जाते हैं, तथा "राईट रेवरेन्ड", "मोस्ट रेवरेन्ड" जैसे शब्दों का उपयोग करने लगते हैं। उनमें से अधिकांश लोग, तथा अधिकांश रूप से वे लोग भी, जो इन पदविओं वा नामों द्वारा उन लोगों का सम्मान करते हैं, इस बात से अनभिज्ञ हैं कि रेवरेन्ड शब्द का उल्लेल पूरी बाइबल में (अंग्रेजी में) केवल एक ही स्थान पर हुआ है और वहां भी इसका उल्लेख परमेश्वर के लिये हुआ है। परमेश्वर के बारे में बोलते हुए, वहां दाऊद कहता है, "उसका नाम पवित्र और रेवरेन्ड है।" हिन्दी की बाइबल में इसका अनुवाद और

भी शुद्ध है, लिखा है, "उसका नाम पवित्र और भय योग्य है।" (भजन संहिता १११ : ९)। अब, क्या आप परमेश्वर हैं ? आप में से वे लोग जो अपने प्रचार को रेवरेन्ड (पादरी) कहते हैं आपका क्या विचार है ? क्या वह परमेश्वर है ? इस शब्द का इस प्रकार से उपयोग करनेवाले प्रत्येक व्यक्ति के लिये यह बड़ी लज्जा व शर्म की बात है। इसका सम्बन्ध परमेश्वर से है, हम इसे परमेश्वर से छीनने का प्रयत्न न करें।

२. **फ़ादर**। हज़ारों की संख्या में विभिन्न धार्मिक अगुवे फ़ादर कहलाते हैं। वे केवल फ़ादर (पिता) ही नहीं, परन्तु पवित्र फ़ादर (होली फ़ादर) इत्यादि कहलाते हैं। और वे जो इस प्रकार की पदवी अपने ऊपर रखते हैं यदि उन्हें कोई व्यक्ति किसी अन्य नाम इत्यादि से सम्बोधित करके बुलाए तो वे इसे बड़े निरादर की बात समझते हैं। इन सब लोगों को चाहिए कि वे यीशु मसीह की इस बात को याद रखें, "और पृथ्वी पर किसी को अपना पिता (फ़ादर) न कहना, क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो स्वर्ग में है।" (मत्ती २३ : ९)। इसी स्थान पर उस ने रब्बी तथा स्वामी की पदविओं को भी, जिनका उपयोग मनुष्य करते हैं, अनुचित ठहराया। यदि कोई इन नामों या पदविओं का उपयोग करता है तो वह इस विषय में प्रभु का स्पष्ट विरोध करता है।

३. **पास्टर**। साम्प्रदायिक कलीसियाओं के प्रचारक अधिकांश रूप से अपने लिये "पास्टर" शब्द का उपयोग करते हैं ताकि अन्य लोग जानें कि वे किसी कलीसिया के प्रचारक हैं। परन्तु पवित्र शास्त्र में पास्टर शब्द का उल्लेख इस प्रकार से कहीं नहीं हुआ। हिन्दी की बाइबल में पास्टर को अध्यक्ष कहा गया है, तथा हम अध्यक्षों के बारे में पढ़ते हैं, अध्यक्ष के लिये नहीं। इसके अतिरिक्त, पहिली शताब्दि में वे लोग जो अध्यक्ष (पास्टर) बनते थे वे इस कार्य पर इसलिये नियुक्त

किए जाते थे क्योंकि वे बाइबलानुसार १ तीमुथियुस ३ तथा तीतुस १ अध्याय में उल्लिखित कुछ विशेष योग्यताओं को अपने भीतर रखते थे। वे लोग बिशप, एल्डर्स, रखवाले, प्रेस्बायटर्स इत्यादि भी कहलाते थे। फिर, प्रत्येक मन्डली में एक या दो से अधिक की संख्या में पास्टर अथवा बिशप हुआ करते थे। परन्तु धार्मिक दृष्टिकोण से जिस प्रकार से आज इस पद का उपयोग किया जाता है वह व्यर्थ तथा पवित्रशास्त्र के विरोध में है।

४. **डॉक्टर**। केवल इसलिये कि यदि कोई उच्च शिक्षा प्राप्त करके डॉक्टर की पदवी प्राप्त कर ले इसका अर्थ यह नहीं हो जाता कि वह इसका उपयोग एक धार्मिक पदवी के दृष्टिकोण से करे। और यदि ऐसा किया जाता है तो यह अनुचित है। अधिकार तथा ऊंचे पदों को प्राप्त करने के विचार की प्रभु यीशु ने कड़ी निन्दा की थी। (मत्ती २० : २५-२८)।

५. **पोप**। यह एक और पदवी है जिसका पवित्र शास्त्र से कोई सम्बन्ध नहीं है। परमेश्वर, यीशु मसीह, तथा पवित्र शास्त्र कहीं भी न ऐसा कहते न सिखाते हैं कि कोई भी मनुष्य कलीसिया में सिर (प्रधान) का अधिकार रखे, तथा पोप की पदवी स्वीकार करे। निश्चय ही यह पदवी परमेश्वर की ओर से नहीं है। पवित्र शास्त्र के अनुसार मसीह कलीसिया का सिर है (कुलुस्सियों १ : १ : १८ ; इफिसियों १ : २२,२३) किसी भी मात्र मनुष्य को कलीसिया का सिर मान लेने का अर्थ यह होगा कि मसीह जीवता नहीं, परन्तु मरा हुआ है।

पवित्र शास्त्र अनुसार न केवल उपरोक्त वर्णित पदविएं ही अनुचित हैं परन्तु सैंकड़ों अन्य भी इसी श्रेणी में गिनी जा सकती हैं। उदाहरणार्थ, इस प्रकार के नाम या पदविएं: परमेश्वर की माता, प्रीस्ट, बिशप, आर्चबिशप, प्रेसीडेन्ट, पास्टर इनचार्ज, इत्यादि। ये वे नाम तथा पदविएं हैं जिनका उपयोग व्यक्तिगत रूप से, परमेश्वर के अधि-

कार के बिना, लोगों के लिये किया जाता है। परन्तु मनुष्यों द्वारा रचित इस प्रकार के सभी नामों व पदविओं की पवित्र शास्त्र में निन्दा की गई है। लोग यह क्यों नहीं देखते ? कौन चाहेगा कि वह प्रभु की इच्छा का खुल्लम-खुल्ला विरोध करे ? हम केवल एक ही निष्कर्ष निकाल सकते हैं, और वह यह, कि उनका विरोध तथा आज्ञा न मानना अपनी बड़ाई तथा प्रशंसा करवाने की इच्छा के कारण है।

धार्मिक दृष्टिकोण से आज इतनी अधिक फूट क्यों है ? हां, यही एक कारण है। परन्तु क्या आप सोचते हैं कि बहुतेरे धार्मिक अगुए इस प्रकार के नामों तथा पदविओं को अपने ऊपर रखना छोड़ देंगे, यदि ऐसा करने से एकता हो जाए ? अधिकांश रूप से ऐसा नहीं करेंगे। वे अभिमान से परिपूर्ण हैं। वे अपने-आप से बहुत प्रेम करते हैं। इसीलिये जो कुछ भी यहां लिखा जा रहा है वह इस दृष्टिकोण से नहीं कहा जा रहा है कि वे धार्मिक अगुए जो इन बातों को पढ़ेंगे, पढ़कर उन अनुचित नामों व पदविओं को त्यागने के लिये तैयार हो जाएंगे, क्योंकि लगभग सभी ऐसा नहीं करेंगे। इसके विपरीत, यह सब इसलिये लिखा जा रहा है ताकि आप में से वे लोग जो अज्ञानता से इस प्रकार की अशुद्धियां कर रहे हैं गम्भीरता से इस पर विचार करें। कदाचित् आप इन बातों के बारे में बिल्कुल अज्ञान हो, न ही कभी आप ने इस विषय पर विचार किया हो, परन्तु अपने जीवन में ऐसे चल रहे हों जैसे एक अन्धा किसी दूसरे अन्धे के पीछे चले, और आरम्भ से अन्त तक इस प्रकार के अनुचित नामों व पदविओं इत्यादि का उपयोग कर रहे हों। तथा यूं अपने आपको "लेईटी" स्वीकार करके "क्लेर्जी" (याजक वर्ग) लोगों का इस प्रकार के अनुचित नामों इत्यादि के द्वारा आदर व सम्मान कर रहे हों। जबकि लेईटी तथा क्लेर्जी भी पवित्र शास्त्र के अनुसार अनुचित हैं। मैं आपसे निवेदन करके कहता हूं कि आंखें खोलिए और देखिए कि आप क्या कर रहे हैं। मेरे कहे की परवाह न करके, बाइबल को उठाकर पढ़िए और

देखिए कि आप कौन से स्थान पर रेवरेन्ड पतरस, पादरी याकूब, डॉक्टर पौलुस, पास्टर यूहन्ना, इत्यादि के बारे में पढ़ते हैं। देखिए, यदि आप कहीं पढ़ सकते हैं, कि सुसमाचार का कोई भी प्रचारक कभी भी फ़ादर (पिता) या पोप इत्यादि कहलाया हो। पवित्र शास्त्र में से देखिये यदि आप कहीं पढ़ सकें कि प्रचारक लोग कभी भी क्लेर्जी कहलाए हों तथा सदस्य लेईटी। और यदि आपको ऐसा कहीं मिल जाए, तो आपको सच्चाई मिल जाएगी।

तो फिर, धार्मिक अगुवे क्या कहलाते थे? प्रचारक, शिक्षक, उपदेशक, अध्यक्ष, मसीही तथा भाई। और प्रभु की कलीसिया मसीह के नाम से कहलाती थी। सो जबकि हम पवित्र शास्त्र के अनुसार हो सकते हैं तो इसके विपरीत कुछ और होने की क्या आवश्यक्ता है? झूठी शिक्षाओं पर न चलें जबकि हम सत्य पर चल सकते हैं। इसलिये केवल उन्हीं नामों का उपयोग अपने तथा अन्य लोगों के लिये करें जिनका अधिकार प्रभुने दिया है। तभी, और केवल तभी, हम उचित मार्ग पर होंगे।

स्वाधीन प्रचारक तथा कलीसियाएं

संसार में अनेकों प्रचारक और कलीसियाएं हैं। इनमें से अधिकांश साम्प्रदायिक हैं। इनके अतिरिक्त, अनेकों अन्य अपने आप को स्वाधीन कहते हैं। इस से उनका क्या अभिप्राय है ? उनका अर्थ यह है, कि वे विशेष रूप से किसी भी सम्प्रदाय से सम्बन्ध नहीं रखते। कदाचित् किसी समय वे अवश्य रखते थे, परन्तु किसी न किसी कारण से उन्हों ने उनसे अपना सम्बन्ध तोड़कर अपने आप को अलग कर लिया है।

अक्सर देखने में आता है, कि किसी एक सम्प्रदाय में किसी शिक्षा के कारण आपस में झगड़ा खड़ा हो जाता है, या उस कलह का कारण आपसी मत-भेद भी हो सकता है, और इसके परिणाम स्वरूप एक या एक से अधिक व्यक्ति उस सम्प्रदाय से अलग होकर अपना एक नया कार्य आरम्भ कर लेते हैं। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि वे जो अपने को अलग करना चाहते हैं उनका ऐसा करने का विशेष उद्देश्य यह होता है कि वे उस सम्प्रदाय की शिक्षाओं तथा विधियों से अपना पीछा छुड़ाना चाहते हैं। फिर अनेकों वे लोग भी होते हैं जो ऐसे अन्य संगठनों के साथ कार्य नहीं करना चाहते जहां उन्हें अपने कार्यों इत्यादि का लेखा देना पड़ता है, विशेषकर उस सब धन के विषय में जो इकट्ठा किया जाता है, और इसलिये वे अलग होकर स्वाधीन हो जाते हैं और अपना स्वाधीन कार्य आरम्भ कर लेते हैं, ताकि वे उसके संचालक हों, उस पर अधिकार रखें, और उसके द्वारा उन्हें भौतिक लाभ प्राप्त हों।

यहां भारत में विशेष रूप से इस प्रकार से कहलानेवाले अनेकों स्वाधीन प्रचारक तथा कार्य हैं। प्रत्येक चाहता है कि वह पूर्ण रूप से

प्रचारक का कार्य करे, और पूर्णरूप से प्रचारक का कार्य करनेवाला प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसका एक निजी संगठन हो। अन्य प्रचारकों के साथ कार्य करने में उन्हें बड़ी कठिनाई लगती है। ये लोग प्राय: अपने पेट के लिये ही कार्य करते हैं। इस प्रकार की स्थिति केवल मसीहीयत में ही नहीं पाई जाती, परन्तु इसकी उपस्थिति अन्य धर्मों में भी मिलती है। भारत में पाए जानेवाले उन सब लोगों के विषय में विचार कीजिए जो स्वयं ही "गुरु" बने हुए हैं। फिर देखिए कि कितने "बाबा जी" हैं। और इस प्रकार के अनेकों नए-नए लोग अकसर उठते ही रहते हैं तथा बहुतेरे लोगों को अपना अनुयायी बनाने का प्रयत्न करते हैं। मनुष्य बड़ी ही सरलता से धोखे में आ जाता है, और ऐसा प्रतीत होता है, कि वह स्वयं ही धोखे में आना चाहता है।

आपके लिये यह बात बड़ी ही आश्चर्यजनक हो सकती है, परन्तु क्या आप जानते हैं कि बाइबल में हम किसी भी स्वाधीन प्रचारक या कलीसिया के बारे में नहीं पढ़ते ? और इसी प्रकार से परमेश्वर के वचन में हमें किसी भी सम्प्रदाय के विषय में नहीं मिलता। हम ऐसे लोगों के बारे में तो अवश्य पढ़ते हैं जो फूट डालते थे, और उनके विषय में पवित्र शास्त्र कहता है कि लोगों को उन्हें ताड़ लेना चाहिए और उनसे दूर रहना चाहिए क्योंकि वे प्रभु यीशु मसीह की सेवा नहीं करते। (रोमियों १६ : १७,१८)। इसके अतिरिक्त हम झूठे शिक्षकों, झूठे भविष्यद्वक्ताओं, भाड़े के आदमियों, इत्यादि के विषय में भी पढ़ते हैं, तथा इनकी भी कड़ी निन्दा की गई है। (२ पतरस २ : १,१ यूहन्ना ४:१; यूहन्ना १०:१२,१३)।

पौलुस, पतरस, तथा अन्य सभी प्रचारकों व शिक्षकों का वर्णन कभी भी स्वाधीन कहकर नहीं हुआ। वे आपस में एक दूसरे का विरोध नहीं करते थे, एक दूसरे के विरोध में कार्य नहीं करते थे, न ही एक दूसरे से बढ़कर अपने को समझते थे। इसके विपरीत वे सब एक साथ

मिलकर कार्य करते थे, एक साथ मिलकर आनन्दित होते थे, एक साथ मिलकर दुख उठाते थे, इत्यादि-इत्यादि। (प्रेरितों २ ; प्रेरितों ८ ; १ कुरिन्थियों १२ : २६)।

परमेश्वर के वचन में हम कहीं पर भी ऐसा नहीं पढ़ते कि पतरस की अपनी एक कलीसिया हो, तथा पौलुस की अपनी, या यूहन्ना की अपनी तथा याकूब की अपनी एक कलीसिया हो। न ही हम इस प्रकार का वर्णन कहीं देखते हैं जहां किसी प्रेरित ने या कलीसिया के किसी सदस्य ने कलीसिया को अपना कहकर सम्बोधित किया हो। हम केवल प्रभु की ही कलीसिया के विषय में पढ़ते हैं। (मत्ती १६: १८ ; इफिसियों ५ : २३)।

पवित्र शास्त्र के अध्ययन में, आप देखेंगे कि उस में केवल एक ही कलीसिया का उल्लेख हुआ है। (इफिसियों ४ : ४ ; कुलुस्सियों १ : १८)। यह है मसीह की कलीसिया। यह अनेकों मन्डलियों से मिलकर बनी हुई है और प्रत्येक मन्डली अनेकों सदस्यों मे मिलकर बनी हुई है। जबकि हर एक मन्डली स्वाधीन है, जहां तक उनके स्थानीय संगठन का प्रश्न है, वे इस दृष्टिकोण से स्वाधीन नहीं हैं, कि एक दूसरे के विरोध में कार्य करें, तथा एक दूसरे का विरोध करें। इसके विपरीत, वे आपस में सहभागिता या संगति रखती थीं तथा प्रभु के कार्य की उन्नति के लिये एक साथ मिलकर काम करती थीं।

व्यक्तिगत रूप से या एक मन्डली के रूप से अपने आप को स्वाधीन करने का अर्थ यह हो जाता है कि आप अपने आपको प्रभु से तथा उसकी कलीसिया से भी स्वतंत्र कर रहे हैं। इस कारण आप प्रभु तथा उसके कार्य के प्रति विरोधी प्रमाणित होते हैं। इसका अर्थ यह हो जाता है कि इसके विपरीत कि आप उसके साथ हों, आप उसके विरोध में हैं। (मत्ती १२ : ३०)। क्या आप यही चाहते हैं ? क्या आपके जीवन में एक यही ध्येय है ? आपको चाहिए कि आप गम्भीरता से इस पर विचार करें कि आप क्या कर रहे हैं और अपनी अशुद्धियों को सुधारें।

प्रभु की यह इच्छा नहीं है कि आप स्वाधीन हों, परन्तु वह चाहता है कि आप उसकी आज्ञाओं को मानें तथा एक मसीही बनें। जिस प्रकार से मसीही आपस में एक दूसरे से स्वाधीन नहीं है वैसे ही स्वाधीन लोग मसीही नहीं हैं। यदि आप मनुष्यों के बनाए हुए सम्प्रदायों के विरोध में हैं, तो एक अन्य सम्प्रदाय का आरम्भ करके उनका साथ न दें, परन्तु प्रभु की कलीसिया के सदस्य बनिए। यदि आप प्रचार करना चाहते हैं तो प्रचार करें, परन्तु सत्य का ही प्रचार करें। (२ तीमुथियुस ४ : २)।

किसी ने भी आपको यह अधिकार नहीं दिया है, कि आप स्वयं अपनी इच्छा से जाकर किसी स्थान पर एक धार्मिक संगठन का आरम्भ करें, तथा लोगों को उसका सदस्य बनने के लिये प्रोत्साहित करें। यह कार्य कदाचित् स्वाधीन हो, परन्तु केवल इतना ही। परिणाम स्वरूप, आप दोषी ठहराए जाकर दण्ड पाएंगे, और इसी प्रकार से वे सब भी जो आपका अनुसरण करेंगे।

आपसे निवेदन करके आपको प्रोत्साहित किया जाता है कि आप बाइबल की ओर फिरें तथा नए नियम की सच्ची मसीहीयत को स्वीकार करें। उसमें विश्वास करके, अपने पापों से मन फिराकर, मसीह के नाम का अंगीकार करके, तथा अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेकर परमेश्वर की आज्ञाओं को मानिए। (मरकुस १६ : १५,१६ ; प्रेरितों २ : ३८)। तब प्रभु आपका उद्धार करके आपको अपनी कलीसिया में मिला लेगा। (प्रेरितों २ : ४७ ; प्रेरितों २० : २८)। इस प्रकार से आप एक साम्प्रदायिक नहीं, परन्तु आप केवल एक मसीही बन जाएंगे (१ पतरस ४ : १६)। तब एक मसीही होने के कारण आप परमेश्वर के वचन की शिक्षा दे सकते हैं, व प्रचार कर सकते हैं, तथा अन्य लोगों को वैसा ही करने के लिये प्रोत्साहित कर सकते हैं जैसा आपने किया है। केवल तभी आप सही होंगे। केवल तभी आप स्वतंत्र होंगे। (यूहन्ना ८ : ३२)।

यीशु मसीह का दोबारा आना

मसीह एक बार आया था, परन्तु वह फिर से आ रहा है। उसका पहली बार आना बीते समय में हुआ था परन्तु उसका दूसरी बार आना भविष्य में होगा। पिछली बार वह शरीर में होकर प्रगट हुआ था, परन्तु अबकी बार वह एक महिमान्वित प्रभु के समान आएगा। पहिली बार वह मनुष्य का उद्धारकर्त्ता होकर आया था, परन्तु इस दूसरी बार वह सब मनुष्यों के न्यायकर्त्ता के रूप में प्रगट होगा। जिस प्रकार से यह सत्य है कि वह वापस गया, ठीक वैसे ही यह भी सत्य है कि वह फिर से वापस आएगा।

अपने चेलों से अलग होने से पहिले, प्रभु ने उनसे प्रतिज्ञा करके कहा था, "और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहीं तुम भी रहो।" (यूहन्ना १४ : ३)। जिस दिन प्रभु ऊपर उठाया गया था, लिखा है, "यह कहकर उन के देखते-देखते ऊपर उठा लिया गया ; और बादल ने उसे उनकी आंखों से छिपा लिया। और उसके जाते समय जब वे आकाश की ओर ताक रहे थे, तो देखो, दो पुरुष श्वेत वस्त्र पहिने हुए उनके पास आ खड़े हुए। और कहने लगे ; हे गलीली पुरुषो, तुम क्यों खड़े स्वर्ग की ओर देख रहे हो ? यही यीशु जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा।" (प्रेरितों १ : ९-११)।

ऐसे भी अनेकों लोग हैं जो सिखाते हैं कि एक दिन फिर यीशु मसीह इस पृथ्वी पर वापस आएगा, और अपने चेलों के साथ यरूशलेम में एक हज़ार वर्ष तक राज्य करेगा। किन्तु, बाइबल कहीं पर भी इस

प्रकार की शिक्षा नहीं देती। जैसे कि अभी हमने प्रेरितों १ अध्याय से देखा है, प्रभु उसी रीति से वापस आएगा जिस रीति से वह गया था। परन्तु पवित्र शास्त्र कहीं पर भी नहीं सिखाता कि मसीह अब कभी भी इस पृथ्वी पर अपने पांव रखेगा। इसके विपरीत, पवित्र शास्त्र सिखाता है कि मसीह बादलों में आएगा और उसके लोग बादलों पर उठा लिये जाएंगे ताकि वे हवा में प्रभु से मिलें। आईए, यह देखने के लिये इस वर्णन को स्वयं पढ़ें कि वास्तव में वहां यही लिखा है या नहीं। "हे भाइयो, हम नहीं चाहते, कि तुम उनके विषय में जो सोते हैं, अज्ञान रहो ; ऐसा न हो कि तुम औरों की नाईं शोक करो जिन्हें आशा नहीं। क्योंकि यदि हम प्रतीति करते हैं, कि यीशु मरा,और जी भी उठा, तो वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं, उसी के साथ ले आएगा। क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुमसे यह कहते हैं, कि हम जो जीवित हैं, और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे तो सोए हुओं से कभी आगे न बढ़ेंगे। क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से ; उतरेगा, उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उनके साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे। सो इन बातों से एक दूसरे को शान्ति दिया करो।" (१ थिस्सलुनीकियों ४ : १३-१८)।

मसीह कब वापस आएगा ? समय-समय पर अनेकों लोगों ने प्रभु यीशु के दोबारा आने के विषय में विभिन्न समय निश्चित किए हैं। कुछ लोगों ने अकसर सोचा है कि बाइबल में प्रतीकात्मक ढंग से प्रभु यीशु के वापस आने के निश्चित समय को दर्शाया गया है, तथा इस भेद की कुंजी उन्हें प्राप्त हो चुकी है और इसलिये वे इसे संसार पर प्रगट कर सकते हैं। परन्तु उन सभी लोगों ने समय-समय पर स्वयं अपने-आपको मूर्ख प्रमाणित किया है। परन्तु फिर भी, अभी भी संसार में इस प्रकार

के लोग हैं जो कहते हैं कि मसीह इस या उस समय आएगा। वे भी, इसी प्रकार, झूठे प्रमाणित होंगे। कुछ समय के लिये कुछ लोग उनकी ओर कदाचित् आकर्षित हो जाएंगे तथा कुछ लोग धोखे में आकर उनकी बातों पर विश्वास भी कर लें। यह वास्तव में बड़े ही दुख की बात है। परन्तु पृथ्वी के ऊपर ऐसा एक भी मनुष्य नहीं है जो प्रभु यीशु के वापस आने के समय को जानता हो। ऐसा क्यों कहा जा सकता है ? क्योंकि यीशु मसीह ने स्वयं यह कहकर घोषणा की थी, "उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता ; न स्वर्ग के दूत, और न पुत्र, परन्तु केवल पिता।" (मत्ती २४ : ३६)। सो अब, जबकि स्वर्गदूत नहीं जानते, और यदि मसीह भी नहीं जानता, परन्तु प्रभु के आने के समय के विषय में केवल परमेश्वर ही जानता है तो फिर मैं, या कोई अन्य व्यक्ति किस प्रकार से जान सकता है ? वास्तव में यह असम्भव है।

और फिर, लिखा है कि मसीह एक चोर की नाईं आनेवाला है। यह नहीं कि वह एक चोर बनकर आएगा, परन्तु वह एक चोर की नाईं आएगा अर्थात्, वह एक ऐसे समय आएगा जिसके विषय में कोई नहीं जानता। सुनिए, "क्योंकि तुम आप ठीक जानते हो कि जैसे रात को चोर आता है, वैसे ही प्रभु का दिन आनेवाला है। जब लोग कहते होंगे, कि कुशल है, और कुछ भय नहीं, तो उनपर एकाएक विनाश आ पड़ेगा, जिस प्रकार गर्भवती पर पीड़ा ; और वे किसी रीति से न बचेंगे। पर हे भाइयो, तुम अन्धकार में नहीं हो, कि वह दिन तुम पर चोर की नाईं आ पड़े।" (१ थिस्सलुनीकियों ५ : २-४)।

इसके अतिरिक्त, कुछ और बातें हैं जो हम प्रभु यीशु के दोबारा प्रगट होने के बारे में जानते हैं। उदाहरणार्थ, सब उसे देखेंगे। "देखो, वह बादलों के साथ आनेवाला है ; और हर एक आंख उसे देखेगी....." (प्रकाश्तिवाक्य १ : ७) तथा, आकाश और पृथ्वी और जो कुछ भी

उनमें है सब कुछ जलकर नाश हो जाएगा, "परन्तु प्रभु का दिन चोर की नाईं आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा, और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएंगे, और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएंगे।" (२ पतरस ३:१०)। इसी प्रकार से, प्रभु पलटा लेने के लिये आ रहा है। "और तुम्हें जो क्लेश पाते हो, हमारे साथ चैन दे ; उस समय जबकि प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा। और जो परमेश्वर को नहीं पहिचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा। वे प्रभु के सामने से और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दन्ड पाएंगे।" (२ थिस्सलुनीकियों १ : ७-९)।

जब प्रभु वापस आएगा तो सब लोग जी उठेंगे, धर्मी तथा अधर्मी दोनों। (यूहन्ना ५ : २८,२९)। वह इसलिये आएगा ताकि अपनी हदुल्लि अर्थात् अपनी कलीसिया को अपने साथ ले जाए, जो कि परमेश्वर का राज्य है, और जिसके बीच में से प्रभु के दूत सब दुष्टों को चुनकर निकालेंगे तथा उन्हें आग में झोंकेंगे। (इफिसियों ५ : २७ ; मत्ती १३ : ४१-४३)। और फिर, मसीह संसार का न्याय करने के लिये वापस आ रहा है। (मत्ती २५ ; प्रेरितों १७ : ३१ ; २ कुरिन्थियों ५ : १०)।

हां, प्रभु निश्चय ही वापस आ रहा है। हम नहीं जानते कि कब, परन्तु तौभी वह अवश्य ही आ रहा है। प्रश्न यह है, क्या हम उस समय तैयार होंगे ? आज ही तैयारी करने का दिन है। कल तक कदाचित् बहुत देर हो जाए। पढ़िए मत्ती २४ : ३६-३९ ; लूका १२ : १४-४८)।